आंध्र लोक साहित्य में उत्तररामायण

डॉ. आई. एन. चन्द्रशेखर रेड्डी

आंध्र लोक साहित्य में उत्तररामायण

लेखक

डॉ. आई. एन. चन्द्रशेखर रेड्डी

एम.ए., पी.एच.डी., डी.लिट्.

रीडर, हिन्दी विभाग

श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय

तिरुपति - 517 502, आं.प्र.

आई रेड्डी पब्लिकेषन्स, तिरुपति

1997
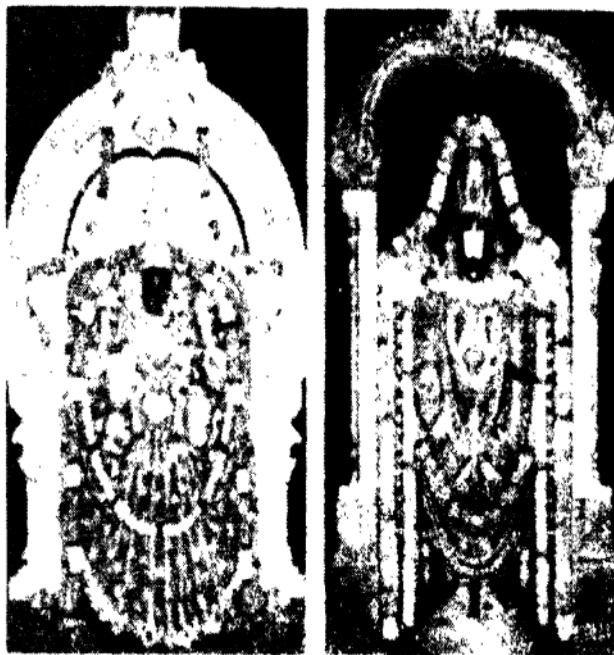
THIS BOOK IS PUBLISHED WITH THE FINANCIAL ASSISTANCE OF TIRUMALA TIRUPATI DEVASTHANAMS UNDER THEIR SCHEME AID TO PUBLISH RELIGIOUS BOOKS

विषय सूची

प्रस्तावना :

लोक साहित्य अनंत अनिर्णीत काल का निरंकुर सुषुप्त बीज है। वह अंतहीन, अंतिम रूपहीन, अमलिन, अनुभवों से चिर संचित अलिखित अक्षय भंडार है। साहसी संग्रहकर्ताओं की कलमों की पुकार से अनहद करते हुए वह अतल से पृथ्वी की अंधपरतों को छेदते हुए प्रस्पुटित होनेवाला बीजांकुर है। हालही में समाज में अपने लिए एक विशिष्ट स्थान बनानेवाला लोक साहित्य प्रवर्धमान चिरपरिवर्तनशील व चिरनवीन है। लोक साहित्य एक जाति विशेष की सभ्यता-संस्कृतियों को अपने में समेट कर आनेवाली पीढी को पहुँचानेवाली अनर्घ अमूल्य निधि है। सुख-दुखों के द्वन्द्व से बने मानवेतिहास को समरस भाव से निधडक उच्चस्वर में उद्गीत करनेवाला लोक साहित्य कई युगों तक जनता के आश्रय से वंचित रहा है। कालप्रवाह में काफी कुछ अपने को न्यौछावर करके भी वह बचे-कुचे अपने को बटारे कर बाहर निकालनेवाले सहृदय अन्वेषकों का अंतहीन इंतजार कर रहा है। अनंत काल गर्भ में अपने असीम शक्ति से वह जनता को अभिभूत करता आ रहा है। फलस्वरूप संग्रह कर्ताओं के सत्प्रयासों से यहाँ वहाँ यह महोज़्ज्वल लोक निर्झरी अपने निराकार को त्याग करके साकार होकर दर्शन दे रही है। जानपदों के कंठ में ही अनवरत बहनेवाली इस चंचल गतिमान लोक-निर्झरी को लुप्त होने से बचाने की दिशा में यह लघु प्रयास अपनी सफलता को देखता है।

भगवान और भक्त को जोड़ने वाली कड़ी भक्ति है। अतिदुर्लभ भगवत् प्राप्ति को 'भक्ति' सुलभ बनाती है। भक्तिसाहित्य भक्ति-साधना को सुलभ बनाने का सरल साधन है। भक्त-कवि-गायकों ने भक्ति साहित्य को जन प्राचुर्य बनाने उसे गीतों में ढाला है। संगीत और साहित्यों का मधुर संगम भक्ति साहित्य में देखा जा सकता है। भारतीय भाषाओं में बडी मात्रा में उपलब्ध होनेवाला भक्ति साहित्य शतप्रतिशत तो न सही उसका अधिक भाग गीतिकाव्य, संकीर्तन, पद कविता, कीर्तन, कृति आदि कई रूपों में गेयता को ही अपना मूल प्रातिपाद्य मानता है। गीतों के रूपों में होने के कारण ही वह नीरस व शुष्क भक्ति-दर्शन को अपने मधुर प्रेम रस में भिगोकर उसे जन रंजक एवं सरस बनाने में अत्यंत सफल हुआ है। द्रविड वेदज्ञ नालाइरा दिव्यप्रबंधकर्ता आलवार भक्तों से लेकर अन्नमाचार्य, क्षेत्रय्या, त्यागराजु, रामदासु, पुरंदरदास, सूरदास, मीराबाई जैसे महान भक्त कवियों ने जन बाहुल्य को सम्मोहित करने इसी गीतितत्व को अपनाया था। शास्त्रबद्ध सांप्रदायिक संगीत व साहित्य से अलग होने पर भी लोकगीत भी भक्तिसाहित्य के इसी 'संकीर्तन' स्वभाव से जुडी हुई लोक प्रक्रिया है।

संगीत के रागों के आरोहन अवरोहन नियमादि से अनभिज्ञ होने पर भी जानपदों के सुरीले कंठों से उच्च स्वर में गूंजनेवाले लोकगीत भक्तों के हृदय स्पर्श करके उन्हें

ईश्वरोन्मुख बना देते हैं। लोकगीत भाषा-दर्शन-वेदांत की जटिलता से दूर सर्वसुलभ अनुभव सार है। साधारण से साधरण लोगों में भगवान के प्रति अपार प्रेम और श्रद्धा भक्ति संचित हुई पायी जाती है। जानपदों की भक्ति सहज, सरल, निर्मल, निराडंबर व अकृत्रिम है। सीदे-सादे, भावुक व्यक्तित्व संपन्न जानपदों को भक्ति-साहित्य की शीर्षस्थ उपलब्धियों व पौराणिक कथाओं में भी वे प्रसंग व घटनाएँ ही ज्यादा मार्मिक लगती हैं जिन में दुष्टों के हाथों में सन्मार्गी संत लोग सताये गये हो। इस कोटि के प्रसंगों से भरी रामायण कथा इसलिए उनको अत्यंत प्रिय लगती है। रामायण कथा में भी जानपदों के हृदयों को जीतने वाला व सम्मोहित करनेवाला गुण राम की धीरोदात्तता की अपेक्षा सबकी आँखों से आंसू बहा सकने वाली लवकुश की कहानी में ज्यादा है। उन का मन राम-रावण युद्ध-दृश्यों में कम सीता समेत लवकुश के दुष्कर व असहनीय वनवास जीवन के अनुभवों में ज्यादा रमता है। इसलिए जन साधारण को भी रसार्थ व तन्मय करनेवाली उत्तर रामायण की कथा उनके लिए अत्यंत लुभावनी बन पड़ी है। इस का साक्ष्य प्रमाण यही है कि लोक-गीत-गायन से अल्प परिचित लोग भी सर्वप्रथम उत्तर रामायण अंश से जुडे गीतों को बडे चाव से गाते हैं। अपने अनुपम आदत-स्वभाव-संस्कारों के अनुरूप 'हरि अनंत हरि कथा अनंत' आर्योक्ति को चरितार्थ करनेवाले अनेक अनोखे प्रसंगों को इस उत्तर रामायण में उन्होंने जोडा भी है।

जानपदों की उस अमूल्य अक्षय निधि से एक लंबे कथा गीत को चुनकर इस पुस्तक के परिशिष्ट भाग में संचित किया गया है। उत्तर रामायण का यह लंबा लोक कथा गीत आंध्रप्रदेश के कर्नूल जिले में नंद्याल गाँव व उसके परिसर में अत्यंत प्रचलित है। इस कथागीत के छोटे छोटे अंशों को घर में और घर बाहर काम धंधे निपटाते हुए विविध संदर्भों में गाने पर भी कथागीत के रूप में आराम व फुरसत के समय ही गाते हैं। घरेलु वातावरण में खासकर शिवरात्रि, वैकुंठ एकादशी जैसे पर्वदिनों में स्त्रियाँ एक जुट होकर इस कथागीत को गाते व सुनते तादात्म्य होते देखा जाता है। तीज-त्योहारों के दिनों में रात-जागरण करते स्त्रियाँ समय काटने तथा पुण्य कमाने के साधन के रूप में इसे गाया करती हैं। इस के अतिरिक्त इस कथा गीत के कुछ अंशों को खेत में काम करते व घर में बच्चों को सुलाने लोरी गीतों के रूपों में भी गाते हैं। आज मानवजीवन जितनी तेजी से विकसित हो रहा है उतनी ही तेजी से नये नये जीवनोपयोगी उपकरणों का आविष्कार हो रहा है। उनका जीवन पर प्रभाव अनिवार्य है। तीज त्योहारों के दिनों में रात-जागरण करते इन कथा-गीतों के श्रवण-पाठन की जगह आज दूरदर्शन, सिनेमा आदि कई नये नये मनोरंजन व दूरसंचार के साधन उपलब्ध हो गये हैं। इस प्रकार की जटिलावस्था में निर्वापन के निकट पहुँचे अनेकों के अविरल प्रयासों के बाद प्राप्त क्षेत्र विशेष की संस्कृति को अपने में समाहित करने वाले लोकगीत रूपी इस राष्ट्रीय लोक संपदा को आगे आनेवाली

पीढी के लिए सुरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है। इसी श्रम साध्य दिशा में यह लघु प्रयास अपनी उपलब्धी को देखता है।

आंध्र संस्कृति को परावर्तित करनेवाले इस कथा गीत को व्यापक परिप्रेक्षय में पहचानने और परखने हेतु, तद्वारा हिन्दी भाषी व हिन्दी प्रेमी बन्धुओं को आंध्र लोक रामायण से अवगत कराने हेतु मै ने प्रस्तुत तेलुगु उत्तर रामायण का नागरी लिप्यांतरण तथा हिन्दी अनुवाद किया है। इसके साथ साथ 'परिशिष्ट में संग्रहीत उत्तर रामायण का कथा वैभव' प्रकरण में लिप्यांतरित एवं अनूदित इस कथागीत का सारांश व वस्तुगत बोध कराने का विपुल प्रयास भी किया है। इस के अतिरिक्त समीक्षा के दौरान उदाहरण के रूप में प्रस्तुत सभी लोक गीतों का नागरी में लिप्यांतरण किया है। लिप्यांतरित इन उदाहरणों के नीचे उनका सरल गद्यानुवाद भी प्रस्तुत किया है।

परिशिष्ट में संग्रहीत उत्तर रामायण के इस लंबे कथागीत के साथ साथ आंध्र लोक रामायण व लोक कथागीतों पर प्रकाश डालने के लिए आठ प्रकरणों में कुछ मुख्य-विषयों की चर्चा की गयी है। लोक साहित्य की विशेषताएँ और उस में कथागीतों का महत्व, लोकसाहित्य और भक्ति साहित्य का आपसी संबंध, आंध्र लोक साहित्य में रामायण-महाभारत कथाओं का चित्रण, अब तक हुए आंध्र लोक रामायणों के संग्रह कार्यो का सर्वेक्षण, आंध्र लोक रामायण और उनका स्वरूप, आंध्र लोक रामायणों में अनोखे ढंग से चित्रित अवाल्मीकीय अंश, आंध्र लोक साहित्य में उत्तर रामायण की विशिष्टता, परिशिष्ट में संग्रहीत उत्तर रामायण का कथा वैभव आदि विषय क्रम से इन आगे के प्रकरणों में चर्चित हैं।

अशिक्षित होते हुए भी मेरी शिक्षा-दीक्षा की मूल प्रेरणा बनी मेरी माताजी के प्रेम-सहयोग से ही इस कथा गीत को लिपिबद्ध करना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। इस लघु प्रयास की प्रेरणा, प्रोत्साहन आदि सभी उन्हों की देन है। मेरे श्रद्धा-सुमन व कृतज्ञतांजली की आदिवरणीया वे ही हैं। इस लघु प्रयास में अपने अमूल्य गीतों के द्वारा मुझे प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहायता पहुँचानेवाले उन सभी लेखकों और मित्रों का भी मै अत्यंत आभारी हूँ।

यह प्रयास हिन्दी में तेलुगु लोक साहित्य संबंधी पुस्तकों के अभाव को कम करने में अपनी सफलता देखेगा। आशा है कि सहृदय लोक साहित्य प्रेमी इस का [illegible] करके इस लघु प्रयास को सस्नेह अपनायेंगे।

आई. एन. [illegible]न्द्रशेखर रेड्डी

विषय सूची

1. लोक साहित्य: कथा गीत

जीवन के उतार-चढाव किंवा सुख-दुखों से नित्य जूझते हुए उन से प्रतिस्पन्दित होकर प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति करने की सृजनात्मक क्षमता मात्र मनुष्य में है। मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग महत्व प्रदान करनेवाले मूलभूत तत्व भी विचारसंप्रेषण शक्ति व अभिव्यक्ति की वैचारिक-शक्ति ही है। ईश्वरने अन्य जीवजन्तुओं से अलग इस बहु मूल्य शक्ति व संपत्ति केवल आदमी को ही प्रदान किया है। ईश्वर प्रदत्त इस अनुपम शक्ति के द्वारा अपने जीवन को सतत सुखमय बनाने के सत्प्रयासों ने मानव सभ्यता और संस्कृति का शिलान्यास किया है। भाषा वैज्ञानिकों का यह विचार है कि आदमी अनेक युगों तक भगवत्कृपा से प्राप्त अपनी इस विचारसंप्रेषण व विचार-विनिमय शक्ति का उपयोग मौखिकी ही करता रहा। कई सालों के बाद इस शक्ति के साथ अपनी बुद्धि व जीवन से प्राप्त अनुभूति सत्य के बल पर उसे और विकसित करके एक नया, स्थिर व शाश्वत रूप प्रदान करने के मोह ने लिपि का जन्म दिया। इस से स्पष्ट ध्वनित होता है कि भावनाओं के संप्रेषण की अपेक्षा उन्हें लिपिबद्ध करने की घटना अर्वाचीन है।

भारतीयों के सबसे प्राचीनतम भाव - ज्ञान उद्गार वेदवाङ्मय ही है। प्रारंभ में वेद लिपिबद्ध नहीं थे। वे अनश्रुत ग्रंथों के रूप में अनेक युगों तक जनता के कंठ में ही वास किया करते थे। यह बडी विलक्षण प्रतिभा का परिणाम है कि भाषा के जटिल नियमों के बगैर वेद अनेक युगों तक जनता की जीभ पर ही सुरक्षित रहें। ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि भाषिक इकाइयों को अपरिवर्तनीय रखने के लिए उनकी कठोर-निष्ठा, श्रद्धा-भक्ति सर्वधा सराहणीय है। लिपि के आविष्कार के साथ अपनी भावनाओं को स्थाई रूप प्रदान करने के आदमी के स्वार्थ ने अपनी असीम अभिव्यक्ति की गरिमा को सीमाबद्ध किया है। क्यों कि आज भी आदमी न तो अपनी संपूर्ण भावनाओं को भाषा के द्वारा अभिव्यक्त करने में समर्थ है न ही अभिव्यक्त

भावनाओं को पूर्ण रूप से लिपिबद्ध करने में भी। अतः भाषा व लिपि के कारण आदमी की भावाभिव्यंजना की सीमाएं निश्चित हो गयी हैं। पंडितों के द्वारा लिखित शिष्ट साहित्य भाषा-लिपि की इन श्रृंखलाओं से जकड़ने पर भी लोकसाहित्य उन से परे आदमी के भाव-विचारों के सहज संप्रेषण का अक्षय भंडार रहा है। इसलिए लोक साहित्य की शक्ति असीम है। अपनी भाव-सुगंध अजस्र गति से सर्वत्र बिखेर कर सब को समान रूप से प्रभावित करने में वह अत्यंत सक्षम है। आदमी के सुख-दुखों से जुडे रहने के कारण वह चिरंतन है और चिरनवीन भी है। वह मनुष्य जीवन के अनुकूल चिरसंचित जाति विशेष की अक्षय-कला-निधि है।

लिपिबद्ध प्राचीनतम ज्ञान-स्रोत भंडार वेद विषय-विश्लेषण की जटिलता के कारण सर्वग्राह्य नहीं रहें। अद्ययन-विश्लेषण की अनुकरण की जटिलता के कारण वेद जन सुलभ नहीं बन पाये हैं। वेदों के बाद वेदों की तरह ज्ञान-विज्ञान के अन्यतम स्रोत रामायण, महाभारत, महाभागवत् आदि पौराणिक ग्रंथ लिपिबद्ध हुए हैं। वेदों की तुलना में ये पौराणिक महाकाव्य अध्ययन-विश्लेषण-आस्वादन की दृष्टि से सरल होने के कारण जन सुलभ व लोक प्रिय हुए हैं। युगानुरूप, जीवन के सापेक्ष्य में लिखे गये पंडितों के ये शिष्ट पौराणिक महाकाव्य आदर्शों के बन्धनों में जकड़ने के कारण कुछ सीमा तक कृत्रिम ही हुए हैं। लेकिन नियम व कृत्रिम संस्कारों से परहेज रखनेवाले जानपद ने इन पौराणिक कथाओं को भी अपनी इच्छा और अनुभवों के अनुकूल बदल लिया है। उन की रसास्वादन व जीवन दृष्टि हमेशा सहज एवं अनोखी होती है। पौराणिक कथाओं में जहाँ जहाँ कठिन, जटिल व कृत्रिम प्रसंग हैं वहाँ उन्होंने अपने स्वभाव एवं संस्कारों के अनुरूप उन्हें बदल लिया है। इसलिए इन लोककवियों के द्वारा लिखित रामायण, महाभारत, भागवत आदि पौराणिक कथाएँ पंडितों के द्वारा लिखित रचनाओं से भिन्न अनेक विचित्र व विलक्षण प्रसंगों एवं घटनाओं से ओत प्रोत दिखाई पड़ती हैं। यह हमेशा मत भेद का विषय रहा है कि पौराणिक कथा लेखन में लोक-कवि पंडितों से प्रभावित हुए हैं या पंडितों ने लोककवियों से प्रभावित होकर इनका अनुकरण किया है। लोक साहित्य पर काम करनेवाले अधिकांश विद्वानों ने इन दोनों को परस्पराश्रित माना है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध लोक साहित्य-विद् डॉ. त्रिलोचन पांडेयजी के निम्न विचार उल्लेखनीय हैं - 'लोकवार्ता और साहित्य के संबंध अन्योन्याश्रित है। यदि साहित्य

के रचइता अपनी रचना प्रणाली में विभिन्न लोक तत्वों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समावेश करते हैं तो साहित्य भी लोकवार्ता को प्रभावित करता है। साहित्य के विविध रूप जिन जातीय विशेषताओं पर प्रतिष्ठित होते हैं वे विशेषताएँ लोक समुदाय के जीवन से संबंध रखती हैं। प्रत्येक देश का आदिकालीन साहित्य मुख्यतः लोकतात्विक ही होता है और कालान्तर में ये लोक तत्व उस में स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं। जब कभी साहित्यकार जनता के अत्यधिक निकट पहुँचना चाहता है तो वह सर्व प्रथम जनता की लोकवार्ता से संपर्क स्थापित करता है।'[1]जो भी हो लोक कवियों के द्वारा रचित पौराणिक काव्यों में पंडितों की रचनाओं में अनुपलब्ध अनेक विचित्र मोड़, चमत्कारी घटनाएँ एवं विलक्षण प्रसंग दिखाई पड़ते हैं। इसलिए रसास्वादन में रोचकता, नवीनता, और विलक्षणता की अपेक्षा करनेवाली आम जनता के लिए लोक-रामायण, महाभारत, भागवत आदि पौराणिक काव्य अत्यंत प्रिय हुए हैं।

जो स्थान शिष्ट साहित्य में पद-कविता व गीति काव्य के लिए दिया जाता है। वही स्थान व उस से बढकर पद लोक साहित्य में लोकगीतों को दिया जाता है। वैसे लोक साहित्य में लोक गीतों की अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा मानी जाती है। गीति तत्व अतिप्राचीन है। आदमी के हृदय को अतिनिकटता से स्पर्श करके उसे आह्लाद पहुँचाने की शक्ति गीतितत्व में मौजूद है। आदमी के मन को सबसे ज्यादा प्रभावित करने का सुलभ साधन भी गीति तत्व ही है। गीति तत्व से आकर्षित होना आदमी की आदिम वृत्ति है। भावनाओं और विचारों की वाचिकभाषा में इसी गीति तत्व के कारण ही वाचक शक्ति किंवा उसकी संप्रेषण-शक्ति में वृद्धि होती है। गीति तत्व के इस महत्व को स्वीकारते हुए भाषा-वैज्ञानिक किंवा भाषा-शास्त्रियों ने भाषा की उत्पत्ति तक को गीति तत्व के साथ (Singing spirit) जोड दिया है। प्रसिद्ध तेलुगु आलोचक - विद्वान श्री राल्लपल्लि अनंत कृष्ण शर्मा के अनुसार आदिम मानव ने अपने चारों तरफ के चित्र-विचित्र मन भावनेवाली रमणीय प्रकृति के दर्शन से पुलकित होकर नृत्य करते हुए अपनी भावनाओं को संगीत के माध्यम से व्यक्त करने का जो प्रयत्न किया था। वही कविता के जन्म की आधार शिला बनी। खेल-खेल में गाने के कारण उसका नाम 'क्रीड़ागीत' व नृत्यगीत रखा गया। इसलिये यह मानना उचित होगा कि गेय पद और पद्य कविताओं में गेय पद ही प्राचीनतम है।

फिर गेयपद कविता से पद्यकविता का जन्म हुआ है। आदमी की आदिम वृत्ति से जुडे हुए इस गीति तत्व को लोक साहित्य में भी उच्चतम स्थान दिया जाता है। गीति तत्व के समूचे लक्षणों को संतुष्ट करसकनेवाले लोकगीत लोकवार्ता में सबसे उच्चतम स्थान के अधिकारी हैं। तेलुगु लोकवार्ता में ये लोकगीत न केवल बडी मात्रा में उपलब्ध होते हैं बल्कि तेलुगु प्रदेश की चारों दिशाओं में अत्यधिक लोकप्रिय भी हुए हैं।

गीत में संगीत और साहित्य दोनों का समान महत्व रहता है। संगीत के बगैर साहित्य अपने पूर्णत्व को प्राप्त नहीं कर सकता है। इन दोनों क्षेत्रों में पुरुषों का योगदान ही ज्यादा है। इसलिए संगीत और साहित्य आदि ललित कलाओं में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों को ही आदि स्थान दिया जाता है। जब कि लोक साहित्य में इन दोनों में आधिकारिक स्थान स्त्रियों का है। संगीत और साहित्य से सम्मिलित लोकगीतों को गाते हुए प्रायः हम स्त्रियों को ही ज्यादा देखते हैं। मानना पडेगा कि लोकगीतों का स्त्रियों के साथ अटूट संबंध है। इसलिए तेलुगु लोकसाहित्य में स्त्री गीतों को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। स्त्रियों के सुमधुर, कोमल, मनोहर कंठ से विविध संदर्भों में गाये जानेवाले गीत सहृदयों में भावोद्वेग पैदा करने में अत्यंत सक्षम है। आध्र प्रांत की स्त्रियाँ प्रातः उठने से लेकर रात को घरेलु कामों से निपटकर सोने तक उठते-बैठते, खाते-पीते, अनेक प्रकार के लोकगीत गाती हैं। वे प्रायः काम करते गीतों को व गीतों में खोकर घरेलु कामों से निपटती हैं। लोरीगीत, धान कूटन के गीत, सयानी गीत, जांतगीत, रोपनसोहनी के गीत आदि इसी प्रकार विविध संदर्भों में स्त्रियों के द्वारा गाये जानेवाले लोकगीत हैं।

लोक साहित्य वर्ग-वैषम्य भाव से खोसों दूर रहनेवाला है। अमीर से अमीर गरीब से गरीब इन के गाने के अधिकारी हैं। इतना ही नहीं लोक साहित्य समाज के सभी वर्गीय जनता को समान रूप से प्रभावित करके उन में मानसिक उल्लास पैदा कर सकनेवाला सशक्त साधन भी है। इतनी बडी अनोखी समता शक्ति शायद ही हम अन्यत्र देख पाते हैं। अध्ययन विश्लेषण की सुविधा के लिए विषय और संदर्भ के आधार पर स्त्रियों के द्वारा गाये जानेवाले लोकगीतों का अनेक वर्गों में वर्गीकरण किया जा सकता है। स्थूलतः स्त्रियों के गीतों को दो वर्गों में रखा जाता है।

1. आभिजात्य वर्गीय स्त्रियों के गीत व संप्रदायिक स्त्रियों के गीत।
2. जानपदीय स्त्रियों के गीत व श्रामिक स्त्रियों के गीत।

भाषा संबंधी अंतर ही इनदोनों का सबसे बड़ा आधार बिन्दु है। सांप्रदायिक स्त्रियों के गीतों की भाषा परिमार्जित, शुद्ध और शिष्ट होती है तो श्रामिक स्त्रियों के गीतों की भाषा बोली विशेष, व्यावहारिक जनांचलिक होती है। तेलुगु में स्त्रियों के गीतों पर विशेष कार्य करने वाले प्रसिद्ध लोक साहित्य-विद् डॉ. जी. यस्. मोहन जी ने स्त्रियों के गीतों का एक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। वह निम्नांकित है -
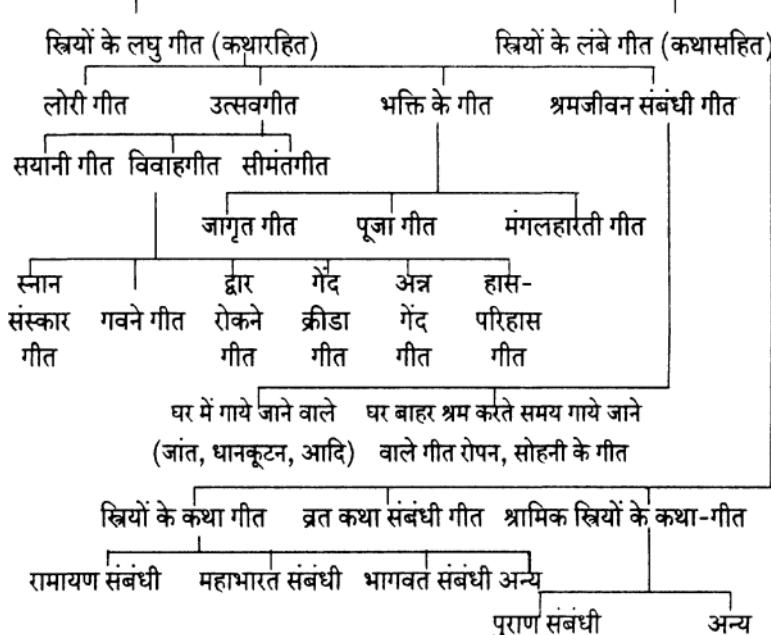
इन दोनों वर्गों की स्त्रियों के गीतों में वस्तुपरक व विषयपरक अंतर ज्यादा दिखाई नहीं पड़ता है। परन्तु उनके स्वरूप-आकार में थोड़ा सा अंतर अवश्य दिखाई पडता है। आभिजात्य वर्ग की स्त्रियाँ घरेलु वातावरण में आराम करते या फुरसत के समय गाने वाले गीत, काम काजी श्रामिक स्त्रियों के गीतों की तुलना में अधिक लंबे होते हैं। काम काजी स्त्रियाँ घर बाहर अनेक प्रकार के काम-धंधे निपटाते हुए गानेवाले गीत आकार में लघु होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का विषय रामकथा से ही संबंध रखने के कारण पौराणिक गाथाओं से संबंधित वर्ग का विस्तृत वर्गीकरण विश्लेषण प्रस्तुत करना उचित होगा।

लोक साहित्य में उपलब्ध होनेवाली रामायण मुख्यत: स्त्रियों के कथात्मक लंबे गीतों से संबंध रखती हैं। ये मुख्यत: तीन प्रकार के हैं। 1. स्त्रियों के कथा गीत 2. व्रत कथाओं से संबंधित स्त्रियों के गीत, 3. श्रामिक स्त्रियों के कथा-गीत। फिर स्त्रियों के कथा गीत चार प्रकार के हैं। 1. रामायण संबंधी 2. महाभारत संबंधी, 3. महाभागवत संबंधी, 4. अन्य। तेलुगु में उपलब्ध लोक रामायण (तेलुगु में इन्हें जानपद रामायणमुलु कहा जाता है) स्त्रियों के कथा गीतों के रामायण वर्ग से संबंध रखती हैं। इनके साथ साथ श्रामिक स्त्रियों के कथा गीतों में पौराणिक कथाओं से संबंधित वर्ग के गीतों में भी राम कथा से संबद्ध लंबे गीत दिखाई पड़ते हैं। उदा. रोपन के गीत, सोहनी के गीत आदि।

आंध्र लोक साहित्य में महाभारत की तुलना में रामायण का ही अधिक महत्व है। इस के पक्ष में कई तर्क दिये जा सकते हैं। सबसे प्रबल तर्क यह है कि आंध्र के लोकगीतों में स्त्रियों के गीतों की संखया ही ज्यादा है। स्त्रियों के मनोनुकूल और उनके हृदयों को द्रवीभूत कर सकने वाले प्रसंग व घटनाएँ महाभारत की तुलना में रामायण में अधिक मात्रा में मौजूद हैं। इस से बढकर स्त्रियाँ रामायण की 'सीता' के साथ जो तादात्म्य व आत्मानुभूति भावना प्राप्त करती हैं वह अन्य पौराणिक नारी पात्रों के साथ नहीं। इसलिए तेलुगु लोक साहित्य में राम कथा को एक अतुलनीय किंवा अप्रतिम स्थान प्राप्त हुआ है। तीज त्योहारों के दिनों में रात को जागती हुई आंध्र की स्त्रियाँ लंबे लंबे पौराणिक कथा गीतों को गाना सर्व साधारण है। इन गीतों के अंत में अंकित फलश्रुति को देखने से यही स्पष्ट होता है कि ये गीत स्त्रियाँ फुरसत के समय समय काटने व भगवन्नाम स्मरण से पुण्य कमाने गाती हैं। लंबे लंबे इन कथा गीतों के लेखकों का सप्रमाणिक स्पष्ट व निश्चित पता नहीं प्राप्त कर सकने पर भी गानेवाले संदर्भ और उनकी उपयोगिता को देखते हुए यह मानना उचित होगा कि ये स्त्रियों का ही संचित अक्षय भंडार है। तेलुगु में स्त्रियों के अनेक पौराणिक कथा गीतों का संकलनकर्ता श्री कृष्णश्री जी के निम्न विचार यहाँ पर उल्लेखनीय हैं। इन कथा गीतों के कृतिकर्ताओं के संदर्भ में उन्होंने लिखा है कि इनके रचइता अज्ञात हैं। आदि या अंत में नाम संबंधी उद्गार अंकित करने से ही रचइता का पता चल सकता है? इस रूप में कहने की अपेक्षा कि इस प्रकार के उद्गार कालांतर में लुप्त हो गये हैं, शुरू से ही नहीं थे कहना ज्यादा उचित होगा। आज तक लेखकों के नाम से कम से

कम चार पाँच रचनाएँ भी पंजीकृत नहीं हुई हैं। शायद पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों ने पुरुषों के सामने अपने नाम प्रकट करके उनको लल्कारना उचित नहीं माना होगा। प्रसिद्ध संकीर्तनाचार्य ताल्लपाक अन्नमय्या की पत्नी ने यदि अपना नाम (सुभद्रा कल्याणमु की कविइत्री) प्रकट भी किया है तो उन महान संकीर्तनाचार्य की छत्रछाया में ही कर सकी है। इन गीतों की भाषा, शैली, छंद, रस आदि का सूक्ष्म विश्लेषण करने से पता चलता है कि उनके रचइता पुरुष की अपेक्षा स्त्री होने की अधिक संभावनाएँ दिखाई पड़ती हैं।

इसके अतिरिक्त गीतों में वर्णित घरेलु वातावरण, सरस संवाद, स्त्रीयोचित फलश्रुतियाँ, औचित्य को भी नकारते हुए दिखाई पडने वाली नारी पक्षधरता आदि को देखते हुए ये गीत स्त्रियों के ही मानना उचित लगता है। इन गीतों में श्रीराम में धीरोदात्त नायक के लक्षणों की परिपुष्टि की जगह सर्वत्र सीता के शील-स्वभाव और प्रातिवत्य का ही कीर्तन हुआ है[2], स्पष्ट है कि सुदूर इतिहास में क्या हुआ है यह कह पाना आज संभव नहीं है। इसलिए निश्चित रूप से कुछ कहना भी असंगत ही होगा। लेकिन आज उपलब्ध अधिकांश गीतों को गानेवाली स्त्रियाँ ही ज्यादा होने के कारण इनको उन्हीं के नाम से स्वीकारना अथवा उन्हीं कों लेखक बनाना उचित होगा।

तेलुगु में उपलब्ध लोकरामायणों का काल निर्णय भी अस्पष्ट किंवा अनिर्णीत है। इस अस्पष्टता के बावजूद भी इस पर थोड़ा सा प्रकाश डालना उचित ही होगा। यह सर्व स्वीकृत विषय रहा है कि लोक वाङ्मय सभ्यता-संस्कृति के सापेक्ष्य संचित जाति-विशेष की प्राचीनतम उपलब्धि है। तेलुगु में आदि कवि नन्नय्या से पहले ही लोकगीत आंध्र प्रांत में प्रचलित थे। नन्नय्या के बाद नन्नेचोडुडु, पालकुरिकि सोमनाथुडु जैसे तेलुगु कवियों ने अपने काव्यों में लोकतत्व का यथेष्ट उपयोग किया है। वीरशैव साहित्य ने सबसे ज्यादा लोक तत्व-पद्धति को अपना लिया है। ध्यान देने की बात यह है कि इन सभी में छोटे छोटे लोकगीतों का ही अनुकरण पाया जाता है। इस समय तक लंबे गीतों के प्रचलन का कोई आधार नहीं मिलता है। श्रीकृष्णश्रीजी के अनुसार स्त्रियों का सर्वप्रथम लंबा कथागीत श्रीमति तिम्मक्का के 'सुभद्रा कल्याणमु' ही है। जो सन् 1470 में लिखा गया था। इसलिए लंबे लंबे कथागीत ई. 15 वीं सदी के बाद ही जन मध्य में प्रचलित हुए होंगे। स्त्रियों

के कथागीतों का काल निर्णय प्रस्तुत करते हुए श्री कृष्णश्रीजी ने एक महत्वपूर्ण आधार का उल्लेख किया है। वह यह है कि सीता के द्वारा 'वामन गुंटलाट' (एक प्रकार का खेल जो ईमली के बीजों से काट में बने छेदों की सहायता से खेला जाता है) खेल खेलना। 'सीता वामन गुंटलाट' नामक कथागीत में सीता 'वामन गुंटलाट' खेल खेलती है । यह रचना सर्वप्रथम तमिलनाडु प्रांत में उपलब्ध हुई है। श्रीकृष्णश्रीजी का कहना है कि 15 वीं सदी तक तमिलनाडु के किसी भी ग्रंथ में इस 'वामन गुंटलाट' का उल्लेख नहीं मिलता है। इसलिए इस बात पर विश्वास प्रबल हो जाता है कि 16 वीं सदी में यह रचना तेलुगु प्रांत में प्रचलित थी और तेलुगु भाषियों के साथ 16 वीं सदी में यह तमिलनाडु पहुँची। इस तर्क के आधार पर तेलुगु लोकरामायणों में कुछ 16 वीं सदी के बाद की हो जाती हैं। इसलिए यह मानना उचित होगा कि तेलुगु लोकरामायणों ने अधिकांश सन् 15 वीं सदी के बाद कभी लिखी गयी होगी व जन मध्य में प्रचलित हुई होगी। उसी पकार परिशिष्ट में संग्रहीत तेलुगु जानपद उत्तर रामायण और भी अर्वाचीन होने की संभावनाएँ हैं।

2. लोकोन्मुख साधना और भारतीय भक्ति साहित्य

मध्य युगीन भक्ति चेतना ने संपूर्ण भारत को कन्याकुमारी से काश्मीर तक प्रभावित किया है। भक्ति की इस अमृत धारा ने जाति, प्रांत, भाषागत संकीर्णताओं को दूर करके भारतीयों को अलौकिक साधना की ओर उन्मुख किया था। मूलतः भारतीय साहित्य में दो ऐसी विराट व सम्यक चेतन-धाराएँ दिखाई पड़ती हैं। पहली उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में राष्ट्रीय आंदोलन से उत्पन्न चेतना और दूसरी उससे अतिप्राचीन मध्ययुगीन भक्ति-चेतना। फिर इस भारतीय भक्ति-चेतना के दो प्रमुख उत्थान दृष्टिगोचर होते हैं। पहला उत्थान वैदिक-पौराणिक काल में हुआ था। दूसरा शंकराचार्य के अद्वैतवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ है। भक्ति-चेतना के इस पुनरूत्थान के अंतर्गत अनेक धार्मिक संप्रदायों का उल्लेख मिलता है। प्रभाव के रूप में अनेक विदेशी धर्मों का प्रभाव भी। भक्ति-चेतना का यह दूसरा उत्थान धर्मों के परस्पर संघर्ष काल में हुआ था। भक्ति-चेतना के इन दोनों उत्थानों के पीछे एक ही मूल उद्देश्य रहा है। ईश्वरीय साधना या भक्ति की नयी व्याख्या करना व कालांतर में लोक जीवन में हुए परिवर्तनों के सापेक्ष में भक्ति के लोकग्राह्य स्वरूप को निर्धारित करना था। भक्ति क्षेत्र के भारतीय मनीषी भक्ति की इस 'लोक सुलभ साधना' को निरंतर सुदृढ एवं परिष्कृत करते रहे हैं।

भारत एक ऐसी उर्वरक धरती है, जिसमें स्नेह-निष्ठा के जल से भक्तिबीज के अंकुरित होने के लिए अतिप्राचीन काल से अनुकूल वातावरण था। भारतीय भक्ति का अतिप्राचीनतम रूप वेदों में ही दिखाई पड़ता है। यह भारतीयों की निष्ठा और परम सत्य के प्रति उनके समर्पण का परिचायक है। वेदों की ज्ञानउर्वरक भोगावती से उद्भूत भक्ति एक स्वस्थ व सहज वृक्ष के रूप में विकसित हुई है। मनीषियों, दार्शनिकों, कवियों व भक्तों के स्नेह-सिक्त सत्प्रयासों से उसने महावृक्ष

का रूप धारण कर लिया है। उनके सत्प्रयासों से भक्ति-साधना के क्षेत्र में अनेक मार्ग व आयाम विकसित हुए हैं। उनमें प्रमुख हैं - - - 1. वैचारिकपक्ष 2. साधनापक्ष 3. लोकपक्ष। ये तीनों परस्पर आश्रित होते हुए भी इनका प्रचार व प्रसार अलग अलग ही हुआ है। भक्ति चेतना के वैचारिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए अनेक संप्रदायों का जन्म हुआ। शुद्धाद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत आदि भक्ति दर्शन वैचारिक पक्ष के अंतर्गत आते हैं। साधना पक्ष के अंतर्गत सख्य, वात्सल्य, माधुर्य, प्रपत्ति, कैंकर्य आदि आते हैं। लोक पक्ष के अंतर्गत भक्त-कवियों की संप्रेषणीयता, कवियों की लोक सुलभ साधना आती है। उनकी लोकोन्मुख साधना बाकी पर हावी होती दिखाई पड़ती है। कदाचित उन दोनों को अत्यधिक लोकग्राह्य व सरल संप्रेषित बनाने की दिशा में ही इसका विकास हुआ है।

मानव-सभ्यता के आरंभिक युगों में आदमी की आवश्यकतायें उसकी आदिम आवश्यकताओं तक ही सीमित रही होंगी। तन ढकने के लिए वस्त्र, क्षुधा-पूर्ति के लिए अन्न, बाह्य वातावरण से बचने के लिए आवास - - ये तीन ही आवश्यकताएँ आदमी की आदिम आवश्यकताएँ थीं। इन तीनों को जुटाना या प्राप्त करने का लक्ष्य ही उसके सामने था। उसकी दैहिक - मानसिक शक्ति इसी लक्ष्य-पूर्ति पर लगी रहती थी। एक प्रकार से उसके जीवित रहने का मतलब यही था। इनको जुटाने का काम उसके लिए अतिपवित्र ही नहीं, अतिमहत्वपूर्ण भी था। धीरे-धीरे उसने अनुभव किया होगा कि ये समस्त वस्तुएँ उसे चारों तरफ की प्रकृति से प्राप्त हो रही हैं। धीरे-धीरे उसमें उस प्रकृति के प्रति जिज्ञासा विकसित होती रही। हवा, बादल, बारिस, जल, आग, पृथ्वी, पेड-पौधे, पशु आदि प्रकृति के कण-कण के प्रति उसकी जिज्ञासा बढ़ती गयी। उसने अनुभव किया होगा कि इन पर उसका कोई नियंत्रण व अधिकार नहीं है। इतना ही नहीं, प्रकृति उसकी मुक्त-उदार सहायिका है। इन सारी वास्तुओं की आपूर्ति कराती हुई भी बदले में वह उससे कुछ नहीं लेती है। प्रकृति के इस मुक्त दान से मानव द्रवीभूत हुआ होगा। जिससे धीरे-धीरे उस के प्रति श्रद्धा और निष्ठा विकसित होती गयी। कदाचित यही कारण है कि संचित ज्ञान के प्रथम उद्गार माने जानेवाले वेदों में प्रकृति की व्यापक पूजा के वर्णन मिल जाते हैं। इतना ही नहीं, वैदिककालीन मानव को प्रकृति की अद्भुत-दिव्य शक्ति का आभास हो गया था। उसने प्रकृति के इन दिव्य तत्वों को देवताओं के रूप

में कल्पना की थी। इन्द्र, सूर्य, वरुण, मारुत, रुद्र आदि को प्रकृति के प्रतीक देवताओं के रूप में पूजा की जाती थी। प्रकृति पर इस दैवत्व के आरोपण के साथ ही ब्रह्म निरूपण, ईश्वरीय चिंतन, आध्यात्मिक चिंतन, अलौकिक चिंतन की शुरूआत हुई। इसी को भक्ति का बीजांकुर मान लेना चाहिए। ऋग्वेद में मानव और देवताओं के बीच में अटूट प्रेम का अनेक स्थलों पर वर्णन है। बीज रूप में उद्भूत यह श्रद्धा-प्रेम-भक्ति दर्शन आगे और समृद्ध और विकसित होता रहा। वैदिक काल में ही ब्रह्म तत्व ज्ञान का पूर्ण निरूपण किया गया है। आगे उपनिषद काल में और उसके बाद ब्राह्मण काल में यह ब्रह्म तत्व ज्ञान किंवा ईश्वरीय-भक्ति दर्शन और विकसित किया गया। साधना-उपासना के विधि-विधान, कर्म-कांड आदि को बडी मात्रा में परिभाषित ही नहीं, समर्थन भी किया गया। इन दार्शनिक, कर्म-विधानों में बौद्धिक पक्ष की ही प्रधानता होती रही। परिणामस्वरूप यह विधि-विधान शुष्क और कठिन पड़ने लगा था।

पौराणिक युग में पुराणकर्ताओं ने जटिल भक्ति-दर्शन, पूजा विधि-विधान को सरल बनाने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने साधना-उपासना के क्षेत्र में पहली बार हृदय पक्ष को महत्व दिया। हृदय पक्ष की विभिन्न वृत्तियों यथा प्रेम, दया, अहिंसा, परोपकार आदि को ईश्वरीय साधना के अंतर्गत रखने का प्रयास किया है। शुष्क वेदांत दर्शन, जटिल कर्मकांड के स्थान पर ईश्वरीय-साधना को इस हृदय पक्ष की प्रधानता के साथ जन सुलभ बनाने का श्रेय इन्हीं पुराणकर्ताओं को देना चाहिए। उन्होंने यज्ञ, क्रतु आदि भारी विधि-विधानों के स्थान पर श्रवणं, कीर्तनं, स्मरणं आदि नवधा भक्ति के विधान पर बल देकर ईश्वर-प्राप्ति के लिए सरल मार्ग भक्ति-मार्ग का नया सूत्रपात किया। अष्टादश पुराणों में ब्रह्मतत्त्व की अलौकिक लीलाओं के साथ-साथ लौकिक लीलाओं का भी वर्णन है। ईश्वरतत्व के इस लौकिक निरूपण के पीछे पुराणकर्ताओं का यही उद्देश्य रहा है कि भक्ति का प्रसार जन-जन तक पहुँचाया जाय। जटिल दार्शनिक बातों, शुष्क निराकार ज्ञान की बातों को जो शिक्षित व शास्त्रों से घनिष्ट संबंध रखनेवाले विशेष वर्ग की समझ तक ही सीमित थी, जन जन तक पहुँचाने के लिए लौकिक पात्रों, अलौकिक लीलाओं का सहारा लिया गया है। वाल्मीकि ने राम-नाम की इस महत्वस्थापना के साथ ईश्वरीय साधना के जन सुलभ मार्ग भक्ति मार्ग को प्रशस्त किया है। जो

वैदिक, उपनिषदीय, ब्राह्मण काल की भक्ति से अति-सुलभ स्वरूपा है। परन्तु इससे भी बढ़कर महाभारत और उसके पर्‌वर्ती ग्रंथों में और उसे लोक-सुलभ बनाया गया है। भक्ति का प्रचार और उसके प्रति आम जनता का जितना आकर्षण महाभारत काल और उसके बाद हुआ, उतना शायद ही उसके पूर्ववर्ती काल में हुआ हो। भक्ति की लोक सुलभ साधना महाभारतकाल से और निखरी है।

महाभारत के रचनाकार महर्षि व्यासजी ने अपने समय के समस्त भक्तिदर्शन के सार तत्व को ग्रहण किया है। कर्म-कांड, ब्रह्मज्ञान, वेदांत शास्त्र, तर्क ज्ञान आदि सभी का अपनी तार्किक दृष्टि से विश्लेषण किया। सत्य का शोधन किया, परखा और समन्वय तथा संपादन करने का प्रयास किया। महाभारत की रचना के साथ भक्ति के एक लोकग्राह्य रूप की स्थापना हुई। इसका अनुसरण करके मानव लौकिक पुरुषार्थो की प्राप्ति बहुत सरल ढंग से कर सकता है। ईश्वरीय साधना किंवा मोक्षप्राप्ति का यह सरल मार्ग ढूँढकर उसे लोक सुलभ बनाने के बावजूद भी वेदव्यास ने अपनी साधना को पूर्ण होने का अनुभव नहीं किया। भगवान-कृपा-प्राप्ति के सरल मार्ग के अन्वेषण में अपनी साधना उन्हें अधूरी लगने लगी थी। श्रीमद्भागवत में इसका उल्लेख मिलता है। भगवान के महिमा-गायन से ही परमानंद प्राप्त करने का उनका विचार श्रीमद्भागवत की रचना के द्वारा व्यक्त हुआ है। श्रीमद्भागवत का मूल उद्देश्य भगवान के महिमा-गायन है। उन्होंने इसमें भगवान के प्रति श्रद्धा और प्रेम का निरूपण किया है। इस रूप में मानव जीवन में प्रेम के महत्व को 'श्रीमद्भागवत' में भगवान के महिमा-गायन के द्वारा प्रतिपादित किया गया है। भक्ति के क्षेत्र में हृदय पक्ष की यह पूर्ण पराकाष्ठा है। भक्ति के इस प्रतिपादन ने समस्त जनता में इसके प्रचार के लिए नये मार्ग खोल दिये। श्रीमद्भागवत में वर्णित प्रेम-स्वरूपा-भक्ति ने आम जनता पर अद्भुत एवं अभूतपूर्व प्रभाव डाला है। भागवत धर्म का प्रचार जन जन तक पहुँचाने का रहस्य उसके लोकग्राह्य स्वरूप और हृदय पक्ष की प्रधानता ही है। मानव भीतर-बाहर प्रेममय होकर अपनी समस्त स्वार्थ-सिद्धि को त्याग करके भगवत लीला से अपने को अभिन्न मानकर उसके अनंत प्रेम रस में डूबना ही उसके लिए परम पुरुषार्थ है।

जीवन के प्रत्येक कर्म में ईश्वर के अंश को देखते हुए उसके लीला-गान में अपना सर्वस्व समर्पित करके उसके सान्निध्य-लाभ को उठाने का मार्ग भागवत

में प्रतिपादित किया गया है। श्रीमद्भागवत में निरूपित व उल्लिखित सभी पात्र इसके प्रमाण हैं कि समस्त पाप कर्मों के करने के बावजूद भी वे भगवान के लीला-गायन मात्र से मुक्ति पाकर मोक्ष-गामी हो गये। ईश्वरीय-साधना में भक्त को किन किन भावों से भगवान के साथ संबंध जोड़ना चाहिए, ये सभी चरित्र व प्रसंग बहुत ही सरल ढंग से प्रस्तुत कर दिया गया। श्रीमद्भागवत में वर्णित पात्रों व प्रसंगों के द्वारा व्यासजी ने भक्ति के आदर्श पक्ष को लोक ग्राह्य ही नहीं, सरल व समस्त-साधना सुलभ बना दिया है। उन पात्रों व प्रसंगों के लीला-गायन से भक्तों में न केवल अनुकरण करने का आकर्षण पैदा होता है, बल्कि भगवत-भक्ति के प्रति एक अचंचल विश्वास पैदा हो जाता है। श्रीमद्भागवत की यह लोक सुलभ साधना सर्वथा सराहनीय है। श्रीमद्भागवत की महिमा इसीमें है कि वेद-वेदांत के शुष्क, ज्ञान-विहीन, कठिन कर्म-कांडों से दूर हजारों गोपिकाओं का उद्धार भगवान ने प्रेम के बल पर किया है। भगवत-भक्ति किंवा भगवत-प्राप्ति की इस लोक सुलभ साधना की स्थापना से महर्षि वेदव्यास भक्ति के क्षेत्र में अमर हो गये।

भारत में भक्ति का यह लोकग्राह्य स्वरूप फिर धीरे-धीरे मंद पड़ता गया है। इसका मूलकारण धार्मिक क्षेत्र में हुए उथल-पुथल ही है। धार्मिक क्षेत्र के निरंतर मतभेद व मंथन से भक्ति का लोक-ग्राह्य रूप विवादास्पद हो गया। ब्रह्म निरूपण व ईश्वरीय साधना के परस्पर खंडन-मंडन से जो विषाक्त वातावरण खड़ा हो गया, उसने वैदिक भक्ति के विकास में बड़ा अवरोध खड़ा किया है। जैन, बौद्ध, गोरखपंथी आदि के प्रचार-प्रसार से जनता पर भागवत धर्म की पकड़ ढीली पड़ती गयी। जैन-बौद्धों का दार्शनिक पक्ष काफी सरल था। इससे बढ़कर जैन-बौद्ध धर्म के गुरुओं ने अपने धार्मिक प्रचार के लिए सीधे जनता से संबंध स्थापित किया। गाँव-गाँव, गली-गली घूमकर उनकी अपनी भाषा में धार्मिक प्रचार करने का प्रयास किया। भारत में बहुत कम समय में इन धर्मों के प्रचार होने का यही मूल कारण रहा है। उन्होंने जन की चित्तवृत्ति के अनुकूल दार्शनिक गंभीर बातों को सरल सोदाहरण बना दिया। जन मध्य में जाकर जगह-जगह प्रचार करने की इस साधना-पद्धति ने अभूत व अच्छे परिणाम दिये। जैन-बौद्ध गुरुओं ने इसलिए अपने धार्मिक प्रवचन के प्रचार में अधिक सफलता प्राप्त की है। जनता भी उनके प्रवचनों से प्रभावित होती रही।

महान आत्मा शंकराचार्य के आगमन तक भक्ति का यही मिश्रित वातावरण बना रहा। उन्होंने भक्ति-क्षेत्र की इस असमंजस स्थिति को अपने अद्वैतवादी दर्शन के द्वारा दूर करने के सफल प्रयत्न किये। उन्होंने प्राचीन वैदिक व औपनिषदिक धर्म की पुन: स्थापना की है। शंकराचार्य की यह महानता रही है कि उन्होंने अपने अद्वैत दर्शन के लिए लोक-संपर्क को अत्यधिक महत्व दिया। जन-जन तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए उन्होंने भारत भर भ्रमण किया। स्थान-स्थान पर पंडित-विद्वानों से ही नहीं, आम जनता से भी वाद-विवाद, विचार-विमर्श किया। संपूर्ण भारत में शंकर के अद्वैतवादी विचारों का बहुत प्रभाव हुआ। परिणामस्वरूप तब तक लोक प्रिय भागवत धर्म की सहज अबाध-गति में बाधा उपस्थित हुई। शंकर के इस मायावाद के कारण उपासना के क्षेत्र में जो साधारण जनता का सरल स्वीकृत मार्ग था, अनियमितता फैल गयी। सबसे बडी कठिनाई यही थी कि 'सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगादि' ब्रह्म तत्व निरूपण की यह अनियमितता भागवत धर्म की पुन: स्थापना व पुनर्व्याख्या का कारण बनी। इस दिशा में अनेक सत्प्रयास किये गये। उनमें श्री यामुनाचार्य का प्रयास सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने शिष्य श्री रामानुजाचार्य को 'बादरायण सूत्र' पर भाष्य लिखने को कहा। ये ही नहीं शंकर के अद्वैतवाद के विरोध में अनेक वैष्णवाचार्यों ने भक्ति-सिद्धांतों की पुनर्व्याख्या की है। उनमें विशिष्टाद्वैत के प्रवर्तक श्री मध्वाचार्य, द्वैताद्वैतावाद के श्री निंबार्काचार्य, शुद्धाद्वैतवाद के श्री वल्लभाचार्य आदि प्रमुख हैं। इन वैष्णवाचार्यों ने भक्ति सिद्धांतों की नयी व्याख्या के साथ साथ वैष्णव संप्रदाय की पुनः प्राण-प्रतिष्ठा की है।

भक्ति का वेचारिक पक्ष पुनः इन वैष्णवाचार्यों के प्रयत्नों के द्वारा समृद्ध हुआ। परिणामस्वरूप शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन से उत्पन्न अनियमितता धीरे-धीरे दूर होती गयी। अनुकरणयोग्य एवं विश्वसनीय सरल भक्तिमार्ग पुनः जनता के सामने प्रस्तुत हो गया। इस नये भक्ति-दर्शन किंवा पुनर्जागृत नये भक्ति मार्ग उस समय अधिक लोकप्रिय, लोकरंजक व लोकग्राह्य हुआ, जब मध्ययुगीन भक्तकवियों ने इनसे प्रभावित होकर लोक-सरल-ग्राह्य साहित्य रचा। इन भक्तकवियों की बड़ी विशेषता यही थी कि वैष्णवाचार्यों के द्वारा प्रतिपादित भक्ति सिद्धांतों को सरल संप्रेषित करके आम जनता तक पहुँचाया जाय। लोकमानस को भक्ति की ओर मोड़कर सरल आचरणयोग्य भक्तिमार्ग की व्याख्या करके लोकाकर्षण पैदा करना,

उनका प्रमुख लक्ष्य रहा था। यज्ञ, ब्रत, बृहद पूजा-विधान आदि से मंडित ईश्वरीय साधना उच्चवर्गीय समाज के लिए ही सरल-सुलभ वस्तु थी। मध्यवर्गीय व आम जनता इसका आचरण करने व इसके प्रति सोचने से ही वंचित थी। मध्ययुगीन भक्तकवियों ने इस दीवार को तोड़ दिया। इन्होंने समूचे में भारतीय समाज को प्रभावित किया है। उच्चवर्ग, निम्नवर्ग, शिक्षित-अशिक्षित सभी तक अपने भक्ति संदेश को पहुँचाने का प्रयास किया।

मध्ययुगीन भारतीय भक्त-कवियों की यह लोक-सुलभ साधना अद्वितीय ही नहीं, सराहनीय भी है। इन्होंने अपने प्रेम-भाव मूलक भक्तिपरक संदेशों से भारत को धर्ममय बना दिया। उन्होंने अपने उपदेश-संदेश को पहुँचाने के लिए सामान्य जनता को ही प्रमुख लक्ष्य बना लिया है। इस लक्ष्य पूर्ति के लिए उन्होंने एक विशेष पद्धति अपनायी है। अपने समय तक प्राप्त सभी लोकाकर्षक प्रणालियाँ उन्होंने अपनायी हैं। जैन-बौद्धों ने लोक-नाड़ी को अच्छी तरह पहचान लिया था। लोकचित्त के अनुकूल उन्होंने अपने साधना-संदेश को ढाला था। जन मध्य में जाकर अपने संदेश का प्रचार किया था। मध्ययुगीन भक्तकवियों ने भी इस लोकरंजक प्रणाली को अपनाया है। मध्ययुगीन भक्तकवियों में अनेक ऐसे हैं, जिन्होंने अपने कविता-पदों को जन मध्य में प्रचार किया। मध्य युग तक पहुँचते पहुँचते काव्य की पद शैली किंवा गीति शैली का पर्याप्त विकास हो चुका था। लोकचित्त को आकर्षित करने तथा भाव-संप्रेषण में अप्रतिम सफलता प्राप्त करने में गीतिशैली ने बड़ी मात्रा में लोकप्रियता प्राप्त की थी। मध्ययुगीन कवियों में अधिकांश ने इसी गीति शैली को अपनाया। मध्य युग तक संपूर्ण भारत में प्रादेशिक भाषाओं का विकास हो चला था। भारतीय भक्तकवियों ने प्रदेश विशेष में विकसित लोक भाषा को अपना लिया था। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने काव्यों के काव्यत्व को भी पर्याप्त रूप में बदलने का प्रयास किया। लोक गीत, लोक धुन, साधारण जनता में प्रचलित लोक छंदों आदि लोकोपदानों को अपनाकर अपनी काव्य-संप्रेषणीयता को अतिसुलभ बना दिया है। इन भक्तकवियों ने अपने काव्यों में इन लोक प्रचलित काव्य रूपों को ही नहीं, सामान्य जनता में प्रचलित आचार-संस्कार, विश्वासों आदि को पर्याप्त महत्व देकर उन्हें लोकोन्मुख बनाया है। निम्नांकित लोकोक्ति मध्ययुगीन हिन्दी भक्त-साहित्य की लोक धर्मिता पर काफी सीमा तक प्रकाश डालती है -

जो कुछ रहा सो अंधरा कहिगा,
कठवऊ कहे सि अनूठी।
बची-खुची सब जुलहा कहिगा
और कहै सो झूठी ।।

अर्थात साहित्य में उल्लेख करने हेतु जो कुछ उदात्त तत्व जीवन में है, उसे सूरदास, जो जन्मान्ध कहलाते हैं, नेत्रहीन होते हुए भी वर्णन कर गये हैं। तुलसी, ने जो काठ के पर्याय माने जाते हैं, अप्रतिम-अतुलनीय साहित्य सर्जना की है। सरस्वती के वरद पुत्र इन दोनों भक्त कवियों की लेखनी से जो चूक गयी थी, उसे जुलाहा परिवार में जन्मे संत कबीरदास ने प्रभावोत्पादक मसी-कागज से पूरा किया है। बाद के कवियों के लिए उन्होंने कुछ नहीं छोडा है। इसलिए अपने प्रयास में वे झूठ ही सिद्ध होंगे। उनका कथन बकवास व निस्सार ही होगा। स्पष्ट है कि यह लोकोक्ति सूर, कबीर, तुलसी की हिन्दी काव्य जगत में महानता को रेखांकित करती है। इन तीनों का भक्ति साहित्य लोकचित्त से किंवा सामान्य जनमानस से गहरा संबंध रखता है। जन मानस किंवा लोक मानस से संबद्ध अनेक विशेषतायें इनके साहित्य में देखी जा सकती हैं। इनके कथात्मक काव्यों में जनता में प्रचलित सुंदर लोक कथाओं का संयोजन है। गेय पद, भजन-कीर्तन, नृत्यगान से संबद्ध नहछू, सबदियों और अन्य प्रकार के लोक गीतों की धुन के अनुकूल छंदों और लोक भाषा आदि लोक साहित्य से संबंध रखनेवाले अनेक तत्व इनके काव्यों में बड़ी मात्रा में प्राप्त होते हैं। इससे बढ़कर सामान्य जनता में प्रचलित लोक विश्वास, आचार-संस्कार, व्रत-पर्व आदि का संयोजन भी उनके साहित्य में हुआ है। यह इसी बात का परिचायक है कि ईश्वरीय साधना व भक्ति-संदेश को लोक सुलभ बनाने के लिए लोकमानस के अनुकूल उन्होंने अपने भक्ति साहित्य को लोकोपोदानों का भरमार बनाया है।

यह लोकोन्मुखता किंवा लोक-सुलभ साधना मात्र हिन्दी के भक्तकवियों की ही नहीं, बल्कि भारत के सभी प्रादेशिक भाषा कवियों में भी देखी जा सकती है। मध्ययुगीन प्रारंभिक भारतीय भक्तकवियों ने रामायण-महाभारतादि पुराणों का अपनी प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद प्रस्तुत किया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इन अनूदित काव्यों के मूलस्रोत संस्कृत भाषा में रचित पौराणिक महाकाव्य ही हैं।

यह भी माना जाता है कि संस्कृत के इन पुराणों के प्रणेताओं ने तत्कालीन जनता में प्रचलित मौखिक लोक कथाओं, आख्यान-उपाख्यानों से पर्याप्त सहायता ली है। लोक कथाओं में प्रचलित विभिन्न प्रसंगों-धटनाओं, व्याख्यानों को जोड़कर पुराणों की रचना की है। ऐसा माना जाता है कि आदिकवि वाल्मीकि ने भी जनता में प्रचलित विभिन्न लोक कथाओं के आधार पर ही रामायण के अनेक प्रसंगों व उपाख्यानों को गढा है। कालांतर में यह लोक धर्मिता और भी ज्यादा होती रही। जैन-बौद्धों के द्वारा इस प्रकार के अनेक अभूत व अद्भुत प्रसंगों का मिश्रण इन्हीं लोक कथाओं के आधार पर भी हुआ है। प्रादेशिक भाषा कवियों ने इन श्रोत-ग्रंथों से प्राप्त आख्यान-उपाख्यानों के साथ साथ अपने प्रदेश विशेष में प्रचलित लोक कथाओं से भी पर्याप्त आख्यान-उपाख्यान प्रसंगों को ग्रहण किया है। कदाचित यही कारण है कि उनकी राम कथाओं में अवाल्मीकीय प्रसंग ज्यादा दिखाई पड़ते हैं। तेलुगु में गोन बुद्धा रेड्डी कृत 'रंगनाथ रामायणमु', तमिल में कम्बन कृत 'कम्ब रामायणमु', कन्नड में अभिनव पंप कृत 'रामचन्द्र चरित पुराण' अथवा 'पंप रामायण', मलयालम में अज्ञात कविकृत 'रामचरितम्' तथा अय्यंपिल्लि आशान कृत 'राम कथा पाट्टु' उडिया में बलराम दास कृत 'जग मोहन रामायण', असमिया में माधव कंदली कृत 'असमिया रामायण', बंगला में कृत्तिवास कृत 'कृत्तिवास रामायण' आदि में लोकधर्मी अनेक अवाल्मीकीय प्रसंग यत्र-तत्र बिखरे दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने प्रदेश विशेष में प्रचलित व लोक जीवन में लोकप्रिय प्रसंगों को अपने काव्यों में स्थान दिया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस लोकोन्मुखता किंवा लोकधर्मिता के पीछे सामान्य जनता तक पहुँचने की ललक व लोक सुलभ साधना की बलवती इच्छा ही थी।

राम कथा के साथ साथ कृष्ण कथा से संबद्ध अनूदित रचनाओं में भी इसी विशेषता को रेखांकित किया जा सकता है। कृष्ण कथा पर आधारित अनूदित काव्यों में प्रादेशिक भाषा कवियों ने व्यास कृत 'महाभारत' और 'श्रीमद्भागवत' को आदि स्रोत बनाया है। इन दोनों के अतिरिक्त उन्होंने लोकप्रचलित मौखिक कथाओं से भी आख्यान-उपाख्यान ग्रहण किये हैं। हिन्दी में सूरदास कृत 'सूरसागर' तेलुगु में कवित्रय कृत 'महाभारत', पोतना विरचित 'महाभागवत', तमिल में विल्लिपतूर कृत 'भारदम्' तथा नल्ल पिल्लै कृत 'नल्ल पिल्लै भारतम्' कन्नड में महाकवि

पंप कृत 'विक्रमार्जुन विजय' अथवा 'पंपभारत' तथा नारायणप्पा अथवा कुमार व्यासकृत 'कन्नड भारत', लक्ष्मीश कृत 'जैमिनि भारत', मलयालम में शंकर पणिकर कृत 'भारत माला', उडिया में सारलादास कृत 'सारला महाभारत' आदि में प्रदेश विशेष के लोकाख्यानों के प्रक्षेपण के लिए पर्याप्त महत्व दिया गया। व्यासकृत महाभारत व श्रीमद्भागवत से ज्यादा प्रदेश विशेष में इनका प्रचलन होने का मूल कारण यही लोकोख्यान ग्रहण करना ही है।

मध्ययुगीन प्रादेशिक भाषाओं के भक्तकवियों ने लोक सुलभ साधना के अंतर्गत लोकस्रोत से इन प्रसंगों एवं उपाख्यानों किंवा कथानक रूढियों के साथ साथ गीतिशैली को बड़ी मात्रा में अपनाया है। गीति तत्व की सरल संप्रेषणीयता, साधारण जनता पर उसकी चित्ताकर्षक प्रवृत्ति से प्रभावित होकर उसे लोकसंपर्क-स्थापना के सही एवं प्रभावी माध्यम के रूप में मान्यता दी गयी है। मध्ययगीन भारतीय भक्तकवियों ने संस्कृत साहित्य से प्राप्त इस गेय पद्धति का पर्याप्त उपयोग किया है । इस लोकरंजक गीति शैली को अपनाकर उन्होंने अपने भक्ति-संदेश को आम जनता तक पहुँचाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। उन्होंने अपने गान-माधुर्य से प्रेम-भक्ति मूलक संदेश को सामान्य जनता के बीच प्रसारित किया। गीति शैली में किंवा गेय पदों में साहित्य और संगीत की युगल शक्ति निक्षिप्त होती है। गेय पदों की इस दुधार शक्ति का उन्होंने भरसक उपयोग किया है। उनमें कई वाग्गेयकार कहलाये। मातुवु 'साहित्य' और धातुवु 'संगीत' के समान-सांयोजन की अद्भुत प्रतिभा रखनेवाले गेय पद कवियों को ही वाग्गेयकार कहते हैं। उनकी एक विशेषता यह भी है कि एक हाथ में कोई न कोई संगीत-वाद्य लेकर नर्तन करते हुए अपने गेय पदों को जन मध्य में गाया करते थे। संगीत-साहित्य से ओतप्रोत उनके गेय पदों का जनता पर अतुलनीय प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। इन भक्तकवियों में अधिकाँश के गेय पद भले ही शास्त्रसम्मत न हो, उसमें लोकचित्त को मोहनेवाली अद्भुत शक्ति छिपी हुई है। इसलिए इन भक्तकवियों के गीत भारत के घर घर में, गली गली में गूँजते सुनाई पड़ते हैं। इनमें अधिकाँश गायक कवि थे। कवि गायक कम थे।

हिन्दी में गेय पदों की एक सुदृढ परंपरा दिखाई पड़ती है। हिन्दी में मूलतः दो प्रकार के गेय पदों का प्रयोग हुआ है। पहले प्रकार के गेय पद वे हैं, जिसकी राग-रागिनियों के बारे में स्वयं कवि ने अपनी कलात्मक प्रतिभा के सहारे कोई

निदेशदिया है। हिन्दी के अधिकांश भक्त कवियों ने लीला-गान संबंधी अपने गेय पदों में इस प्रकार के निर्देश दिये हैं। दूसरे प्रकार के गेय पद वे हैं, जिनको गाने के लिए कोई सुनिश्चित राग-रागिनियों का निर्देश नहीं किया गया है। पहले प्रकार के गेय पद ही हिन्दी में ज्यादा मिलते हैं। इससे संगीत के क्षेत्र में उनकी अप्रतिम प्रतिभा का पता चलता है। इनमें से कुछ ऐसे भी कवि थे, जो लिखते कम थे, ज्यादा गाया करते थे। हिन्दी साहित्यकाश के सूरज माने जानेवाले सूरदास श्रीनाथ मंदिर में मौखिक रूप में पद निर्माण करके नित्य नवीन पद गाया करते थे। श्रीकृष्ण के प्रेम में आत्मविभोर होकर मीरा एक हाथ में एकतारा लेकर बजाती, अपने प्रभु श्रीकृष्ण के भजन गाया करती थी। लगभग उसी रूप में तेलुगु के पदकविता पितामह अन्नमाचार्य एक हाथ में चिडतलु, दूसरे हाथ में एकतारा के साथ संगीत की धुन में नर्तन करते हुए गाँव गाँव घूमकर अपने मधुर संकीर्तन गाया करते थे। प्रसिद्ध राम भक्ति गायक कवि त्यागराजु तो संगीत के ही विलक्षण प्रतिभा के अधिकारी थे। तमिल के कंबन ने अपनी रामायण को विरूत्तम छंद में लिखकर उसे संगीतोपयोगी बना दिया। मलयालम में प्राप्त दोनों प्राचीनतम रामायण रामचरितमु, राम कथा पाट्टु अपनी गेयता के लिए प्रसिद्ध हैं। गेय पद रचनाओं के ये कुछ ही उदाहरण हैं। भारत भर में इसकी सुदृढ परंपरा देखी जा सकती है। इस रूप में मध्ययुगीन प्रादेशिक भाषाओं के कवियों ने अपनी लोक सुलभ साधना के लिए गीति-तत्त्व को एक उपकरण के रूप में उपयोग करके भक्ति को लोकोन्मुख बना दिया है।

मध्ययुगीन भारतीय भक्तकवियों ने अपनी लोक सुलभ साधना की दिशा में लोक प्रचलित काव्य रूपों का ग्रहण भी किया है। ये काव्य रूप शास्त्रसम्मत नहीं होते हुए भी लोक रूप को दृष्टि में रखकर लोकगीतों के अनुरूप निर्मित किये गये हैं। हिन्दी का 'सोहर' इसी प्रकार का एक काव्य रूप है। जो पहले नितांत एक लौकिक काव्य रूप किंवा लोक गीत मात्र था, जो जन्मोत्सव के अवसर पर गाया जाता था। इसी प्रकार तेलुगु प्रदेश में विभिन्न अवसरों पर गाये जानेवाले अनेक लोक गीत लोक प्रचलित हैं। जैसे जागरण के गीत या सुप्रभात गीत, जाजर गीत, सुव्वि के गीत, गोब्बि के गीत, लोरी गीत, मंगल गीत आदि। संकीर्तनाचार्य अन्नमाचार्य ने इन सभी लोक गीतों के रूपों को अपने संकीर्तनों का आधार बना लिया है। इन लोक गीतों के अनुकरण पर उन्होंने कृपावत्सल श्रीवेंकटेश्वर की भक्ति में आत्म-

विभोर होकर हजारों संकीर्तन गाये थे। श्रीवेंकटेश्वर के अन्यतम भक्त अन्नमाचार्य ने इस प्रकार के लोकगीतों की धुन व रूपों के अनुकरण पर ही संकीर्तन रचकर वेंकटेश्वर के भक्ति-संदेश को गाँव-गाँव एवं गली गली में पहुँचा दिया है। उदाहरण के लिए 'तंदान पाटलु' नाम से आन्ध्र के लोकगीत बहुत ही प्रचलित हैं। इस प्रकार के गीतों को समूह में लोग गाते हैं। समूह में एक अपने हाथ में एकतारा लेकर 'तंदाना' कहकर गायेगा, तो बाकी समूह तंदाना या तंदनाना कहकर सहगान करते हैं। यह 'तंदान' बार बार आवृत्त होकर गीत की लय व गति को बढ़ाता है। श्री वेंकटेश्वर के परब्रह्म स्वरूप का निरूपण करते हुए अन्नमाचार्य लोक गीत शैली में गाते हैं -

तंदनान अहि तंदनान पुरे
तंदनान भला तंदनान ॥ टेक ॥

ब्रह्म मोक्कटे पर ब्रह्ममोक्कटे पर
ब्रह्म मोक्कटे पर ब्रह्म मोक्कटे ॥ तंदनाना ॥

कंदु वगु हीनाधिकमुलिन्दु लेवु
अंदरिकि श्रीहरे अंतरात्म
निंडार राजु निद्रिन्चु निद्रयु नोकटे
अंडने बंटु निद्र अदियु नोकटे
मेंडैन ब्राह्मणुडु मेट्ट भूमि योकटे
चंडालुन्डेटि सरि भूमि योकटे ॥ तंदनान ॥

अनुंगु देवतलकुनु अल काम सुखमोकटे
वन कीट पशुवुलकु काम सुखमोकटे
दिन महो रात्रमुलु तेगि धनाढयुन कोकटे
बोबर निरुपेदनु वोक्कट अवियु ॥ तंदनान ॥

कोरति शिष्टन्नमुलु गोनु नाक लोकटे
तिरुगु दुष्टान्नमुलु तिनु नाकलोकटे
परग दुर्गन्धमुलपै वायु वोकटे
वरूस बरिमलमु पै वायु वोकटे ॥ तंदनान ॥

कडगि येनुगु गीद गायु येन्डोकटे
पुडमि शुनकमुमीद बोलयु नेन्डोकटे
कडु बुण्यलनु बाप कर्मुलन सरिगाव
जडियु श्रीवेंकटेश्वरू नाम मोकटे ॥ तंदनान ॥

अर्थात् इस चराचर सृष्टि में श्रीहरि ही एक मात्र ब्रह्म हैं। वे ही परब्रह्म हैं। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु सतत परिवर्तित व विकसित होती रहती है। परन्तु ब्रह्म अकेला ही शाश्वत व अपरिवर्तनीय है। सृष्टि के कण कण में वे ही परब्रह्म व्याप्त हैं। उनसे बने इस जगत में ऊँच - नीच और वर्ग वैषम्य रखने लायक वस्तु कोई नहीं है। समस्त प्राणी की अंतरात्मा श्री हरी ही हैं। अतः सृष्टि का प्रत्येक प्राण समान है। सब को जीने का समान अधिकार है। इस प्रकार की प्रगतिशील भावनायें प्रस्तुत संकीर्तन में व्यक्त हुई हैं।

इस प्रकार के लोक गीतों के रूपों पर आधारित गेय पद केवल अन्नमाचार्य ही नही, उनके बाद के श्रीक्षेत्रय्य, भद्राचल रामदास, पुरंदरदास और त्यागराजु की रचनाओं में भी बड़ी संख्या में प्राप्त होते हैं। हिन्दी के मध्ययुगीन भक्तकवियों ने तो इस प्रकार के लोकगीतों पर आधारित काव्य रूपों का भरमार ही लगा दिया है। उनमें से अधिकांश मध्ययुगीन भक्ति-साहित्य में अत्यधिक प्रचलित हुए हैं। वे हैं होरी, अखराहट, सोहर, शबद, रमैनी, ककहरा, चौंतासा, बाईसा, तीसी, चालीसा, सतसई, आरती, अठ पहरा, मंगला, बिरहुली, नहछू मंगल, बसंत, हिंडोला, बारह मासा, चांचर, पचग, रास, कहरा, बचारी, साखी और बेलि। इनमें से अधिकांश को थोडे संशोधन के साथ गेय पद लिखनेवाले भक्तकवियों ने अपना लिया है। उदाहरण के लिए 'सोहर' लोकगीत को लिया जा सकता है। लोक जीवन में विभिन्न संस्कारों के अवसरों पर लोक गीत गाये जाते हैं। प्रत्येक घर परिवार में जन्मोत्सव जन्म संस्कार ऐसा अवसर है, सभी अतिप्रसन्न नाचते व गाते हैं। यह माना जाता है कि सोहर शब्द की व्युत्पत्ति ही संस्कृत के 'सूतिका गृह' और प्राकृत के 'सुइउर'से हुई है। सोहर लोकगीत हिन्दी प्रदेश का अत्यंत प्राचीनतम गीत है। गीत में कहीं कहीं सोहर शब्द का उल्लेख भी किया जाता है। तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' के साथ साथ 'जानकी-मंगल', 'पार्वती-मंगल' और 'रामलला-नहछू' में इसका अत्यधिक प्रयोग किया है। सूरदास के सूर-सागर में सोहर के गीत

उपलब्ध होते हैं। सूर-सागर में संग्रहीत एक सोहर गीत निम्नांकित है -

घनि घनि नंद जसोमति, घनि जग पावन रे।
धनि हरि लियौ अवतार, सुधनि दिन आवन रे।
दसएं मास भयौ पूत, पुनीत सुहावन रे।
संख चक्र गदा पद्म चतुर भुज भावन रे।

मध्ययुगीन भारतीय भक्त कवियों ने अपनी लोग सुलभ साधना में कथानक- रूढियाँ, गेय पद शैली, लोक गीतों पर आधारित काव्य रूपों के साथ-साथ भाषा प्रयोग को अत्यधिक महत्व दिया है। सरल व्यावहारिक भाषा प्रयोग के साथ-साथ उन्होंने लोक जीवन में प्रचलित मुहावरें, कहावतें और पहेलियों का विशेष प्रयोग किया है। सरल व्यावहारिक भाषा प्रयोग से भाव-संप्रेषणीयता में सहायता मिलती है। साथ ही व्यक्त-भाव के साथ अपनापन व विश्व सामीप्यता बढ जाती है। भक्त कवियों की लक्ष्य पूर्ति में इसकी अत्यंत आवश्यकता थी।

किसी भी भाषा की भाव-प्रवणता अभिव्यंजक शक्ति उसमें व्यवहृत होनेवाले मुहावरों पर निर्भर होती है। मुहावरे भाषा में गति को पैदा करते हैं। इन अमूल्य मुहावरों का घनिष्ट संबंध लोक जीवन से है। ये लोक जीवन में ही साँस लोक साहित्य में फूलते-फलते हैं। इसलिए इनमें लोक चित्त को आकर्षित करने की अद्भुत शक्ति छिपी रहती है। कहावतें भी इसी प्रकार के भाषा उपकरण हैं। ये भी लोक मानस से उद्भूत होकर धीरे-धीरे साहित्य में अपना स्थान ग्रहण करते हैं। फिर पहेलियाँ परंपरा से प्रदत्त लोक-ज्ञान-विश्लेषण की पूँजीभूत संपदा है। पहेली बुझावन प्रक्रिया सामान्य सांसारिक ज्ञान की पूँजीभूत संपदा है। पहेली-बुझावन प्रक्रिया सामान्य सांसारिक ज्ञान की परीक्षा लेती है। इसमें ज्ञान-वर्धक शक्ति और मनोरंजक शक्ति दोनों छिपी रहती हैं। भाषा की इस त्रिकोणात्मक शक्ति को मध्ययुगीन भक्त कवियों ने स्वीकार किया है। उन्होंने अपने भक्ति साहित्य को लोक सुलभ बनाने के लिए इन तीनों का यथावसर तथा यथोचित व अत्यधिक प्रयोग किया है। प्रदेश विशेष के लोक जीवन से इनका ग्रहण करके उन्होंने अपने भक्ति-साहित्य को लोकोन्मुख बना दिया है।

अपने भक्ति साहित्य में लोक पक्ष को और सुदृढबनाने के लिए भारतीय भक्तकवियों ने लोकजीवन से संबंधित विविध रीति-रिवाजों, संस्कारों, लोक विश्वासों, पर्व-व्रत-उत्सव और प्रथाओं तथा परंपराओं का संयोजन किया है। आदमी परंपरा का श्रद्धालु होता है। जीवन के सुख-दुखों में परंपरा की नजरिये से उनके समाधान ढूँढने का प्रयास करता है। परंपरा की नजरिये सेही सुख-दुखों में, हर्ष-उल्लास-शोक प्रकट करता है। पूर्व जीवन के सुख-दुखों के सापेक्ष उद्‌भूत हर्ष-उल्लास-शोक की रीति-रिवाज, प्रथाएँ-परंपराएँ व विश्वास के रूप धारण करते हैं। परंपराएँ व विश्वासों के घेरे में पर्व-व्रत-उत्सवों का आयोजन करता है। अपने संस्कारों से उनका विधिविधान तैयार करता है। ये विधि-विधान ही कालांतर में रीति-रिवाज बन जाते हैं। इस रूप में ये सब लोक जीवन के अनुभवों, संस्कारों व मान्यताओं से निसृत परंपरा से प्राप्त लोकोचारों के विविध रूप हैं। इन लोकोचारों को अपने भक्ति साहित्य में विशेष महत्व देकर भारतीय भक्त कवियों ने अपनी कृतियों को काफी जीवंत व सफल बनाया है। मध्ययुगीन भारतीय भक्त कवियों की कृतियों में लोकोचारों की इन विविध विशेषताओं को बड़ी मात्रा में ढूँढ निकाले जा सकते हैं। यह लोक साधना उनके अभिमत के अनुकूल ही थी।

भारतीय भक्ति साहित्य में इस लोक पक्ष ने अपनी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। ईश्वरीय साधना व भक्ति के क्षेत्र में इस लोक निरूपण ने ऐसी सफलता प्राप्त की कि भक्ति-दर्शन की निगूढ-जटिल बातें सरल-स्वीकारयोग्य व अनुकरणयोग्य हो गयीं। भारतीय भक्ति साहित्य लोक कंठ की मधुर वाणी को अपने में संजोकर अधिक सुलभ बन गया। भारत के गाँव-गाँव, गली-गली में आख्यान, उपाख्यान से भरे, गेय पदों से गूंजित लोक जीवन की सरलताओं को लेकर भारतीय भक्ति साहित्य लोक-सुलभ-गम्य तथा लोक प्रचलित व कालजयी बन गया है।

3. लोक साहित्य में रामायण एवं महाभारत कथाएँ

मिथकीय कथाएँ व पौराणिक आख्यान भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अपृथक्करणीय हैं। भारतीय जीवन न केवल इनसे प्रभावित है, बल्कि सतत इनसे विकासोन्मुख अपनी ऊर्जा प्राप्त करता आ रहा है। भारत में इन आख्यानों की ऐसी परंपरा एवं प्रसार रहा है, जो अटूट व अटल है। समय-समय पर भारतीय मेधा ने अपने चिंतन-मंथन से इनको सतत संशोधित, जीवनानुकूल, अधिक प्रामाणिक, जीवंत बनाने के सफल प्रयास किये हैं। इसलिए अविच्छिन्न परंपरा के होते हुए भी भारतीयों की यह अमूल्य पौराणिक संपत्ति चिरपरिवर्तनशील रही है। परिवर्तनशीलता जीवंतता के मौलिक तत्वों से एक है। इसी विशेपता के कारण ही बहुत प्राचीन माने जानेवाले भारतीय पौराणिक काव्य और उनके आख्यान आज भी प्रासंगिक एवं जीवनोत्तेजित करनेवाली क्षमता रखते हैं। इतना ही नहीं भारत में इनका प्रचार एवं प्रसार इतने बडे पैमाने पर हुआ है कि ये भारतीय जनता की नस नस में घुल मिलकर उनके जीवन के अभिन्न अंग बने हुए हैं। भारत में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जो इन आख्यानों से अपरिचित हो।

इन पौराणिक आख्यानों के लिपिबद्धरूप कवि विशेष के नाम से बहुत बाद में जनता के सामने आये होंगे, ऐसा अनुमान किया जाता है। यह भी माना जाता है कि इन पौराणिक आख्यानों एवं काव्यों की सुदूर लंबी मौखिक परंपरा रही होगी। मौखिक परंपरा किंवा जनश्रुति या जनता में प्रचलित अलिखित स्रोतों से कवि विशेष ने उन्हें ग्रहण कर लिया होगा। परन्तु यह बड़ा विवादास्पद विषय है कि लिपिबद्धपुराण-काव्यों के आदिस्रोत जनता में प्रचलित मौखिक आख्यान परंपराएँ हैं या मौखिक आख्यान परंपराओं ने ही लिपिबद्ध काव्य-पुराणों से अपनी वस्तु को चुना है। इतना तो अवश्य है कि भारतीय भाषाओं में प्राप्त पुराण-काव्यों के अनेक विचित्र आख्यान-उपाख्यान इन्हीं मौखिक आख्यान परंपरा किंवा लोक साहित्य

पर आधारित हैं। इन पुराण-काव्यों में विशेषकर रामायण और महाभारत में अनेक ऐसे आख्यान-उपाख्यान प्राप्त होते हैं, जो मूल लिपिबद्ध रूपों से सर्वथा भिन्न हैं। ये भिन्नताएँ प्रदेश विशेष में प्रचलित मौखिक काव्य-परंपराओं से ही उद्भूत हुई होंगी। इसलिए भारत में प्राप्त रामायण महाभारत के आख्यान-उपाख्यानों में अनेक स्तरों पर भिन्नताएँ दिखाई पडती हैं। इन भिन्नताओं को उस प्रदेश विशेष की जनता की मौलिक संपत्ति मान लेनी चाहिए। अतः पौराणिक-काव्यों से लोक साहित्य किंवा मौखिक काव्य परंपराओं का अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध है।

अन्य पौराणिक आख्यानों की तरह लोक साहित्य में रामायण एवं महाभारत से संबंधित पौराणिक प्रसंग बडी सख्या में प्राप्त होते हैं। विविध संदर्भों में गाये जानेवाले छोटे छोटे लोकगीतों से लेकर लंबे लंबे स्वतंत्र कथागीत रचनाओं में भी इन पौराणिक कथाओं का उल्लेख मिलता है। लोक साहित्य में प्राप्त ये पौराणिक आख्यान मात्र धार्मिक ही नहीं, बल्कि भारतीयों के सुख-दुखों, सभ्यता-संस्कृति के आधारभूत व आदिस्रोत भी हैं। विश्व सभ्यता में भारतीयाों को शीर्षस्थ स्थान दिलानेवाले वेद और उनमें निक्षिप्त ज्ञान लोक सुलभ नहीं है। वेदों के बाद वेदों के समान ज्ञान और जन कल्याण के दिशा-निर्देशन कर सकनेवाले ग्रंथ पौराणिक काव्य और उनमें उल्लिखित आख्यान-उपाख्यान हैं। ये पौराणिक उपाख्यान लोक सुलभ होने के कारण सभी भारतीयों को माननीय एवं अनुरकणीय बन पडे हैं। रामायण, महाभारत, महाभागवत आदि पौराणिक काव्य सभी भारतीयों को समान रूप से प्रभावित कर सकनेवाले कल्पनातीत हृदयोद्गार हैं। फिर इन तीनों में भी रामायण ने अपने आदर्श मानवीय गुणों से भारतीय जनमानस पर अपनी अमिट छाप छोडी है। उसमें वर्णित प्रसंग पारिवारिक, सामाजिक एवं मानवीय संबंध धर्म, नीति, आदर्श आदि की व्याख्याएँ यहाँ तक कि संपूर्ण जीवन-पद्धति भारतीयों की आचार संहिता के ही आधार बनी हैं।

रामायण में चित्रित अनेक प्रसंग जनता के हृदयों को अनोखे ढंग से स्पन्दित करके रसार्द्रकरने में अत्यंत सक्षम हैं। धार्मिक व नैतिक मूल्य जीवन सापेक्ष्य होते हैं। महाभारत काल तक आते आते भारतीय जीवन में कई विलक्षण परिवर्तन हुए। जीवन के सापेक्ष्य धार्मिक व नैतिक मूल्यों की पुनर्व्याख्या हुई। जीवन के लक्ष्य और उनकी पूर्ति के मार्ग बदलते गये। मानव जीवन में सरलता की

जगह जटिलता अपना महत्व बढाने लगी। जीवन की यह जटिलता महाभारत युग के बाद निरंतर बढ़ती हुई और संश्लिष्ट होती गयी। जीवन की जटिलता के सापेक्ष्य पर विकसित आदमी के जटिल मानसिक स्वभाव ने मानव जीवन के उच्चतम जीवनादर्श के रूप में रामायण को ही मानने के पक्ष में होगा, न कि थोडा बहुत जीवन के अनुकूल परिवर्तित महाभारतकालीन जीवनादर्श को। इसलिए भारतीयों का, खासकर जानपदों का झुकाव महाभातरत की तुलना में रामायण की ओर ज्यादा दिखाई पड़ता है।[3]

रामायण एवं महाभारत के उपाख्यान ग्रहण में लोकचित्त की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जानपद अपने आप में सरल स्वभाव के होते हैं। वे कृत्रिमता से कोसों दूर सहज जीवन चाहनेवाले होते हैं। वे अमलिन, शांत,सरल, स्वतंत्र जीवन के प्रेमी हैं। सरलता उनकी विशेषता है, तो भावुकता उनकी आत्मा है। वे दूसरों के सुख-दुखों को अपना माननेवाले दयालु हैं। द्वेष,प्रतिशोध आदि गुणों के होते हुए भी प्रेम, अनुराग, स्नेह आदि से दूसरों के साथ जीवन बाँटने के मानवतावादी हैं। इन सभी कोमल वृत्तियों से संपन्न जानपदीय जन-मानस को धर्म-अधर्म की जटिल व्याख्या प्रस्तुत करनेवाली महाभारत की तुलना में रामायण अनुसरणीय किंवा प्रिय लगना उचित ही है।

जानपदों की सरल मानसिकता के कारण ही लोक साहित्य में महाभारत की अपेक्षा रामायण ने एक अतुलनीय व अद्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया है। लोक साहित्य में रामायण की तुलना में महाभारत कथाश्रित लोक गीत बहुत ही कम संख्या में प्राप्त होते हैं। वैसे आंध्रलोक साहित्य में स्त्रियों के लोक गीतों की संख्या ही अधिक है। नारी हृदय कोजीतनेवाले, रसावेग और रोमांच किंवा तादात्म्य कर सकनेवाले प्रसंग व पात्र, विचित्र माया कथा प्रसंगों से भरी महाभारत की अपेक्षा रामायण में अधिक मात्रा में दिखाई पडने हैं। महाभारत कथा की कुन्ति, गांधारी, द्रौपदी, उत्तरा, दुस्साला, भानुमति, सत्यवती, सुधेष्णा जैसी नारी पात्र अपने शील, स्वभाव, चरित्रों के कारण स्त्रियों के सहज कोमल मन को द्रवीभूत कर सकने की क्षमता रखने के बावजूद भी रामायण की सीता की गरिमा के सामने फीकी पड जाती हैं। कुछ सीमा तक द्रौपदी जन सुलभ, जन रंजित, जन हृदयहारी पात्र होने पर भी

सीता की तरह जनता के अनुराग, आत्मीय जनों के प्रति दिखानेवाली कसक, सहानुभूति आदि आम जनता से प्राप्त नहीं कर सकी हैं।

सीता और द्रौपदी दोनों पुरुष वर्ग के आभिजात्य, अहंकार, मिथ्या सम्मान के शिकार बने पात्र हैं। लेकिन इन दोनों के चरित्रों में अनेक स्तरों पर विलक्षण अंतर प्रस्पुटित होते हैं। द्रौपदी अपने प्रति हुए अपमान, अन्याय का विरोध अत्यंत सफल ढंग से कर सकनेवाली मानसिक धैर्य प्राप्त नारी के रूप में उभरती है। यहाँ तक कि अपने संपूर्ण अपमानों का बदला लेने की क्षमता उसमें दिखाई पड़ती है। जबकि जानकी में वे गुण कहाँ ? बगैर किसी अपराध की सजा भुगतनेवाली, पतिपरायणा, अपने कष्टों को अंदर ही अंदर मूक रूप में सहननेवाली सहनशीली सीता में ही जनमानस तल्लीन हो उठना स्वाभाविक है। सहनशील, करूणाशील, अनुरागमया सीता में आंध्र जनता अपनी माँ को देखती है। इसलिए उसे 'सीतम्म' कहकर संबोधन करती है। 'सीतम्म' उनकी माँ है। श्रीराम उनके पिता हैं। इसी बुनियादी धारणा की वजह से स्त्रियों के गीतों से समृद्ध तेलुगु लोक साहित्य में 'रामायण' और उसके विभिन्न उपाख्यानों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। अन्य पौराणिक कथाओं एवं प्रसंगों की अपेक्षा रामायण से संबद्ध स्त्रियों के लोकगीत ही बड़ी संख्या में प्राप्त होते हैं। जानपदीय हृदयों को उत्तेजित व स्पंदित कर सकने की जो शक्ति राम कथा में है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

जानपद अपनी मानसिकता और अपने जीवनानुकूल कथा प्रसंग, रस प्रधान स्थितियों को ही अपने गीतों के लिए चुनते हैं। विशेषकर वे करूणा, हास्य, भयानक, वीर आदि रसों को अधिक महत्व देते हैं। लोक साहित्य में इसलिए इन्हीं का समावेश ज्यादा दिखाई पडता है। इस दृष्टि से भी रसोद्वेग जगाकर स्त्रियों को रुलाकर आँसू बहा सकनेवाले प्रसंग महाभारत की अपेक्षा रामायण में यत्र-तत्र दिखाई पडते हैं।

रामायण में चित्रित सीता से संबद्ध अनेक संवेदनशील व मार्मिक प्रसंगों के आधार पर आंध्र के जानपदों ने अनेक चित्ताकर्षक लोकगीतों की रचना की है।[4] कारण यही है कि सीता ने जितने कष्टों को झेला था, शायद ही इतिहास में किसी दूसरी नारी ने भोगा हो। इसलिए प्रताडित एवं अनेक दुखों से युक्त सीता के जीवन ने जन-मानस पर अमिट प्रभाव डाल दिया है कि स्त्री जीवन में संप्राप्त कष्टों को आंध्र

प्रांत में 'सीतम्म कष्टालु' के रूप में अभिवर्णित किया जाता है। अनेक बाधाओं एवं कष्टों से पीडित नारी को देखने पर सायास ही सीता के कष्ट ॥ सीतम्मवारि कष्टालु॥ भोग रही है, कहकर तसल्ली देने की परंपरा आंध्र प्रांत में सर्वत्र दिखाई पडती है। इतना ही नहीं, उस स्त्री पर 'सीता' के नाम का आरोप करके उसके मानसिक भार को हलका करने का प्रयास भी करते हैं। लोकगीत गानेवाले लोक गायक सीता के कष्टों को अपना मानकर और अपने कष्टों को सीता पर आरोप करके 'सीता' के प्रति तादात्म्य हो जाते हैं। इसलिए आंध्र प्रांत की स्त्रियाँ सीता को अपने से भिन्न नहीं मानती हैं। अपने सुख-दुखों की कहानी सीता को सुनाती है, तद्वारा मानसिक शाँति की अपेक्षा भी करती है। जीवन में प्राप्त सुख-दुखों को सीता और श्रीराम के साथ जोडकर उठते-बैठते, सोते-जागते, बोलते-गाते हर समय सीता-राम नाम स्मरण करके ही वे अपने जीवन को सफल व पुनीत बनाना चाहते हैं। इसलिए आंध्र लोक साहित्य के अनेक लोकगीतों की समाप्ति सीता-राम के नाम स्मरण से होती है। नित्य राम-नाम स्मरण करनेवाले इन जानपदों का जीवन ही राममय है। उनके तन-मन-धन रामार्पित है।

महाभारत के किसी भी पात्र व प्रसंग के साथ इस प्रकार के अटूट संबंध को नहीं देख सकते हैं। जानपदों की मानसिकता एवं कल्पनाशीलता विलक्षण होती है। निस्सहाय, निरपराधी, झूठे आरोपों के शिकार होकर असीम दुख झेलनेवाले पात्र व प्रसंग उनके चित्त को शीघ्र आकर्षित कर लेते हैं। रामायण के आख्यान-उपाख्यानों में इसी प्रकार के मार्मिक स्थलों ने इन लोक गायकों को अपनी और खींच लिया है। इतना ही नहीं, जानपदों की दृष्टि में सीता और राम भगवद अंश के अवतार पात्र नहीं हैं। वे दुखों में रोनेवाले और सुखों में तन्मय होकर आनंद मनानेवाले साधारण स्त्री-पुरुष हैं। शायद इस दृष्टि के कारण ही वे सीता और राम को अपने से अलग नहीं मानते हैं, बल्कि अपने में एक मानते हुए उनके साथ तादात्म्य हो उठते हैं। इसलिए सीता-राम न केवल उनके आदर्श पात्र बने हैं, बल्कि अत्यंत आत्मीय पात्र भी।

4. लोक रामायणों के संग्रह कार्य

'रामायण' भारतीयों का आदि महाकाव्य ही नहीं बल्कि भारतीयों की 'भावना' व जीवन-दर्शन का प्रतिबिंब भी है। वाल्मीकी रामायण के पूर्व अष्टादश पुराणों में राम और उनकी कथा का विवरण प्राप्त होता है। वाल्मीकी ने उन कथाओं से वस्तु ग्रहण की होगी। परन्तु इस के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं। वाल्मीकी के बाद वाल्मीकी से अत्यधिक प्रभावित तथा उन्हें अपने प्रिय कवि के रूप में माननेवाले महाकवि कालिदास के 'रघुवंश' में राम कथा के साथ साथ सूर्यवंशीय राजाओं का विपुल व सुंदर वर्णन मिलता है। कालिदास के बाद संस्कृत में राम कथा की एक सुष्ट परंपरा प्राप्त होती है। संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं में इतनी प्राचीन परंपरा मिलती नहीं है। परन्तु 10 वीं शताब्दी ई. से सभी भारतीय भाषाओं में रामकथा साहित्य या रामायण काव्य लिखे गये हैं।

शिष्ट रामायणों के इस सुदृढ व समृद्ध परंपरा के समानांतर जनश्रृतियों के रूप में किंवा लोक प्रचलित लोकरामायणों की एक लंबी परंपरा रही होगी। यह कहना आज कल्पनाजनित व प्रतिबद्ध आक्षेप हो सकता है कि शिष्ट रामायणों का आधार लोकप्रचलित ये लोक रामायण ही रही होंगी। शिष्ट रामायणों का रसग्रहण पांडित्य प्रतिभा की अपेक्षा करता है। वस्तुतः काव्य शास्त्रीय नियमों तथा साहित्यिक सूक्ष्मताओं के आलोक में ही इनका रसास्वादन संभव है। परन्तु लोक रामायणों की संप्रेषणीयता इन में से किसी की भी अपेक्षा नहीं रखती है। उनका रूपगठन व शैली शिल्प की वैशिष्ट्यता लोकग्राह्य के लिए अतिसुलभ है। लोक चित्त को आकर्षित करने तथा उत्तेजित करने के सभी साहित्यिक संस्कार उन में बहुत सरल रूप में भरे रहते हैं। उन में व्यक्त विचार अनुभव प्रसूत है। वे जीवन के सुख-दुखों की निछोड़ से बने घोल मात्र ही हैं। इसलिए वे अपनी सरलता एवं सरसता में लोक चित्त को मोह लेते हैं। प्रामाणिक अनुभवों के सतत संशोधित होने के कारण ये लोक रामायण

प्राचीन होते हुए भी अर्वाचीन लगती हैं। इनकी लंबी परंपरा तो है ही लेकिन इनके उद्भव के समय का पता लगाना आसान काम नहीं बल्कि असंभव भी है।

कथा गाथन भारतीयों की अतिप्राचीन साहित्यिक परंपरा है। वैदिक काल में ही ऋषि - आश्रमों में वेदों का पठन-गायन होता था। वेदों के उपरांत अष्टादश पुराण भी इसी शैली में लोकप्रचलित हुए। पुराणों का लोक प्रसार भी इसी गायन शैली में ही होता था। आदि काव्य माने जाने वाली वाल्मीकी रामायण भी लवकुश के द्वारा गायन शैली में ही लोक प्रसारित हुई थी। वाल्मीकी ने अपने आश्रम बालक व श्रीरामचंद्रजी के पुत्र लव और कुश को पूरी रामकथा को सुनाया था। फिर लव और कुश ने उसी राम कथा को अश्वमेध यज्ञ के पहले श्री रामचंद्रजी के दरबार में गायन किया था। वाल्मीकी रामायण में उल्लिखित यह प्रसंग ही दो अमूल्य प्रमाण प्रस्तुत करता है। पहला किसी भी कथा के लोकप्रसार के लिए 'गायन' एक सरल साधन था। तथा जनता कथागायन को अत्यधिक पसंद करती थी। दूसरा लोक कथा गायन आदि काव्य शिष्ट रामायण से भी प्राचीन है। ये दोनों प्रमाण लोक रामायण परंपरा को न केवल अतिप्राचीन सिद्ध करते हैं बल्कि शिष्ट रामायणों के लिए वे ही अजस्र स्रोत होने के तर्क प्रस्तुत करते हैं।

यह तथ्य यह सिद्ध कर देता है कि लोक रामायण शिष्ट रामायणों से अतिप्राचीन हैं। इस अतिप्राचीन परंपरा का उद्गम स्थल तक पहुँचने के लिए आज कोई साधन उपलब्ध नहीं है। न ही अतिप्राचीन काल में प्रचलित लोक रामायण आज प्राप्त ही होती हैं। अनेक युगों से जनता के कंठ में अनाश्रृत ही अजस्र-धारा के रूप में प्रवाहित होनेवाली अनेकानेक रामायण अलिखित ही अथाह काल सागर में संगम हुई होंगी। यह इसलिए विश्वसनीय व प्रामाणिक लगता है कि आज उपलब्ध लोक रामायण संख्या में अत्यल्प हैं। काल प्रवाह से बचकर सहज जीवन बल से पोषित होकर लोक साहित्य के साहसी संग्रहकर्ताओं की लेखनियों के स्पर्श से बहुत कम रचनाएँ जनालोक में आ पायी हैं। संग्रहकर्ताओं की लेखनियों से दूर और भी कई रामायण जनता के मध्य में आने से वंचित हैं।

यह मानना पड़ेगा कि तेलुगु में लोक रामायणों के संग्रह कार्य कम ही हुए हैं। संग्रहकर्ताओं के कठिन प्रयासों से प्रकाश में आयी और जनता को अपने सहज सौंदर्य से अभी भूत करनेवाली लोक रामायण संख्या में बहुत ही कम हैं। आंध्र के

सभी प्रदेशों में परिव्याप्त इन लोकरामायणों को संग्रह करने के कार्य अत्यंत अपेक्षणीय व प्रशस्तनीय हैं। इस महतीकार्य में योगदान देनेवाले महानुभाव नित्य स्मरणीय हैं। सभ्य जनता एवं पंडितों से भी प्रशंसित इस महती कार्य को आंध्र में सबसे पहले संपन्न करनेवाले विद्वानों में श्री नंदिराजु चलपतिराजु का नाम बड़ी आदरता के साथ लिया जाता है। श्री कृष्णश्रीजी 'श्री पाद गोपाल कृष्ण मूर्तिजी' के अनुसार वे स्त्रियों के वाणिबद्ध वाड्मय के पितामह हैं। उन्होंने सन् 1900 ई.में और सन् 1903 ई.में स्त्रियों के द्वारा गाये जाने वाले अनेक गीतों का संग्रह कर के प्रकाशित किया है। इनमें अनेक छोटे गीतों के साथ साथ अनेक लंबे कथा-गीत भी संकलित हैं।

श्री राजु के स्तर के तथा श्रीराजु जैसे लोकगीत संग्रह कार्य करने वाले वरीष्ठ लोक विद् श्री मंगु रंगनाथ रावजी हैं। उन्होंने सन् 1905 ई.में 'नूरू हिन्दू स्त्रील पाटलु' (हिन्दू स्त्रियों के सौगीत) नामक शीर्षक के अंतर्गत स्त्रियों के गीतों के साथ साथ 'तुलाभारमु' नाम से कुछ यक्षगानों को (आंध्र के लोक नाट्य रूप) भी प्रकाशित किया है। सन् 1905 ई. और सन् 1950 ई. के बीच में छोटे छोटे लोकगीतों के कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं। लोकगीतों के संग्रह-कार्य में उल्लेखनीय योगदान 'आंध्र सारस्वत परिषद, हैदराबाद संस्था की और से भी हुआ है। इसी लक्ष्यपूर्ति के लिए इस संस्था की स्थापना सन् 1955 ई.में हुई थी। इस संस्था ने रामायण, महाभारत, शैवागम वेदांत आदि विषयों से संबंधित लोकगीतों को संकलन करके प्रकाशित किया है। इस के साथ ही इस संस्था ने आंध्र की स्त्रियों के द्वारा गाये जानेवाले लोकगीतों के अनेक संग्रह भी प्रकाशित किये हैं। इसी साहित्यिक संस्था की ओर से सन् 1955 ई.में. श्री कृष्णश्रीजी के संपादन में 'स्त्रील रामायणपु पाटलु' (रामकथा पर आधारित स्त्रीयों के गीत) शीर्षक से स्त्रियों के द्वारा गाये जानेवाले लंबे लोकगीतों का प्रकाशन हुआ है। इस ग्रंथ में लगभग 42 छोटी बड़ी लोक रामायण संकलित हैं। श्रीकृष्णश्रीजी के द्वारा लिखित इस ग्रंथ की भूमिका भी अत्यंत महत्व रखती है। इस भूमिका के द्वारा उन्होंने न केवल आंध्र लोकरामायणों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला है बल्कि लोक साहित्य के प्रति रुचि रखनेवाले तथा लोक साहित्य के संग्रहकार्य के प्रति प्रतिबद्ध संग्रहकर्ताओं को इस प्रकार के संग्रह कार्य करने की बलवती प्रेरणा दी है। इन से प्रेरण एवं प्रोत्साहन प्राप्त करके बाद में अनेक संग्रह कर्ताओं ने तेलुगु की लोक रामायणों के संग्रह कार्य किये हैं।

स्त्रियों के द्वारा गायेजानेवाले लोकगीतों को संग्रह करके उनका वर्गीकरण विश्लेषण करके विविध पत्र-पत्रिकाओं में उनको उचित स्थान दिलाने की चेष्टा करने वालों में श्रीकृष्णश्री के साथ साथ श्रीटेकुमल्ल कामेश्वरराव भी अग्रणी है। इन के प्रयास अप्रतिम एवं अमोघ हैं। श्रीकृष्णश्री की लोकरामायणों से संबद्ध लेख़ 'भारति', 'किन्नेरा', 'गृहलक्ष्मि' आदि तेलुगु की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उनमें 'स्त्रील कथा गेयमुलु' (स्त्रियों के कथागीत) 'स्त्रील गेय कथलु' (स्त्री कथा गेयमुलु'') स्त्रियों के कथागीत 'स्त्रील गेय कथलु' स्त्रियों की गीत-कथाएँ 'स्त्रील परमार्दिक गेयमुलु' स्त्रियों के वेदांतपरक गीत 'देशी सारस्वत विभूति' ग्रामीण साहित्य विभूति 'स्त्रील गेय कथा वाङ्मयमु' स्त्रियों के कथागीत वाङ्मय नामक शीर्षकों से प्रकाशित हुए हैं। श्री टेकुमल्ल कामेश्वर रावजी ने 'गृहलक्ष्मी', 'सौभाग्य', 'किन्नेरा' नामक पत्रिकाओं में 'स्त्रील पाटलु' (स्त्रियों के गीत) नाम से अनेक लंबे गीतों को प्रकाशन करवाया है। उन्होंने सन् 1953-55 ई. के बीच उपर्युक्त पत्रिकाओं में प्रकाशित अपने लेखों को पुस्तकाकार में 'आंध्र जानपद गेय वाङ्मय चरित्र मोदटि संपुटमु' (आंध्र लोकगीत वाङ्मय का इतिहास-पहला खंड) शीर्षक से प्रकाशित किया है। इस में राम कथा पर आधारित अनेक लोकगीत संग्रहित हैं।

लोक रामायणों पर काम करनेवाले एक और शीर्षस्थ विद्वान श्री नेदुनूरि गंगाधरमजी हैं। उन्होंने मिथकीय कथाओं पर आधारित लोकगीतों को 'पुराण साहित्यमु' नाम से अपने 'मुन्नीरु' नामक लोक साहित्य ग्रंथ में संग्रह करके प्रकाशित किया है। इस में राम कथा से संबंधित अनेक लोकगीत उपलब्ध होते हैं। श्रीहरि आदि शेषुवु जी ने भी कथागीतों को स्त्रियों के गीतों के रूप में स्वीकार किया है। मिथकीय वस्तु पर आधारित इन कथागीतों को उन्होंने फिर रामायण कथा पर आधारित, महाभारत कथा पर आधारित तथा महाभागवत कथा पर आधारित गीतों के रूप में अलग अलग वर्गीकरण किया है। लोक साहित्य के बहुमुख पारिखी विद्वान आचार्य बिरुदु राजु रामराजु ने सन् 1958 में अपने शोध प्रबंध 'तेलुगु जानपद गेय साहित्यमु' को प्रकाशित करते हुए कहा था कि श्री नेदुनूरिजी ने कथागीतात्मक 50 लोक रामायणों को संग्रह किया है।[5] उन रचनाओं के नामोल्लेख करते हुए उन्होंने कुछ रचनाओं का संक्षिप्त परिचय व विशेषताओं का विश्लेषण भी किया है।

सन् 1972 ई.में 'जानपद कला संपदा' नामक ग्रंथ में आचार्य तूमाटि दोणप्पजी ने रायलसीमा प्रदेश में विविध संदर्भों में गाये जाने वाले राम कथा पर आधारित अनेक लोक गीतों को संग्रह करके 'रायलसीमा पल्ले पाटलु - रामायणमु' (रायलसीमा प्रांत के ग्राम गीत और रामायण) नामक शोधपरक लेख को प्रकाशित किया है। इस में संग्रहित कथागीत छोटे छोटे होने पर भी रायलसीमा प्रदेश में लोकप्रिय रामकथांशों को स्पष्ट करने में अत्यंत सक्षम दिखाई पड़ते हैं। इन के बाद सन् 1982 ई.में. डॉ. जी.यस.मोहनजी ने 'स्त्रील पाटलु' - 'अनंतपुरम मंडलमु' नामक अपने शोध प्रबंध केलिए लगभग तीस कथागीतों को संग्रह किया है। उन में 'श्रीरामुल जननमु', 'एरुकल गद्धे' नामक दो रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। जो आंध्र प्रदेश के अनंतपुरम जिले में गाये जालेवाले राम कथा पर आधारित कथागीत हैं। सन् 1982 ई.में. ही श्री एल्लोराजी ने 'जानपद साहित्यमु' (लोक साहित्य) ग्रंथ के द्वारा अनेक लोकगीतों का संग्रह किया है। उस में 'राम कथामृतमु' नामक अध्याय में 'रामनाममु', 'ऊर्मिल सुषुप्ति', 'आलोचनालोचनमु', 'लक्ष्मणोदार्पुलु', 'सीतम्म वेविल्लु' नामक लंबे गीतों के साथ साथ राम कथा पर आधारित अनेक छोटे छोटे गीतों का भी संग्रह करके प्रकाशित किया है।

सन् 1983 ई.में. डॉ. रावि प्रेमलताजी ने 'तेलुगु जानपद साहित्यमु पुराणगाथलु' (तेलुगु लोक साहित्यः मियकीय गाथाएँ) नामक शोध प्रबंध के लिए खासकर आंध्र के तेलंगाना जनपद में गाये जानेवाले अनेक रामायण-गीतों को संग्रह किया है। सन् 1987 ई.में. डॉ. चिगिचेर्ला कृष्णा रेड्डीजी ने 'ग्रामीण संस्कृति (अनंतपुरम जिला जानपद गेयालु') (ग्रामीण संस्कृतिः अनंतपुरम जिले के लोकगीत) नामक ग्रंथ में प्रकाशनार्थ अनेक लोकगीतों का संग्रह किया है। इस में विशेषकर (पृ:53,56) उत्तर रामायण से संबद्ध एक लंबा लोकगीत संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक को भी उत्तर रामायण से संबंधित एक लंबा कथागीत प्राप्त हुआ है। जिसे उन्होंने सन् 1993 ई.में. प्रकाशित किया है। यह लंबा कथागीत आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिले के नंद्याल प्रांत में अत्यंत प्रचलित है।

इस प्रकार तेलुगु में अब तक प्रकाश में आयी लोकरामायण संख्या में अत्यल्प तो हैं। परन्तु ये यह सिद्ध कर देती हैं कि आंध्र में रंगनाथ रामायण, भास्कर रामायण, मोल्ल रामायण आदि शिष्ट रामायणों के समानांतर अनेक लोक रामायण

प्रचलित थी। आंध्र में इन लोक रामायणों का प्रचलन यह स्पष्ट कर देता है कि आंध्र की जनता इन लोक रामायणों से अत्यधिक निकट संबंध रखती है। इस धनिष्ट संबंध के कारण ही समयानुसार आंध्र के लोक जीवन में हुए परिवर्तन इन में परावर्तित हुए हैं। इन परिवर्तनों ने लोक रामायणों को अधिक प्रामाणिक, विश्वसनीय व जीवनानुकूल बना दिया है। इन परिवर्तनों के कारण ही शिष्ट रामायणों से भिन्न अनेक नये नये उत्तेजित करनेवाले रोचक प्रसंगों ने इन में स्थान प्राप्त कर लिया है। ये प्रसंग और इन के द्वारा व्यक्त विचार जीवनानुभव प्रसूत हैं। इसलिए वे अत्यधिक सहज व प्रामाणिक तथा हृदयस्पर्शी होते हैं। जीवन को भिन्न कोन से परखने की इन की अनोखी दृष्टि कभी कभी पांडित्य प्रतिभा से लदी रामायणों से अधिक संप्रेषणीय व विश्वसनीय लगती है। कालानुसार प्रक्षिप्त ये प्रसंग जीवन के उतार चढाव के सूचक भी हैं। साथ ही सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारणों एवं दिशाओं की ओर संकेत करनेवाले दीप स्तंभ भी हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति को समझने में ये लोक रामायण अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। भारतीय संस्कृति की संपूर्ण व समग्र पहचान इन लोक रामायणो से संभव है। अतः प्रकाशन से दूर आज भी जन हृदय में प्रचलित इन लोक रामायणों का संग्रहण-प्रकाशन कार्य भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की पुनर्रचना की दिशा में श्लाघनीय होंगे।

5. तेलुगु लोक रामायण और उनका स्वरूप

रामायण मात्र मिथकीय काव्य या राम कथा काव्य ही नहीं बल्कि वह भारतीयों के धर्म, भक्ति, श्रद्धा, आदर्श, सभ्यता व संस्कृति आदि के रूपबद्ध आदर्श राष्ट्रीय ग्रंथ है। रामायण लौकिक और अलौकिक साधना के लिए परम उपजीव्य कथा काव्य है। जिस लौकिक साधना से भारतीय अलौकिक जीवन प्राप्त करना चाहते हैं वह साधना रामायण में अतिसुलभ रूप में विवेचित है। रामायण भारतीय जीवन आदर्श का मेरुदंड है। रामायण भारतीय मूल्यों के उत्कृष्टतम मानदंड भी है। भारतीय जीवन के सुख-दुख, जय-पराजय, जीवन मूल्यों के ह्रास-विकास केलिए रामायण ही साक्षी है। भारतीयों के पौराणिक, धार्मिक और साहित्यिक साधना के श्रेष्ठ रूप रामायण में प्राप्त होते हैं। रामायण इस रूप में भारतीय जीवन में काफी महत्व रखती है। इस अप्रतिम महत्व के कारण ही रामायण भारतीय जीवन का अभिन्न अंग बन गयी है।

रामायण के द्वारा भारतीय जीवन को अच्छी तरह समझा जा सकता है। भारतीय जीवन का विकास, संघर्ष, अच्छाई-बुराई रामायण में परावर्तित होती रही हैं। इसलिए रामायण भारतीय सांस्कृतिक विकास का अकथनीय साक्ष्य ग्रंथ भी है। भारतीय संस्कृति के सभी तत्व अपने श्रेष्ठ व आदर्श रूप में रामायण में परिलक्षित होते हैं। भारतीय संस्कृति भिन्नता में एकता की अनोखी संस्कृति हैं। जीवन की भिन्नता ही इस विलक्षणता का मूल कारण है। जीवन और साहित्य का आपसी संबंध व अटूट संबंध होता है। साहित्य जीवन संघर्ष से उद्भूत बौद्धिक संचित ज्ञान है। जीवन की आधारभूत सुविधाओं की भिन्नताएँ जीवन-संघर्ष को भी भिन्न बनाती है। इसलिए साहित्य में प्रादेशिक जीवन-संघर्ष अपने प्रामाणिक रूप में व विलक्षण रूप में परावर्तित होता है। यही जीवन में सांस्कृतिक भिन्नता के रूप में दिखाई पड़ती है। वही साहित्य में विलक्षण कथानकों चित्रणों व पात्रों के सृजन के लिए

कारण भी बनता है। इसलिए साहित्य में प्रादेशिक जीवन की पूरी संस्कृति ही झलकती है। प्रादेशिक जीवन भिन्न होने के कारण ही उस पर आधारित साहित्य भी भिन्न प्रकार का हो जाता है। ये भिन्नताएँ मात्र प्रदेश सापेक्ष ही नहीं होती हैं। बल्कि काल सापेक्ष भी होती हैं। जीवन व जीवन-मूल्य काल सापेक्ष ही होते हैं। समय के साथ संघर्ष पर आधारित मूल्य बदलते रहते हैं। साहित्य भी इन बदलने वाले मूल्यों को आत्मसात करता है। अतः एक ही साहित्य में मूल्यों के ह्रास-विकास तथा जीवन के उत्थान-पतन को रेखांकित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक भिन्नताएँ काल सापेक्ष भी होती हैं।

अनेक स्तरों पर भिन्नताओं के होने के बावजूद एकता के भी सुदृढ सूत्र भारतीय जीवन व साहित्य में देखे जा सकते हैं। जैसे गुलाब का पेड़ तो एक ही है। उसका जैविक व तात्विक तत्व भी एक ही है। पर उस से निकलनेवाले फूल भिन्न रंगों के हैं। यह बात मिथकीय कथाओं का ग्रहण और संप्रेषण क्षेत्र में भी देखी जा सकती है। अनादि से भारत में अनेक मिथकीय कथाओं व साहित्यक परंपराओं का प्रचार रहा है। परन्तु भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन मिथकीय कथाओं और साहित्यिक परंपराओं का ग्रहण और संप्रेषण एक जैसा नहीं रहा है। प्रादेशिक भिन्नताओं के आलोक में ही यह हुआ है। इसलिए उन मिथकीय कथाओं में तथा साहित्यिक परंपराओं में प्रादेशिक विशेषताएँ भी आगयी। प्रादेशिक जन जीवन की समस्त विशेषताएँ तथा उनकी संस्कृतिक मौलिक धारणाएँ उन मूल मिथकीय कथाओं में प्रक्षिप्त होती गयी। इसी से भारत के विभिन्न प्रदेशों में एक ही मिथकीय कथा के विभिन्न रूप पाये जाते हैं। इसे उस प्रदेश विशेष की मौलिक देन मान लेनी चाहिए। रामायण या राम कथा इस का अपवाद नहीं है। राम कथा मूल में वाल्मीकी प्रसूत है। परन्तु प्रादेशिक भाषाओं में भिन्न कोटी की रामायण मिलती हैं। यह भी मान लेना चाहिए कि भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होने वाली अधिकांश रामायणों का मूल प्रेरणा-स्रोत वाल्मीकी रामायण ही है। प्रादेशिक भाषाओं में उपलब्ध होने वाली रामायणों की भिन्नता के लिए मुख्य कारण प्रादेशिक भिन्नता, जनजीवन का बदलाव, सभ्यता-संस्कृति, आचार-व्यवहारों की भिन्नता, जलवायु की भिन्नता, भिन्न चिंतन धाराएँ तथा कल्पना वैषम्य आदि है। तेलुगु भाषा भी इस का अपवाद नहीं है। तेलुगु भाषा प्रदेश की विभिन्न अनोखी विशेषताओं के अनुरूप ही तेलुगु में भी भिन्न

प्रकार की अनेक रामायण लिखी गयी हैं। उनकी संख्या एवं उनका परिचय देना यहाँ अनावश्यक है। परन्तु तेलुगु भाषा प्रदेश में बहु प्रचलित लोक रामायणों का परिचय देना इस विषय का मूल आशय है।

कवियों एवं पंडितों के द्वारा लिखित शिष्ट रामायणों का अध्ययनविश्लेषण, व्याख्या-विवेचन कई बार कई स्तरों पर किया गया है। किन्तु युग-युगों से लोक-कवि-गायकों के अमंद कंठों में ही सांस लेते - गूंजने वाली कलम के स्पर्श से दूर लोक रामायणों की संख्या असीम एवं अनिर्णीत है। पानी पर तैरनेवाली बर्फ की तरह इन की संख्या का सही अनुमान लगाना असंभव है। फिर भी लोक साहित्य के संग्रह कर्ताओं के साहसी तथा निष्ठा से भरे कार्यों के फलस्वरूप आज कुछ लोक रामायण अपने लिपिबद्ध रूप में उपलब्ध हो रही हैं। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इन को छोडकर और भी कई रामायण लोकगायकों के कंठों में ही वास करते हुए अजस्र बह रही है। प्रसिद्ध लोक साहित्य-विद् व चिंतक आचार्य बिरुदुराजु रामराजु दावा करते हैं कि उन्हों ने इस प्रकार के प्रकाशित 50 लोक रामायणों को एकत्र किया है।[6] उनमें से कुछ रामायणों के नाम या शीर्षक भी उन्होंने दिये हैं। जैसे कूच कोंड रामायणमु, शारद रामायणमु, श्रीमद्रामायणमु, धर्मपुरी रामायणमु, रामकथा सुधार्ववमु, मोक्षगुन्ड़ रामायणमु, सूक्ष्म रामायणमु, श्रीराम दन्डमुलु, रामायण गोब्बि पाट, श्रीराम जाविलि, अड़विशांत पेंड्लि, सेतु गोविंद नाममु आदि हैं।

मुख्यतयः तेलुगु में अब तक तीन प्रकार की लोक रामायण प्रकाश में आयी हैं। दूसरे शब्दों में अबतक तेलुगु में तीन प्रकार की लोक रामायणों का प्रकाशन ही संभव हो सका है। पहले प्रकार के अंतर्गत उपर्युक्त सभी रामायण आती हैं। जिनमें रामकथा पूर्ण रूप से वर्णित है। राम कथा के कुछ इनेगिने अंशों के आधार पर लिखी गयी रामायण दूसरे प्रकार के अंतर्गत आती हैं। जैसे रामुलवारि अलुका, श्रीरामुल उग्गुपाट, शान्ता कल्याणमु, पुत्रिकामेष्टि, कौसल्य वेविल्लु, राघव कल्याणमु, सुंदर कांड पदमु, ऋषुल आश्रममु, सुग्रीव विजयमु, कोवेलरायभारमु, अंगद रायभारमु, लक्ष्मण देवर नव्वु, ऊर्मिल देवि निद्रा, कुशलायकमु, कुशलव कुच्चल चरित्र, कुशलवकुच्चलकथा, कुशलवयुद्धमु, वेपूरि ब्रतुकम्म कुशलव पाट, कुशलव होममु, पाताल होममु, शतकंठ रामायाणमु आदि इस प्रकार के अंतर्गत

आती हैं। तीसरे प्रकार के अंतर्गत आंध्र लोगों की आत्मजा-सीता को ही आधार बनाकर लिखी गयी रामायण आती हैं। सीता वसंतमु, सीता वामन गुन्टलु, सीतम्मवारि अलुक, सीत पुट्टुक, सीता कल्याणमु, सीतनु अत्तवारिन्टिकम्पुट, सीता समर्त, शुभ गोष्टि, सीता घडिया, सीता सुरटि, सीता मुद्रिकलु, सीत आनवालु, सीत अग्निप्रवेशमु, सीत वेविल्लु आदि इसी प्रकार की कृतियाँ हैं। ये तीनों प्रकार की रामायण तेलुगु के अथाह लोक साहित्य सागर गर्भ से चुनी हुई चंद मोतियाँ हैं। और भी अनेक इस प्रकार की बहु मूल्य मोतियाँ लोक-साहित्य सागर के अनंत अंध गर्भ में अन्वेषकों की प्रतीक्षा करती होंगी।

उपर्युक्त लोक रामायणामों में रावण वध के बाद श्रीरामजी का राज्याभिषेक, सीता का वनवास, कुशलव का जन्म, श्रीराम से कुशलव का युद्ध, कुशलव का राज्याभिषेक आदि उत्तर रामायण संबंधी प्रसंगों को लेकर लिखी गयी रामायण अत्यल्प हैं। आन्ध्र में 'सीता' पात्र अत्यंत लोक प्रिय पात्र हैं। अनेक दुखों से भरा उसके जीवन में वनवास का प्रसंग बहुत महत्व का है। बगैर अपना किसी अपराध के उसे दूसरी बार वनवास झेलते देखकर जानपदों के हृदय करुणा से पिघल जाते हैं। जानपद में इस प्रकार की मान्यता प्राप्त करने के कारण, बहुत कम संख्या में प्रकाशित होने के बावजूद भी उत्तर रामायण कथा से संबद्ध प्रसंग लोक गायकों के अतिप्रिय प्रसंग माने जाते हैं। आन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना प्रांत की 'बाल संतु' जाति के लोक गायकों का परिचय देते हुए डॉ. रावि प्रेमलता जी ने इसी प्रकार का विचार प्रकट किया है। उन्हों ने लिखा है कि तेलंगाना प्रांत में इस जाति के लोग घर घर भीख माँगते लोक गीतों को गाते अपनी जीविका चलाते हैं। उन से उत्तर रामायण संबंधी गीत सुनकर श्री प्रेमलता जी लिखती हैं कि रावण वध के बाद रावण से मुक्ति प्राप्त करने पर भी सीता के दुख दूर नहीं हुए। धर्म रक्षक, प्रजा रक्षक श्रीराम एक साधारण धोबी की बातों पर विश्वास करके पतिव्रता सीताजी को दूसरी बार जंगल भेजने का प्रसंग जानपदों के भावावेग का कारण बनता है। राम कथा संबंधी गीत गाने के लिए जब मैं ने उनसे पूछा तो उन्होंने सर्वप्रथम सीता के इस दूसरी बार के वनवास से संबद्ध उत्तर रामायण को ही गाकर सुनाया है।[7]

अबतक उपलब्ध उत्तर रामायण संख्या में कम होने पर भी जनता में उनके प्रति अत्यंत प्रेम और बार बार सुनने की बलवती इच्छा दृष्टि- गोचर होती है।

उपर्युक्त रामायणों में जहाँ संपूर्ण राम कथा गायी गयी है वहाँ विधिवत् उत्तर राम कथा वर्णित हुई है। उनके अतिरिक्त अलग स्वतंत्र रूप में कुशलायकमु, कुशलव कुच्चेल कथा, कुशलवयुद्धमु, वेपूरिब्रतुकम्म कुशलव पाट, कुशलव होममु आदि उत्तर राम कथा पर ही आधारित कृतियाँ अबतक प्रकाश में आयी हैं। इन में से अधिकांश तटवर्ती आंध्र और तेलंगाना प्रांत में गाये जानेवाली हैं। रायलसीमा प्रांत के गीत अभी प्रकाश में नहीं आये हैं, ऐसा विद्वानों का विचार है। 'स्त्रील रामायणपु पाटलु' नामक ग्रंथ के लिए गीतों का संकलन करते हुए श्री कृष्ण श्री और 'जानपद कला संपदा' नामक ग्रंथ के लिए भूमिका लिखते हुए राल्लपल्लि अनंतकृष्ण शर्माजी ने इस बात का दुख प्रकट किया है।

इस प्रकार स्वतंत्र रूप में प्रकाशित हुई रामायणों के साथ कथा गीत वर्ग से अलग स्त्री या पुरुष विविध संदर्भो में गानेवाले छोटे छोटे लोकगीतों में भी राम कथा से संबंधित अनेक प्रसंग पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए सोहनी के गीत, जांतगीत, लोरी गीत, रोपन के गीत, सयानी गीत आदि इसी कोटि के अंतर्गत आते हैं। उनमें से मुख्य एवं रोचक लगनेवाले कुछ गीतों का यहाँ उल्लेख करना मै आवश्यक मानता हूँ। आचार्य तूमाटि दोणप्पाजी ने रायलसीमा प्रांत में विविध संदर्भों में गायेजानेवाले इस प्रकार के अनेक गीतों को इकट्ठा करके प्रकाशित करवाया है।

सर्वप्रथम एक जांतगीत है। संदर्भ सीता स्वयंवर का है। रामने शिव धनुष को तोड दिया है। जनक महाराज के घर में विवाह के क्षण हैं। विवाह की तैयारी में भारी भीड़ व कोलाहल है। स्त्रियाँ विवाहोपयोगी वस्तुओं की तैयारी में अत्यंत व्यस्त हैं।

मुत्याल रत्नाल मुत्तैदुलारा
इन्टिलो जेसेरु ऐ मेमि पनुले
गोधुमलु इसिरेरु गोड़ बूसेरु
पन्दिर्लु येसेरु पसुपु दन्चेरु
जनकुल सीतम्म पेंड्लि पनुलम्मा
नल्ल नल्लनि रूपु नयनालु येरुपु
वारि भाषाल तोड़ वाकिट निलिचि
भाम नडुगोच्चिन वारलेवरम्मा

4

सीता नडुगोच्चिन सिरि मन्तु लेवरु
कौसल्या तनयुले काकुच्चकुलुले
साकेत रामुल्ले शांत तम्मुल्ले
कूतुरु सन्नादि कुलमु दोड्डादि
अन्तकु सन्नोड़े अइवोद्धि रामु
सिवु विल्लु विरिसिन सिरिये वोलनिरी

(इसगीत में काम करनेवाली स्त्रियाँ एक दूसरे से प्रश्न कर रही हैं। जनक महाराज के महल में स्त्रियाँ विवाह की क्या क्या तैयारियाँ कर रही हैं? गेहू पीस रही हैं, दीवारें पोत रही हैं। तम्बू डाल कर हल्दी कूट रही हैं। काले काले और जिसकी आंखें लाल हैं। वह कौन है कि जो सीता के साथ रिश्ता तैय करने आये हैं। शायद वह कौसल्या पुत्र हैं। इक्षवाक वंशज हैं। शांता के छोटे भाई हैं। हमारी बेटी तो छोटी है। उनका कुल अति ऊँचा है। उससे भी बढकर अयोध्या के राम दुबले पतले और अतिसुंदर हैं। बताओ बाई कितना कन्या शुल्क दिया जा रहा है। शिव धनुष तोड़नेवाले श्रीराम ही कन्या शुल्क हैं।)

गावों में खास कर फुरसत के समय स्त्रियाँ या पुरुष कोलाट (एकफुट साइज की छोटी छोटी रंगीन लाटियाँ) खेलते गीत गाते हैं। इस प्रकार के गीतों में भी राम कथा के प्रसंग दिखाई पड़ते हैं। इसी प्रकार के निम्नगीत में भी राम कथा का प्रसंग आया है। निम्नगीत में रावण हनुमान संवाद है। रावण लंका के सामने अयोध्या को तुच्च ठहराना चाहता है। इसलिए हनुमान के सामने लंका की तुलना अयोध्या से करने लगता है। इस प्रसंग पर आधारित निम्न गीत अत्यंत मनोहर बन पड़ा है।

माटि माटिकि नन्नु माटिमाटिकि नन्नु
वोरोरि अंटावु येराजु बन्दुवुर वोरी
श्रीराम बन्टुन्नी माराजु सुग्रीवुलु
अंजना तनयुड़ अनुमन्न नापेरु वोरी
मी पट्नमुलोन मी पट्नमुलोन
इट्लांटि रच्चलू येन्नेन्नि गलवुर वोरी
मा पट्नमुलोन मा पट्नमुलोन

इट्लांटि रच्चलु जालाटि बंड लेर वोरी
मी पट्नमुलोन मी पट्नमुलोन
इट्लांटि मेडलु एन्नेन्नि गलवुर वोरी
मा पट्नमुलोन मा पट्नमुलोन
इट्लांटि मेड़लु बोम्मरिन्ड्लेनेर वोरी
मी पट्नमुलोन मी पट्नमुलोन
इट्लांटि वनमुलू येन्नेन्नि गलवुर वोरी
मा पट्नमुलोन मा पट्नमुलोन
इट्लांटि वनमुलु कुराकु पादुलेरा वोरी

(इस गीत में रावण-हनुमान के संवाद हैं। रावण हनुमान से प्रश्न कर रहा है कि बारबार मुझे तू तू कहकर संबोधन कर रहे हो तुम किस का नौकर हो ? हनुमान उत्तर देता है कि मै श्रीराम का नौकर हूँ। सुग्रीव हमारा राजा है। मैं अंजनी देवी का पुत्र हूँ। मेरा नाम हनुमान है। फिर रावण प्रश्न करता है कि तेरे नगर में तेरे नगर में पंच मंडप (इसे तेलुगु में 'रच्चबंड' कहा जाता है। यह वह जगह है जहाँ पँच बैठकर न्याय करते हैं) कितने हैं। हनुमान उत्तर देता है कि इस प्रकार के पंच मंडप हमारे नगर में गुसलखाने के पत्थरों (जालाटि बंड) की तरह अनेक हैं। फिर रावण प्रश्न छेडता है कि तेरे नगर में बडे बडे भवन कितने हैं ? हनुमान उत्तर देता है कि हमारे नगर में इस प्रकार के बड़े भवन बच्चों के खिलौनों के सदृश्य अनेक हैं। फिर रावण प्रश्न करता है कि तेरे नगर में इस प्रकार के सुंदर वन कितने हैं ? हनुमान उत्तर देता है कि हमारे नगर में इस प्रकार के उपवन साग-सब्जी की तरह अनेक हैं।)

'लक्ष्मण मूर्छा' से संबद्ध निम्न सोहनी-गीत गाती हुई आन्ध्र की स्त्रियाँ तन्मय होती हैं। इंद्रजित के बाण से बेहोश हुए लक्ष्मण को देखकर श्रीराम बिलख बिलख कर रो रहा है। दोनों के बीच के प्रेम व रागात्मक संबंध और बड़े भाई होने के नाते अपने उत्तर दायित्व का स्मरण करते आँसू बहानेवाले श्रीराम को देखकर जनता की आँखे भाष्पाच्छादित हुए बिना रह नहीं सकती हैं।

मूर्छिल्लिन तम्मुनि मूर्छिल्लिन तम्मुनि
मुन्दरेसुकुनि मुनिगे दुःखमुलो लक्ष्मणा
रामुलु मुनिगे दुखमुलो लक्ष्मणा
येड़मु येड़मे गानि येड़मु येड़मे गानि

येदटि केन्नडु रावु तोड़लपै कोस्तिवय्य लक्ष्मणा
वोडिलोनि कोस्तिवय्य लक्ष्मणा
एद्दु कोम्मुलवाल एद्दु कोम्मुलवाल
इद्दरुन्टिमि मनमु वोन्टिगान्न इतिनय्या
लक्ष्मणा सोंटि तिप्पलोच्चेनय्या
कूर्चिना मुत्याल कूर्चिना मुत्याल
कुच्चुलाला मनमु कूडि उन्टिमि तम्मुडा
लक्ष्मणा दागु कुन्टिवे लक्ष्मणा
याड़रा सीतन्टे येमि जेप्पुदु तम्मुडा
लक्ष्मणा येमि जेतुरा लक्ष्मणा
कोंड गर गर दिप्पि कोंड गर गर दिप्पि
कोनले दाटे से कोन्ड तल्लटिस्तादि लक्ष्मणा
तम्मुडा गुन्डि तल्ल टिस्तादि लक्ष्मणा
पगवानि बाणालु पगवानि बाणालु
पैपैन वस्ताई पलुक वेमिर तम्मुडा
लक्ष्मणा पार जूडर लक्ष्मणा
पगवाडु गादन्न पगवाडु गादन्न
मनवाड़े अनुमन्न तेस्तुन्डे संजीविनी
लक्ष्मणा तेच्चेने द्रोणाद्रिनी लक्ष्मणा।[8]

(प्रस्तुत गीत में अपने अचेत भाई लक्ष्मण को सामने रखकर श्रीराम दुःख के सागर में डूब गया है। विलाप करते हुए कह रहा है कि संकोचवश हमेशा दूर दूर रहनेवाले हे लक्ष्मण ! तुम्हारा सिर आज मेरी जांघों पर आ गया है। आज तुम मेरी गोद में आराम कर रहे हो। बैल के सींगों की तरह हम मिल जुल कर थे। हे भाई तुम आज कहाँ छिप गये हो। अयोध्या में लोग प्रश्न करेंगे कि लक्ष्मण कहाँ है? सीता कहाँ है? तो उन्हें मैं क्या जवाब दूँ। पहाडों को भी कंपा देने वाले शत्रु के बाण ऊपर गिर रहे हैं। तुम बोलते क्यों नहीं ? ओ मेरे भाई आँखे खोलकर देखो। वह शत्रु नहीं है। हमारा हनुमान है। संजीवनी पर्वत को उठाकर ला रहा है।)

इस प्रकार लंबे लंबे कथागीतों के अतिरिक्त विविध संदर्भों में गाये जानेवाले

छोटे छोटे लोक गीतों में भी रामकथा पर आधारित अनेक सुंदर व भावनोत्तेजित प्रसंगों का अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रण हुआ है। लंबे कथानक प्रस्तुत करने में असमर्थ होते हुए भी ये अपनी सहज लय व प्रवाहमयता के कारण श्रोताओं के हृदयों पर गहरी चोट करने में अत्यंत सफल होते हैं। इन गीतों की विलक्षणता यहभी है कि ये गीत राम कथा के मूल प्रसंगों पर आधारित होने के बावजूद पग पग पर इन में प्रादेशिक विशेषताएँ झलकती हैं। उदाहरण के लिए सीता विवाह के दौरान महल में काम करनेवाली स्त्रियाँ सीता के विवाह में राम के द्वारा दिये जाने वाले 'कन्याशुल्क' का उल्लेख करती हैं। यह प्रसंग शिष्ट रामायणों में मिलता नहीं है। लोक कवि गायक ने इस की कल्पना की है। स्पष्ट है कि तेलुगु में उपलब्ध होने वाली लोक रामायण अनोखी हैं। तथा शिष्ट रामायणों से एक कदम आगे बढकर जीवन की छोटी सी छोटी विलक्षणताओं को रामकथा के माध्यम से प्रतिबिंबित करती हैं। यह तथ्य यह सिद्ध करता है कि लोक साहित्य लोक जीवन का सच्चा प्रतिबिंब है।

6. लोक रामायणों में अवाल्मीकीय अंश

यह मत भेद का विषय रहा है कि लोक रामायणों का निर्माण पंडितों के द्वारा लिखित शिष्ट रामायणों के आधार पर हुआ है या शिष्ट रामायण कर्ताओं ने लोकरामायणों में प्रचलित व मार्मिक प्रसंगों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। दूसरे शब्दों में लोकरामायण शिष्ट रामायणों के आधार हैं। या शिष्ट रामायण ही लोकरामायणों के आधार हैं। जो भी हो अपनी अनुश्रुत, अनिर्णीत, अस्थायी प्रवृत्ति के कारण लोक रामायणों को ही मूल मानने का पक्ष थोड़ा कमजोर ही लगता है। तेलुगु में वाल्मीकी रामायण के समानांतर अनेक शिष्ट रामायण लिखी गयी हैं। अधिकांश विद्वान आलोचकों का विचार है कि अधिकांश तेलुगु रामायणों में लोक रामायणों के अनेक विचित्र व जनप्रचलित प्रसंगों का अनुकरण देखने को मिलता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार मार्मिक एवं जनानुकूल प्रसंग जन मध्य में प्रचलित होने के बाद ही शिष्ट रामायण कर्ताओं ने अपनी कृतियों में उनको स्थान दिया है। महत्व की बात यह है कि इन लोक धारणा-लोक विचार-लोक विश्वासों पर आधारित लोक रामायणों का काल निर्णय करना भी आसान नहीं है। इस से बढकर चिर परिवर्तन शील लोकरामायणों का कौनसा अंश या कौनसा प्रसंग कब किसने किस विश्वास के आधार पर जोड़ा है या तोड़ा है, कहना भी कष्ट साध्य है। इसलिए कौन किस का प्रेरणा स्रोत है। लोक रामायण शिष्ट रामायणों का है या शिष्ट रामायण लोक रामायणों का है, कहना कठिन है।

परन्तु एक जन धारणा सर्वत्र यह सुनायी पड़ती है कि आदि कवि वाल्मीकी है। उनके द्वारा रचित रामायण महाकाव्य ही आदि काव्य है। इसलिए इस शीर्षक के विषय पर चर्चा करना न तो विषयांतर है न ही अप्रासंगिक। युग युगों से प्रचलित शिष्ट रामायणों के प्रसंगों व कथाओं को जानपदों ने अपने विशेष संस्कार-व्यवहार, आचार-संहिता आदि पर आधारित अपने जीवन के अनुकूल बदल लिया होगा। इस में बाह्य-भौतिक जीवन की अपेक्षा उनकी मानसिक वृत्ति के अनुकूल की दिशा

में ये परिवर्तन ज्यादा हुए होंगे। क्यों कि आदमी का मन उसके समस्त कार्य-व्यवहारों को नियंत्रित एवं दिशा निर्देशन करता है। सृजनात्मक प्रक्रिया में भी भौतिक - बाह्य प्रभावों की अपेक्षा व्यक्ति के आंतरिक मन की धारणाएँ ही ज्यादा सक्रीय भाग लेती हैं। आदमी की प्रकृति और उसकी सृजनात्मक शक्ति के बारे में तेलुगु के प्रसिद्ध कवि और आलोचक आचार्य सी. नारायण रेड्डी जी के निम्न विचार इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं। उन्होंने लिखा है कि मानव की प्रकृति चमत्कारमय और आवेगबद्ध होती है। वह कुछ विचित्र प्रवृत्तियों से ओत प्रोत रहती है। इसलिए आवेग-आक्रोश युक्त चमत्कार सिद्ध विचित्र प्रवृत्तियों से आच्छादित मानवप्रकृति का प्रतिबिंब ही कविता है।[9] आचार्य नारायण रेड्डी जी ने आवेग और चमत्कार इन दोनों प्रवृत्तियों को आदमी की प्रकृति के विशिष्ट लक्षणों के रूप में स्वीकार किया है। अलिखित, अनुश्रुत लोक साहित्य में इन दोनों की प्राचुर्यता अत्यधिक दिखाई पड़ती है। नागर-पंडितों की कल्पना और लोक-कवि-गायकों की कल्पना में अंतर होने के बावजूद भी लोक गायकों की मन: प्रवृत्ति बहुत कुछ आवेग और चमत्कार से प्रभावित होने के नाते अत्यंत विचित्र लगती है। उनकी कल्पना इन विचित्र संस्कारों से प्रेरित होने के कारण ही लोक साहित्य में अनेक अनोखे, रोमांचकारी, चमत्कारी प्रसंग व भाव प्रस्फुटित होते हैं। वास्तव में ये गुण ही लोक साहित्य की आत्मा है। ईन्हीं के कारण ही लोक-साहित्य आदमी के हृदय में अंदर तक घुसकर अनुपम प्रभाव उत्पन्न करता है।

लोक गायकों ने वाल्मीकी रामायण व अन्य रामायणों से कथा-प्रसंग ग्रहण करने पर भी अपने जीवन के सुख-दुख, आदत-संस्कारों के सापेक्ष्य उनमें अनेक परिवर्तन कर दिये हैं। शिष्ट रामायणों में जीवन के उच्चतम आदर्श का प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है तो लोक गायकों के लोक रामायणों में जीवन का भोगा हुआ यथार्थ। जीवन के यथार्थ और उसके सापेक्ष्य अभिव्यक्त भावों के भंडार होने के नाते लोक-रामायण शिष्ट रामायणों की तुलना में अत्यंत सहज, सरल, अनुकरणीय, अपने और श्रोताओं को अपने सौंदर्य से आकृष्ट कर सकने की क्षमता रखती हैं। लोक रामायणों में व्याकरणिक नियमों, काव्य शास्त्र नियमों की अपेक्षा रसावेश और भावोत्तेजना को ज्यादा महत्व दिया जाता है। आवेग, उद्वेग और चमत्कार आदि की प्रमुखता ने कहीं कहीं लोक रामायणों के प्रसंगों को असाधारण और कभी कभी औचित्य से भी दूर रख दिया है। उदारता से इस प्रकार के स्थलों

को लोकगायकों की विचित्र व वैशिष्ट्य प्रवृत्ति के अंतर्गत ही मानकर उनके गीतों पर औचित्य दोष का आरोप नहीं करना चाहिए। इस प्रकार दोषारोप करना उनके प्रति और उनके साहित्य के प्रति अन्याय ही होगा। लोकगायकों की मनोवृत्ति और अन्य कारणों से उत्पन्न ये परिवर्तन किसी एक के द्वारा किये गये परिवर्तन नहीं है। कालांतर में एक से दूसरे के संक्रमण में ये परिवर्तन निष्पन्न हुए होंगे। चिरपरिवर्तनशील मानवजीवन भी इन परिवर्तनों के कारणों में एक हो सकता है। इन परिवर्तनों के कारण लोकरामायण अपने अनूठे प्रसंगों, चमत्कारी घटनाओं के बल पर शिष्ट रामायणों से अलग लगने पर भी राम कथा में समुचित संशोधन करके उसको एक नया लोकप्रिय रूप प्रदान करने में अत्यंत सक्षम हैं। तेलुगु लोकरामायणों का उल्लेख करते हुए आचार्य बिरुदुराजु रामराजु ने इसी बात की ओर संकेत किया है। उन्होंने लिखा है कि राम कथा के प्रति आंध्र जनता की बड़ी निष्ठा है। आंध्र के जनपद में सीता-राम के जीवन को बड़ी श्रद्धा के साथ उच्च आदर्श माना जाता है। इसलिए लोकगायकों ने अपनी इच्छा से जनजीवन के अनेक सामान्य प्रसंगों को भी अपने सरस चमत्कार वृत्ति में रंग कर उसमें जोड दिया है।[10]

अवाल्मीकीय अंशों से भरे उनके कल्पना-चमत्कार ने पंडितों की प्रशंसा भी प्राप्त कर ली है। इसलिए बाद के रामायणकर्ताओं ने निर्भीक होकर इन प्रसंगों को अपनी रचनाओं मे प्रक्षिप्त किया है। उदाहरण के लिए तेलुगु में रंगनाथ रामायणकर्ता से लेकर अनेक लोगों ने लोकरामायणों में प्रचलित प्रसंगों का अपनी रचनाओं में समुचित स्थान दिया है। इसलिए लोक-गायकों द्वारा प्रक्षिप्त नये नये अवाल्मीकीय परिवर्तनों ने राम कथा के पूरकतत्वों के रूप में प्रशस्ति प्राप्त की है। ये अवाल्मीक तत्व आन्ध्र के किसी एक जनपद से जुडे हुए नहीं है। भिन्न बोलियों और भिन्न प्रदेशों के होते हुए भी इन में भावना के स्तर पर बड़ी समता परिलक्षित होती है। इस प्रकार की भाव सादृश्यता किंवा भावात्मक एकता देखकर न केवल बड़ा आश्चर्य होता है बल्कि एक सुदृढ राष्ट्रीय एकता की भावना की पुष्टि हो जाती है कि भारत के सभी प्रदेशों की संस्कृतियों की मूल आत्मा एकी है। तेलुगु लोक रामायणों में उपलब्ध होनेवाले इस प्रकार के बहुमूल्य अवाल्मीकीय अंशों का विवरण निम्नांकित है।

'सीता' का पात्र लोक गायकों का अत्यंत प्रिय पात्र रहा है। इसी कारण से लोक रामायणों में सीता का चरित्र व व्यक्तित्व से जुडे अनेक नये नये आयाम

दिखाई पड़ते हैं। उन में सबसे महत्व रखनेवाली सीता के जन्म से संबद्ध घटना है। लोकरामायणों में सीता के जन्म को लेकर अनेक विचित्र धारणाएँ मिलती हैं। वाल्मीकी रामायण में चित्रित सीता श्री महालक्ष्मी के अंश से हलजोतते समय जमीन से जनक महाराज को प्राप्त हुई अयोनिजा है। लेकिन लोकरामायणों में इस प्रसंग की अनेक विचित्र कहानियाँ गढी गयी हैं। आन्ध्र के महबूबनगर जिले में प्राप्त एक लोकरामायण के अनुसार एक बार त्रिमूर्ति शिकार खेलने गये। शिकार खेलते खेलते तीनों थक गये। ब्रह्म और विष्णु दोनों जल्दी सो गये। परन्तु शिव जागकर अपने शरीर पर लगी धूल से एक प्रतिमा तैयार करके बगल में रखकर सो गये। कुछ समय के बाद नींद से जगे विष्णु शिव के बगल में निरलंकार प्रतिमा को देखकर उसे सर्व आभूषणों से सजाया। उसके बाद ब्रह्म ने उठकर अति सुंदर लगनेवाली उस प्रतिमा में प्राण डाले। इतने में विष्णु और शिव भी जाग गये। अति सुंदर लगनेवाली उस सुंदरी को देखकर तीनों उससे प्रेम करने लगे। तीनों में उसे प्राप्त करने की होड़ सी हो गयी। इस विवाद का फैसला करने वे जांबवान के पास गये। जांबवान ने फैसला सुनाया कि जिन्होंने उस प्रतिमा को तैयारकर उस में प्राण डाले हैं वे उसके माँ-बाप होंगे और जिन्होंने आभूषणों से उसे सजाया है, वह उसका पति बनेगा। इस फैसले से त्रिमूर्ति असंतुष्ट होने के कारण जांबवान ने उस सुंदरी युवती को शिशु बनाकर एक पेटी में रखकर भूदेवी को दिया। भूदेवी ने उसे सागर के जल में छोड़ दिया। वह पेटी सागर के तट पर सूर्य नमस्कार करनेवाले जनक महाराज के हाथों में पड़ी। संतान हीन जनक ने बड़े आनंद से उसे अपनाकर पाल-पोष कर बड़ा किया। इस लोक कथा गीत में ऐसा चित्रण भी मिलता है कि इस अतिसुन्दर युवती सीता को प्राप्त करने के लिए श्रीविष्णु ने राम के रूप में अवतार लिया है।

आन्ध्र के मेदक जिले में गाये जाने वाले एक और कथागीत में इससे बढकर एक अनूटे प्रसंग का उल्लेख मिलता है। उस में सीता रावण की दुहिता के रूप में चित्रित है। संतानहीन रावण संतान-प्राप्ति के लिए ब्रह्म की प्रार्थना करने पर ब्रह्म ने उसे दो खर्जूर फल दिये। रावण की पत्नी मंडोदरी ने उनपर विश्वास नहीं करते हुए खाये बगैर उन्हें बाहर फेंक दिये। स्नानगृह के पास गिरे उन फलों से कुछ समय के बाद सीता जन्म लेकर रोने लगी। स्नान करने गये रावण उसे देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। उसे अपनाते हुए जन्मकुंडली बनाने केलिए पंडितों से कहा। लेकिन पंडितों ने जन्मकुंडली के आधार पर सीता के जन्म से लंकानगर का नाश होगा समझकर उसे

सागर में फेंक देने की सलाह दी। उनकी बातें मानते हुए रावण ने सीता को सोने की पेटी में रखवाकर सागर के जल में छोड़ दिया। वह पेटी सागर के किनारे तप करने वाले जनक को मिली। संतानहीन जनक ने बडे आनंद से उसे अपनाकर पाल-पोष कर बड़ा किया। इसी प्रकार 'शांत गोविंद नाममुलु' नामक लोकरामायण में भी सीता रावण को कमल के फूल में बैठी मिल जाती है। उपर्युक्त तीनों रचनाओं में सीता सागर से प्राप्त शिशु के रूप में चित्रित है। इस प्रकार सीता के जन्म से संबंधित अनेक विलक्षण प्रसंग व कहानियाँ लोक रामायणों में प्राप्त होती हैं। ये अंश अवाल्मीकीय होते हुए भी जनपदों में अति लोक प्रिय हुए हैं।

सीता जन्म के अतिरिक्त और भी अनेक अवाल्मीकीय अंश लोकरामायणों में प्राप्त होते हैं। उन में सीता-राम के विवाह से संबंधित सीता स्वयंवर की घटना, मंथरा का राम के द्वारा घायल होना, राम रावण के युद्ध प्रसंग में गिलहरी की कहानी, सुलोचना की कहानी, काल नेमि का इतिवृत्त, मैरावण की कथा, लक्ष्मणजी की हँसी (लक्ष्मण देवर नव्वु), रावण संहार के बाद शूर्पनखा द्वारा राम से बदला लेना आदि अत्यंत उल्लेखनीय प्रसंग हैं। स्थल और संदर्भ को देखते हुए इन सभी प्रसंगों की चर्चा यहाँ अनावश्यक ही लगती है। अंतिम प्रसंग जो उत्तर रामायण से संबंध रखने के कारण और अध्ययन विश्लेषण का मूल प्रातिपाद्य उत्तर रामायण होने के कारण उस की चर्चा करना अनिवार्य हो जाता है।

लोक गायकों की कार्य-कारण की शक्ति व औचित्य सौंदर्य से पंडितों को अचंभित करनेवाला एक अंश लोक उत्तर रामायण में दिखाई पड़ता है। वह है रावण संहार के बाद शूर्पनखा के पुनरागमन की कहानी। शिष्ट रामायणों में सीतापहरण के बाद फिर कहीं शूर्पनखा सक्रीय पात्र के रूप में नहीं उभरती है। परन्तु लोक रामायणों के उत्तरामायण प्रसंग में फिर शूर्पनखा का उल्लेख पाया जाता है। उस में अपने मान अपमान के बाद राम के प्रति जो ईर्ष्या-द्वेष और प्रतिशोध की भावना राम रावण युद्ध में भाई और पुत्रों को खोने के बाद दुबारा भड़क उठती है। उस की प्रतिशोध की ज्वाला दूसरी बार भी सीता-राम के प्रसन्नमय दांपत्यजीवन को जलाकर राख बना देती है।

वाल्मीकी रामायण में राम के राज्याभिषेक के बाद सीता-राम के शांत व आनंदमय दाम्पत्य जीवन एक धोबी की बातों के कारण टूट जाता है। धोबी की बातों को मान्यता देते हुए गर्भवती सीता को अकरूण राम परित्याग करके पुन:

जंगल भेज देता है। सीता वाल्मीकी आश्रम में लव-कुशों का जन्म देती है। वाल्मीकी गुरु से लवकुश शिक्षा प्राप्त करते हैं। राम कनक सीता की सहायता से अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करता है। यज्ञ के घोडे को ब्राह्मण वेषधारी लवकुश पकड़ते हैं। लव-कुशों के साथ युद्ध में राम की पराजय होती है। इसे देखकर सीता भूप्रवेश करती है। राम लव-कुशों को राज्याधिकार सौंप कर स्वर्ग लौटता है। इस कथा में मुख्यतया मीता के द्वारा दूसरी बार वनवास भोगने का कारण धोबी की बातों के रूप में चित्रित हुआ है। लेकिन लोकरामायणों के गायकों ने इस में औचित्य दोष को देखा है। उनको यह अयथार्थ एवं अविश्वसनीय लगा कि क्या राम जैसे राजा एक साधारण धोबी की बातों पर अपनी धर्म पत्नी को जंगल भेज देगा। इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओं में एक अतिमनोहर प्रसंग की कल्पना करके सीता वनवास के लिए एक सुदृढ आधार प्रस्तुत किया है। लोक उत्तर रामायण में प्राप्त होने वाला शूर्पणखा का प्रसंग इसी कल्पना चमत्कार किंवा सुनियोजित अभिव्यक्ति का परिणाम है। लगभग सभी तेलुगु की लोकरामायणों में यह प्रसंग दिखाई पड़ता है। यह मेदकजिले में 'बालसंतु' जाति के लोगों के द्वारा गायेजाने वाले कथागीत में ही नहीं, वेपूरि ब्रतुकम्म कुशलवपाट, कुशलायकमु, कुशलव कुच्चल कथा और कर्नूल जिले के नंद्याल में गाये जानेवाले उत्तर रामायण (इस पुस्तक के परिशिष्ट में संग्रहीत) आदि में भी यह प्रसंग स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

लोकरामायणों के कवि-गायकों ने धोबी के स्थान पर कामरूपी शूर्पणखा से निर्मित माया चित्र को सीता वनवास के सुदृढ आधार के रूप में माना है। रामकथा में शूर्पणखा अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। राम-रावण युद्ध का अगर मूल कारण सीता को मान लेतो सीतापहरण के लिए शूर्पणखा का पराभव ही मूल कारण है। गमकथा में इतना महत्व रखनेवाली शूर्पणखा शिष्ट रामायणों में सीतापहरण के बाद अचानक अदृश्य हो जाती है। फिर कभी सामने नहीं आती है। लोक गायकों ने इस शूर्पणखा को सीता-राम के आनंदमय दाम्पत्य जीवन में दूसरी बार भी विघ्न-बाधाएँ पैदा करनेवाली नारी के रूप में अतिसुंदर ढंग से उपयोग किया है। रावण संहार के बाद अयोध्या में राज-सुख भोगनेवाले राम को देखकर शूर्पणखा के हृदय में द्वेष प्रज्वलित हो उठता है। प्रतिशोध की ज्वाला उस में भभक उठती है। 'कुशलवकुच्चल कथा' में यह प्रसंग अत्यंत सुंदर एवं रोचक ढंग से वर्णित है।

नल्लवारम्मुलु तेल्ल वारम्मुलु
पच्च देहम्मुलु बाहुलु मीरा।
वेंडि कणतम्मुलु वेसिरिवारिकि
बंगारपु गोलुसुलु वेसिरिगा
अंगद हनुमंता सुग्रीवुलु
जांबवंत विभीषणु मेदलुगा
नीलज पिंगलुलु मोदलगुनु
आडुदमु तोडुत कदिलेनु रामुडु
आडुदमु कोडुदमु कडुद मनुचु
आट्लाडिरा वनमुनलोन
चुप्पनाति तापक ताचूचे
दुःखन्चेनु तन चित्तमुलोन
मगवानि गानैति पगलु साधिन्चगनु
आड़दानिनै यज्ञानि नैति
एमि सेतुननि येड्वग दोड़गे
दन्ड़ कमन्डलमुलु सकलमु दाल्चि
कावि वस्त्रमुलु गट्टेनु मेना ।।[11]

(प्रस्तुत गीत में राजाराम अपने सभी साथियों के साथ शिकार खेलने वन चले। उनके साथ काले गोरे सभी प्रकार के रंगवाले विविध आभूषणों से सुशोभित लक्ष्मण, हनुमान, अंगद, सुग्रीव, नीलज आदि सभी थे। वन में शिकार खेलते आनंदमय राम को देख कर शूर्पणखा को बहुत बुरा लगा। वह चिंता करने लगती है कि अगर वह पुरुष होती तो वह राम से बदला लेती। स्त्री होने के नाते वह कुछ भी नहीं कर पा रही है। उसने निर्णय किया कि यति वेश धारण करके सीता-राम के दांपत्य जीवन को वह भग्न करेगी। सन्यासिन के वेश में कमंडल, दंड, काषाई वस्त्र आदि पहन कर वह राम के पास गयी।

इस प्रकार शूर्पणखा अपने वेश बदलकर एक यति के वेश में अपने भाई और पुत्रों के हत्यारे राम से प्रतिशोध लेने अयोध्या पहुँचती है। कुछ लोकरामायणों में शूर्पणखा यति के वेश में नहीं अति सुंदर युवति के रूप में भी चित्रित है। शूर्पणखा की माया से अनभिज्ञ राम उसे सीता के पास भेज देता है। सीता के साथ रहते हुए

वह अपनी माया एवं अपने कार्य-व्यवहारों से सीता की प्रशंसा को प्राप्त करती है। सीता के अति निकट पहुँचती है। अत्यंत चालाकी से सीता के मुँह से संपूर्ण राम कथा सुनती है। इससे भी बढकर एक दिन राम की अनुपस्थिति में वह रावण की तस्वीर खींचने में सीता को विवश करती है। सीता रावण के पैर के अंगूठे मात्र का चित्र ही खींच पाती है। जिसे उसने रावण के यहाँ रहते समय देखा था।

रावण पटमु व्रासि इच्चिते
ब्रतुकुदुने नीलोकमुलोनु
रावणुडेक्कड़े पटमु एक्कडे
व्रायुट एक्कड़ जेप्पवे यनेनु
अत्तलु आड़बिड्डलु उन्डग
पटमैते जानकि व्रायदुग
पटमु व्रायक पट्नमु कदलनु
अनुचु पलिकेनु आ यति तानु
अंतलोनु राघवुलु तमरप्पुडु
प्रयाण भेरि मेटटु वेइन्चे
भेरीरवमुनु भोरुन विनुचु
बेदरुचु शांत इट्लनि पलिके
रामु चित्त मेरीति उन्नदो
व्रायवे जानकी पटमनि पलिके
अप्पुडु जानकी इट्लनी पलिके
पदि नेललनु चेरनुन्टिनि गानि
पाप कर्मुनि कन्नुल चूड़
जनकुनिगा भाविस्तिनि नेनु
अंगुष्टमोक्कटि येरुगुदुनु
अंत मात्रमें व्रायवे यनेनु
अंगुष्टमु जानकि ताव्रासेनु
आमीदट यति अन्ता व्रासे
काल्लु, व्रेल्लु, पिरुदुलु, पिक्कलु
आ भागमुलन्नियु व्रासे

नी रूपु नलुपु तेलुपे
वेन्नेलु पेरुलु पेरलन्दुको नि
चक्कग दानि वज्रमुलु चेक्किकन्चेनु दान्नि
वैढूर्यमु पोदिगिन्चेनु दान्नि
व्रासेनु पटमु रम्यमुतो
परुगुन वच्चेनु पटमु पट्टुकोनि
चनुदेन्चेनु ब्रह्म सन्निधि कप्पुडु
अन्न चच्चि आरु नेललायेनु
नाटिनुन्डि अन्ननु तागाननु
अन्न मारुगा चूचुकोन्दुनु
पटमुन कायुवुपोयुमनियेनु
पटमुकु नायुस्सु ब्रह्म पोसेनु
परुगुन वच्चेन् पटमु पट्टुकोनि[12]

सीता के द्वारा बनाये गये अधूरे चित्र को शूर्पणखा पूरा कर लेती है। फिर चित्र लेकर ब्रह्म के पास दौड़ कर उन से विनति करने लगती है कि भाई पुत्रादि को खोकर कई दिन हो गये हैं। अब उनका कोई सहारा नहीं है। कम से कम चित्र देखकर चित्त को शांत करने रावण के चित्र में प्राण डालदें। ब्रह्म चित्र में प्राण डालते हैं। फिर वह चित्र पकड़ कर अयोध्या दौड़ कर आती है। अयोध्या में चुपछाप उसे सीता के महल में छोड़ देती है। रावण चित्र बारबार सीता को सताने लगता है कि वह उसके साथ लंका आवे। सीता रावण के चित्र की इस बाधा से मुक्ति प्राप्त करने के लिए शांता की सहायता से उसे आग में डलवाती है और कुए में डुबाती है। लेकिन मायाचित्र होने के कारण वह बार बार सजीव होता है। आखिर राम का नाम लेकर उसे सीता के पलंग के नीचे रखा जाता है। रात को जब राम सीता से मिलने आता है तो पलंग के नीचे से मायाचित्र ऊपर उठकर राम को जमीन पर गिरा देता है। इस माया चित्र को देखकर सीता के चरित्र पर शंका करके राम उसे दुबारा जंगल में भेजने का कठोर निर्णय करता है।

मेदक जिले में प्राप्त कथा गीत में यहाँ थोड़ा परिवर्तन दिखाई पड़ता है। ब्रह्म से चित्र में प्राण डलवाने के बाद शूर्पणखा स्वयं उसे सीता की आँखों से छिपाकर उसके पलंग के नीचे रखती है। इसमें रावण का चित्र सीता को नहीं सताता

है। रात को जब राम उस पलंग पर सोने लगता है तो वह उछलकर उसके सामने प्रकट होता है। उसे देखकर राम सीता के चरित्र पर शंका करके उसे जंगल ले जाकर वध करने की आज्ञा देता है। इस पुस्तक के परिशिष्ट में संग्रहित उत्तर रामायण में भी चित्रपट का प्रसंग दिखाई पड़ता है। उसे सीता स्वयं राम की आँखों से दूर रखने केलिए गुसलखाने में छिपाती है। वहाँ वह राम के सामने प्रकट होता है। इस प्रकार आंध्र के सभी जनपदों में प्राप्त होनेवाला यह अवाल्मीक अंश वाल्मीकी रामायण के प्रसंग से बेहतर कार्य-करण को सिद्ध करता है। सीता परित्याग के लिए रामकथा से किसी भी रूप में संबंध नहीं रखनेवाले धोबी की बातों की अपेक्षा शूर्पणखा, शांता आदि कारण हैं कहना अत्यंत समीचीन लगता है। यह लोकगायकों की कार्य कारण की शक्ति व औचित्य के प्रति उनकी सर्तकता का एक मर्म स्पर्शी उदाहरण है।

इस प्रकार अवल्मीक परिवर्तनों के लिए मुख्य रूप से लोक-कवि-गायकों की मनोवृत्ति, अनुभूति सत्य पर आधारित उनकी जीवन शैली आदि जिम्मेदार हैं। इन में से अधिकाँश उनके जीवनानुभवों से निस्पन्न अमोघ कल्पनाएँ हैं। साधारण से साधरण प्रसंग का भी वे बहुत चमत्कारी ढंग से उपयोग करते हैं। इस स्तर के एक प्रसंग का यहाँ उल्लेख करना असंगत न होगा। गली में कई प्रकार के खेल (जैसे गेंद, लट्टु आदि) खेलते हुए बच्चे राहगिरों को सताने के दृश्य आंध्र में ही नहीं सर्वत्र सर्व साधरण है। गलियों में बच्चों के द्वारा घायल लोग उन से झगड़ा करके उन के प्रति द्वेष पालने के संदर्भ भी कई दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार की आम घटना से लोक-कवि-गायकों ने फाइदा उठाते हुए अपनी रचनाओं में उनका सफल उपयोग किया है। सीता से विवाह रचकर राज्याभिषेक के लिए तैयार बैठे राम को लेकर मंथरा अकारण कैकेई से चुगलखोरी करती है। मंथरा का इस अकारण व्यवहार के कारण रामायण में महत्वपूर्ण मोड़ आता है। आखिर वही राम के वनवास का बलवती कारण बनता है। इतना महत्व रखनेवाला राम के प्रति मंथरा का व्यवहार अकारण है मानना लोक-कवि-गायकों को उपयुक्त नहीं लगा। इसलिए वे बचपन में राम से लट्टू खिलाते हैं। दस वर्ष की उम्र में राम एक बार लट्टू खेलते समय लट्टू जाकर मंथरा के पांव में लगा। जिससे उसकी अंगुली में चोट आयी। पास में ही खेलनेवाले भरतने अपने वस्त्र से पट्टी बांधकर मंथरा को रक्त प्रवाह से बचाया। तब से मंथरा के मन में राम के प्रति द्वेष व भरत के प्रति प्रेमजाग गया।[13] प्रसंग छोटा व साधारण लगने पर भी इस का लोक गायकों ने कितना सटीक और सफल ढंग से उपयोग

किया है, देखकर बड़ा विस्मय होता है।

लोकगायकों के इन अवाल्मीक अंशों के लिए उनके मानसिक स्वभाव व संस्कार भी काफी सीमा तक उत्तरदायी हैं। लोक-कवि-गायक अशिक्षित एवं गँवारू होने पर भी अपनी भावनाओं को सहज रूप से व्यक्त करने में पंडितों से किसी भी रूप में कम नहीं हैं। अन्य देवताओं की तरह हनुमान भी उनके इष्ट देव हैं। लेकिन वे हनुमान को बंदर प्रवृत्ति से निरपेक्ष देखने में असमर्थ हैं। कम से कम बंदर संस्कार उन पर आरोपित करके व्यंग्य-विनोद प्राप्त किये बिना वे संतुष्ट नहीं हो पाते हैं। उनकी भक्ति सहज एवं सायास निष्पन्न प्रेमामृतधारा है। 'लक्ष्मण देवर नव्वु' नामक रचना में इस प्रकार का एक मार्मिक प्रसंग दिखाई पड़ता है। अयोध्या में राम, लक्ष्मण, भरत-शतृघ्न आदि के विवाहोपरांत एक बड़ी दावत का आयोजन किया गया। अत्यंत आनंदोत्सव के साथ सभी ने उसमें भाग लिया। लेकिन सभी हनुमान को भूल गये। अभिमानधनी हनुमान दूर से ही यह सबकुछ देखता रहा। रामने भी अपने भाई और मित्रों के साथ खाते हनुमान की ओर ध्यान नहीं दिया। यह जानकर हनुमान अपने गुस्से को अंदर ही दबाता रहा। काफी समय के बाद हनुमान के धीरे धीरे वहाँ पहुंचने पर राम को अपनी गलती का अहसास हुआ। अपनी गलती को छिपाने के लिए राम उसे 'उत्तम पुरुष' के संबोधन से पुकार कर बहाना बनाता है कि उसे अपना समझ कर भोजन करने विशेष निमंत्रण नहीं दिया। हनुमान के गुस्से को शांत करने के लिए राम निम्न शब्दों में बहाना बनाता है।

इन्टि वाडवु गनुक ऊरूकुन्टिनि
पोत्तुन गूर्चोम्मि उत्तमपुरुष
नीवुन्डग गदा तम्मुल पंक्ति
भुजिइंप गलिगितिनि हनुमन्न विनुमा
पोत्तुन गूर्चोम्मि उत्तम पुरुषा

'घर का आदमी' कहकर अपनी गलती को छिपाने बहाने बनानेवाले राम को देखकर हनुमान का गुस्सा कम नहीं हुआ। अपने स्वभाव के अनुसार वह राम और उनके साथ बैठे परिजनों पर व्यंग्य बाण चलाता है। वह राम पर जितना भी गुस्सा क्यों न करे राम प्रसाद को ठुकरानेवाला राम भक्त नहीं हो सकता। इसलिए सबके साथ फिर भोजन करने तैयार होता है। लेकिन अपने स्वभाव के अनुकूल थाली में भोजन सामग्री परोसकर पेड़ पर चढ जाता है। वहाँ से अन्न को गें द

बनाकर नीचे बैठे लोगों पर गिराने लगता है।

सर्वेशु भोजनम वारागजूचि
मुन्दरा पल्लेरमु एत्तुकोनिपोये
ताबोई हनुमन्न अविसि चेट्टेक्के

पेड़ से अन्न गिराकर हनुमान अपने गुस्से को शांत करता है। तब राम संयम भरतते हुए पेड़ के नीचे खड़े होकर हाथ फसार कर प्रेम से हनुमान को बुलाता है। हनुमान पेड़ से कूदकर तोते की तरह उनके हाथ पर बैठ जाता है। उसे नीचे उतार कर राम अपने गले से मोतियों की माला निकालकर पहनाता है। राम से माला प्राप्त करने पर पहले की तरह वह फिर लोक-कवि-गायकों के इष्ट देव बन जाता है। उस समय उसके क्रिया कलाप, व्यवहार आदि एक देवता के रूप में नहीं एक साधारण बंदर की तरह ही लगते हैं। जानपद उसे उसी रूप में देखकर ही अपनी श्रद्धा-भक्ति व्यक्त करते हैं। यह प्रसंग उनकी सरल मनोवृत्ति, व स्वभाव का एक मार्मिक उदाहरण बनता है। इस प्रकार लोक रामायणों में लोक-कवि-गायकों की मनोवृत्ति, स्वभाव-संस्कार, आदतों से परिचालित अनेक अवाल्मीकीय अंश दिखाई पड़ते हैं। ये न केवल उनकी प्रभावात्मकता को बढाते हैं बल्कि उसे एक नया सृजनात्मक रूप ही प्रदान करते हैं।

7. लोक साहित्य में उत्तररामायण की कथा

सीता लोक कवि गायकों की परमप्रिय माँ है। सीता के जीवनचरित का गायन इसलिए उनके लिए बड़े उत्तेजक और मन को अह्लाद पहुँचानेवाला है। उस माई के गायन में उनका सुध बुध खोकर तल्लीन होना सर्व साधारण है। बगैर अपने किसी अपराध के दो बार दुष्कर वनवास की सजा भोगनेवाली सीता का जीवन उनके लिए उच्च आदर्श और उनकी रचनाओं की प्रिय वस्तु बनी हैं। पहली बार कैकेई के कारण उन के वनवास जीवन के अति कटु अनुभव की अपेक्षा दूसरी बार अपने पति के द्वारा शील-चरित्र के लाँछन से संप्राप्त वनवास जीवन का अनुभव उनके लिए और भी असहनीय हैं। जंगल में गर्भवती सीता के निस्सहाय जीवन के दुखों का गायन करते हुए लोक-कवि-गायकों की आँखों से अनायास ही आँसू टपकने लगते हैं। इसलिए दूसरी बार के इस वनवास जीवन ने जानपदों के हृदयों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इसलिए राम कथा से संबद्ध लोकगीत गानेवाले लोकगायक सर्व प्रथम 'सीता' का ही स्मरण करना किंवा सीता से संबद्ध लोकगीतों को अत्यंत कलात्मक व मार्मिक ढंग से गाना जनपदों में हम देखते हैं। अपने आत्मीय जनों से दूर अकेली साधनहीन गर्भवती सीता की निस्सहायता कठोर हृदयवालों को भी द्रवीभूत करती है। निस्सहाय सीता अपनी साधन हीनता पर रोती हुई निर्जन जंगल में बच्चे का जन्म देने का निम्न दृश्य हृदय स्पर्शी बन पड़ा है।

टेकु टाकुलु तेन्पेनम्मा
कोड्डुकुनु पन्ड बेट्टिन्दी
निम्मल्लु कोट्टिन्दी-नीड़ल्लु वेसिन्दी
वट्टिमामिन्ड्लु कोट्टिन्दि
कोड्डुकुकु उय्याल कट्टिन्दि
पलगुल्ल तोटि बोड्डु कोसिन्दी
केवुमनि कोड्डुकु केकलु पेट्टे

एत्तुकुनेटन्दुकु अय्यलु लेरू
एमि चेदुना कोडुका
अरन्डमुन नन्निडिसि पेट्टि पोइरि
अनि एकमैन दुखमुतीय बट्टे[14]

इलिलिए सीता की निस्सहायता, निरीहता, निष्कपटता, सहनशीलता का उद्गीत गानेवाली उत्तर रामायण को ही लोक-कविगायकों ने अपने लोकगीतों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। संपूर्ण व समग्र राम-कथा को प्रस्तुत करनेवाली लोकरामायणों के अतिरिक्त तेलुगु में उत्तररामायण की कथा को स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत करनेवाली अनेक रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। कागज कलम के स्पर्श से दूर और भी कई रचनाएँ आन्ध्र की जनता में जीवंत हैं। उत्तररामायण कथा पर आधारित स्वतंत्र रचनाओं में कुशलायकमु, कुशलव कुच्चल चरित्र, कुशलव कुच्चल कथा, कुशलवयुद्धमु, वेपूरि ब्रतुकम्म कुशलव पाट, कुशलव होममु आदि अबतक अत्यधिक प्रचलित हुई है। इन सभी में उत्तररामायण की कथा ही अति सुंदर ढंग से चित्रित है। इनके अतिरिक्त जानपद विविध संदर्भो में गानेवाले सोहनी के गीत, जांत गीत, रोपन के गीत आदि में भी उत्तर रामायण के अंश पायेजाते हैं। ये लघु गीत होने पर भी नावक के तीर के समान हैं। श्रोताओं के हृदयों तक घुस जाने की असीम क्षमता इन में पायी जाती है। स्वतंत्र काव्यों के रूप में उपलब्ध कुशलव कथा, कुशलवुल तोट्टे, कुशलवुल युद्धमु रचनाओं को श्रीकृष्ण श्रीजी ने 'स्त्रील रामायणमु पाटलु' नामक ग्रंथ में संग्रहीत किया है। अन्य रचनाओं को अलग अलग संग्रहकर्ताओं ने एकत्र किया है।

राम के राज्याभिषेक के बाद एक धोबी के वचनों को सुनकर राम के द्वारा सीता का परित्याग, गर्भवती सीता का वनवास, कुशलव का जन्म, वाल्मीकी के पास उनकी शिक्षा-दीक्षा, राम के द्वारा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन, लवकुशों का युद्ध, सीता का भूप्रवेश आदि मुख्य प्रसंगों से भरी उत्तर रामायण की कथा का मूल आधार वाल्मीकी रामायण है। लेकिन लोक रामायणों की तरह उत्तर रामायण कथा में भी लोक कवि गायकों ने अपने स्वभाव व संस्कारों के अनुरूप अनेक अवाल्मीक अंशों को जोड़ कर उसे एक नया रूप व रमणीय काव्य बनाने का भरसक प्रयास किया है। अबतक प्राप्त उत्तर रामायण संबंधी कुछ मुख्य स्वतंत्र कृतियों का संक्षिप्त परिचय निम्नांकित है।

'कुशलव कुच्चलकथा' रचना का आरंभ राम के जन्म से ही होता है। इस में राम का बचपन, शिक्षा-दीक्षा, सीता के साथ विवाह, वनवास, रावण का संहार, राज्याभिषेक आदि मुख्य प्रसंग बहुत संक्षेप में चित्रित हुए हैं। राज्याभिषेक के बाद की कहानी विस्तार के साथ वर्णित हुई है। वाल्मीकी रामायण में धोबी की बातें सीता परित्याग के कारण बनी हैं तो इस में शूर्पणखा की वजह से गर्भवती सीता को वनवास करना पडता है 'लोकरामायणों में अवल्मीक अंश' शीर्षक के अंतर्गत विस्तार के साथ इस प्रसंग की चर्चा की गयी है। दयाशून्य राम गर्भवती सीता का जंगल में वध करने की आज्ञा देता है। लक्ष्मण के द्वारा जंगल में सीता पर बार बार तलवार चलाने पर भी कभी वह फूल बन जाती है तो कभी हार। आखिर लक्ष्मण उसे वाल्मीकी आश्रम में छोड़ देता है। सीता के साथ अन्य बहु भी गर्भवती बनती हैं। अयोध्या में वाल्मीकी आश्रम से आगत स्त्रियों को पहचान कर लक्ष्मण उनकी बड़ी मर्यादा करता है। अन्य बहुओं की तरह एक शुभ दिन सीता भी लव का जन्म देती है। वाल्मीकी आश्रम की स्त्रियाँ अत्यंत वैभव के साथ सीता की प्रसूति करती हैं। लवणासुर के संहार हेतु निकले भरत उस समय वाल्मीकी आश्रम के दर्शन करता है। यह जानकर अति प्रसन्न होता है कि सीता जीवित है और एक बेटे की मा बनी है। वह आश्रमवासी सभी को पुरस्कृत करता है। निम्न पंक्तियों में इसी प्रसंग का अतिसुंदर ढंग से चित्रण किया गया है -

लवणासुरुनि चंप बोवुचु
चनुदेन्चेनु भरतुडु आ रात्रि
गुस गुस पोयेटि कांतल नेल्ला
जाल कररांता वेन्टना जूचे
निर्गान्तपडि इट्लनि पलिके
एंत वाडुगा तम्मुडुनेडु
येमनवच्चुनु तम्मुन्नइना
चंपा लेदुगा श्री लक्षमणुडु
दाचिवच्चेनु श्री लक्षमणुडु
मर्ममु चेप्पेनु माकन्दरिकि
चेतुलोनुन्ना चेतिरुमालु
सूर कत्ति चन्दमु पोगुलनु

जाल कट्टलावेन्ट वेसि
पोलुपुग दर्भलु बोड्डु पइनुन्चिरि
पूबोणुलु बोड्डु वोपुगा कोसिरि
मदिपुडितिमि मीतन्डूप्पडु
बंगारपु चेटलु जेइन्चे
अनुंचु पुणुकुलु चेट्लोबोसि
पट्टु चीरलु पक्ककु परचि
पवलिंच बेट्टिरि बालुन्नि

इस गीत के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि सीता के जीवित रहने की सूचना भरत यहाँ पर पहली बार प्राप्त कर रहा है। वह अति प्रसन्न होकर आश्रम की स्त्रियों को पुरस्कृत करके अयोध्या लौटता है। अयोध्या में राम को छोड़कर अन्य सभी को यह शुभ समाचार देता है। इस में सीता अकेले लवराज का ही जन्म देती है। जिससे यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि कुश राज कहाँ से आया। अन्य लोक कवियों के द्वारा लिखित उत्तर रामायणों में जनक महाराज अथवा वाल्मीकी के द्वारा लवराज की सृष्टि होती है। जब कि इस में आश्रमवासियों के द्वारा लवराज का जन्म होता है।

अन्तलोनु ऋषि पल्ले लोपल
जानकि सुतुड्डु पेरुगुतु वुन्डे
पुत्रुनि तोट्टेनु पुव्वल बन्तुलु
तेच्चि गट्टेदननि जानकि तालेचे
कनकपु तोट्टिलो पुत्रुनि चूचि
कनिपेट्टन्डि वनमुलार
जानकि कदिलेनु चेलिकत्तेलतो
पाल्लुच्चरिन्चेनु जानकि कपुड्डु
अच्चटि पुत्रुड्डु आकलि गोनेनु
इच्चटि कि तानेन्दुकु वच्चितिनो
अन्दन्द नड़वग नन्देलु वेलयग
सुन्दरिजानकि पुत्रुनि कड़कु
सुदति तन पुत्रुनि चंकनु बेट्टुकोनि
जानकि कदलेनु चेलिकत्तेलतो

अच्चट मुनुलु जपमुलु चालिन्चुक
जानकि पुत्रुड्डु तोट्टेनुलेड्डु
जेरिजाणल शपिन्चि पोननुचु
भयमुतोचेनु मुनुलन्दरिकि
कुश दर्भकु जीवमुलु पोसिरि
कुशड़नि बालुनि नाममु नुन्चिरि
पवलिंप बेट्टिरि बालुनि यपुड्डु
पारिजातपु बन्तुलु बट्टुक
जानकि वच्चेनु चेलिकत्तेलतो
तोड़नु पुत्रुड्डु तोट्टिन पुत्रुड्डु
इ्दियेमनने जानकि देवि
वेलदि इद्दरु पुत्रुले नीकु
येलग राज्यमु लेले रम्मा
नीकु मुन्दु की अधरवे तल्लि
अयोध्य पट्टमुनेलेदरु
आ पलुकुलु विनि जानकप्पुड्डु
आनंद मायेनु जानकि मनुसु
चाल वेडुक पोन्दुतुनुन्डे

अर्थात् लव के जन्म के बाद सीता एक दिन उसके झूले को फूलों से सजाने के उद्देश्य से उसे साथ लेकर फूल चुनने जंगल में गयी। तपसे निवृत्त आश्रमवासी-मुनिगणने झूले को खाली पाकर सीता के कटु वचनों से बचने के लिए घास के तिनके में प्राण डालकर एक बच्चे की सृष्टि की। घास के तिनके से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम कुश राज रखा गया। फूल चुन कर लौटी सीता ने झूले में दूसरे बच्चे को देखकर आश्चर्य प्रकट किया। आश्रमवासियों ने अपनी गलती को पहचान कर दोनों बच्चों को वरदान दिये कि वे भविष्य में अयोध्या के सम्राट बनेंगे। जिस से सीता प्रसन्न हो गयी।

इस प्रकार कुशराज के जन्म के बाद दोनों बच्चे वाल्मीकी आश्रम में पलते रहे। आश्रम के नियमों के अनुसार भिक्षाटन करनेवाले पुत्रों को देखकर सीता दुखी होती है। दुखी सीता को देखकर लवकुश दोनों युद्ध करने तलवार उठाते हैं। इस

कोलाहल को देखकर लवकुश दोनों से आश्रमवासी सीता की पूर्वकहानी सुनने की इच्छा प्रकट करते हैं। सीता अपने जीवन की संपूर्ण कथा उन्हें सुनाती है। जनक, दशरथ इत्यादि को आश्रमवासी दोष देने लगते हैं। सीता की बातों को सुनकर लवकुश उसे राम से पुन: मिलाने की शपथ लेकर चले जाते हैं। बाद के कुशलव युद्ध का प्रसंग इस लोक रामायण में नहीं है।

'कुशलवुलतोट्टे' अड़तीस पंक्तियों का लघुगीत है। इस में सीता अपने दोनों बच्चों को झूले (तोट्टि) में डालकर उन्हें शांत करने लोरी गाती है। उस लोरी में उन्हे दादा, पिता, चाचा आदि खिलौने लाने का बहाना बनाती है।

'कुशलवुल युद्धमु' एक लंबा कथागीत है। किसी अज्ञात लोक-कवि-गायक से लिखा गया है। इसमें अनेक अवाल्मीकीय अंश अत्यंत विलक्षण ढंग से चित्रित दिखाई पडते हैं। राम के स्वप्न प्रसंग से इस कथा गीत का आरंभ होता है। श्रीराम स्वप्न में सीता लवकुश को देखता है। स्वप्न में कुशलव अकारण ही सीता का परित्याग करनेवाले राम से प्रश्न करते हैं।

रत्न माणिक्यमुल मेडलोपलनु
इंद्र नीलम्मुलु इंपुतो मेरया
इंद्र नीला वज्र माणिक्यमुलु
पच्चलु केम्पुलु गोमेधिकमुलु
चिलुकलु हंसलु पावुरम्मुलु
पुष्य रागम्मुल पानुपुपैना
चद्र कातपु शय्यनन्दुना
पगड़पु कोल्ल मन्चमु मीदा
पट्टु परुपुला परिमणम्मुलू
बालोसुलु तल्गडलनुन्चिरी
हेम विंजामर्लु नेर्पुतो विसरा
भक्तितो लक्षमण्ण पादमुलोत्ता
पव्वलिन्चिरि श्री राघवुलू
अतडेननि दिन्पुतू वुंडे
सती तनयलू मुग्गुरू वेल्ली
वेल्ली कन्नलमुन्दर निलिपी

मी धनमुलकू मी ऋणमुलकू
कर्तल मय्येडी पुत्रुलमनिरी
रावण मायलु मीरेरूगुंडि
अड़वुल्लो चंपा नंपितिरा
मी वाक्यमुलु तप्पनी तम्मुडु
अप्पुडु खड्गमुनु अंकिंचे
सत्यवाक्यमुलु गलिगिन सीता
बालुरं पेरूगुतू वुन्न मनिरि
तपसुजेसि मातल्लुलकंटे
अयोध्य राज्यमु बेलिरितमरू
तपसुलेक मा तल्लिकंटे
अरण्य में गृहमायेनु माकु
पल्लु पलमुलु भुजिन्पुचुनु
पेरूगु चुन्नामु काननिरी
आ पलुकुलु विनि श्री राघवुलू
अदरि पडुतु दिग्गुनवालेचे
पादमु लोत्तेडि तम्मुनि पिलिचि
स्वप्नमायेरा तम्मुडा यनेनू

(आरंभिक पंक्तियों में राम के शयन गृह के सौंदर्य का वर्णन है। लक्ष्मण राम के चरणों को दबा रहा है। राम सोते हुए स्वप्न देख रहा है। स्वप्न में लवकुशने राम से सीता परित्याग के बारे में प्रश्न किया। उन्होंने यह भी बताया कि लक्ष्मण के हाथों में सीता की मृत्यु नहीं हुई है। राजा के पुत्र होते हुए भी वे अपनी माँ के साथ आश्रम में दुर्बर जीवन बिता रहे हैं। इतने में स्वप्न टूट जाता है। राम की नींद भी टूट जाती है। वह उठ खड़ा होता है। लक्ष्मण से प्रश्न भी करता है।

इसके बाद अश्वमेध यज्ञ के आयोजन के लिए राम सोने की सीता को तैयार कराता है। उस की सहायता से यज्ञ का प्रारंभ करता है। घोड़े को कुशलव जंगल में रोक देते हैं। राम के साथ युद्ध प्रारंभ होता है। कुशलव का जन्म-रहस्य लक्ष्मण अकेला ही जानता है। इसलिए युद्ध के प्रारंभ में वह छिप कर लव-कुशों से बात करता है।

यन्नरो आवरूये वारेवरू
यतडेरा सौमित्रि न गानु
यन्नकु तप्पनि तम्मुड्ड इतड्ड
सत्य वाक्यमुलु दप्पनिवाड्ड
इतडुरा सौमित्रि न गानु
अम्मनु वाडु अडविलो विडिचे
मनलनु गाचिन मन्मधितडा
शरणु जोत्तमा श्री लक्ष्मन्नकु

xx xx xx xx

भक्तितो मुम्मारू प्रदक्षिणमु चेसि
पादंबुल पै वोरिगे वारू
यड्डगुल पै युन्न तम्मुलनेत्ति
दीर्घायुवु गम्मनि दीविन्चि
कूरिमितो गूर्चून्ड़ बेट्टकु

xx xx xx xx

मम्मु गन्ना मातड्डुलारा
मिम्मु चूड माकु कन्नुलु लेवा
अयोध्य राज्यमु मीरेलगनु
मिमुजूड़ कन्नुलु लेवय्य माकु
मिम्मु यड़वुला पालु चेसिना
पापात्मुन्डा नेने सुम्मी
याकुलु यलमुलु नमुलुतु सीता
यति कष्टमुन मिम्मुलुपेन्चे
पंड्लु फलंबुलु भक्षिन्पुतुनु ईरीति उन्नार मीरू

xx xx xx xx

अच्युतुनकु मेमु पुत्रल मैते
अयोध्य राज्यमु मेमेलुदुमु
यनि तनयुलु बलिकिन बलुकुलनु विनि

लक्ष्मणुडु वीणुलमूसे
यौदुरू राम मूर्तिकि पुत्रुलु
आ सत्यावति तनयुलु मीरू
अवुदुरौदुरनि शरणुंटु उन्चि
दीविन्चि वारिकि शरमुलु इच्चे
अयोध्य राज्यम मीरेलुदुरू
संदेहमुलु लेवनि पलिके

XX XX XX XX

अल्लंतट हरि सेनलु चूचि
अदुरूतु बेदुरूतु इट्लनि बलिके
श्रीरामुलु सेनलु वच्चारू
हरितो संदेहमुलु पन्नुदुरू
अन्नतो नेरम्मुलु चेप्पुदुरू
अवतलि केगंडनि तापलिके
तोड़ पै वुन्ना बाललनु दीविन्चि
चक्कनि चेक्किल्लु मुद्धुल् बेट्टि
परगुन बालल आवलिकंपि
सेनल केदुरुग वच्चेनु तानु

(प्रारंभिक पंक्तियों में लवकुश राम समेत लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और उनकी सेना को पहचानते हैं। लक्ष्मण की वंदना करते हैं। लक्ष्मण उनको आशीष के साथ साथ अनेक दिव्यास्त्र देता है। फिर वहाँ से लौट कर राम के साथ मिल जाता है।)

इसके बाद लवकुश लक्ष्मण को बेहोश करके हनुमान को बाँधकर अपनी माँ को भेंट के रूप में देते हैं। फिर राम अंगद, विभीषण आदि वीरों को लवकुश के यहाँ दूत के रूप में भेजता है। अपनी सहायता के लिए वैकुंट से गरूड को भी बुला लेता है। लेकिन कुशलव के भय से गरुड़ राम का वाहन बनना नहीं चाहता है। राम हाथी पर सवार होकर कुशलव से युद्ध करता है। इस युद्ध में त्रिमूर्तियों की पत्नियों का भी प्रसंग है। आखिर पराजित होकर राम लवकुश के सामने अपनी गलती को स्वीकार करता है। युद्ध समाप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस कथा गीत में विष्णु के अवतार और श्री महा विष्णु के जागृति गीत आदि गीत भी हैं।

'कुशलव कुच्चल चरित्रमु' कृति 'कुशलव कुच्चल कथा' और 'कुशलव युद्धमु' के सम्मिश्रण से बनी रचना लगती है। इन दोनों में चित्रित अवाल्मीकीय अंशों के साथ साथ इस में कुछ और विचित्र वर्णन देखने को मिलते हैं। सीता परित्याग के समय ऊर्मिला आदि अनुज-वधु राम को रोकने की कोशिश करती है। दयाहीन राम की भर्त्सना भी करती है। इसके अतिरिक्त दशरथ और कैकेई से संबद्ध एक विचित्र कहानी भी इस में है। बचपन में कुशलव अपनी माँ के मुह से राम कथा सुनते हैं। दशरथ कैकेई के वश में आने की कहानी चींटी के संवादों के बहाने अत्यंत सुंदरढंग से सीता उन्हें सुनाती है।

आचार्य बिरुदु राजु रामराजु के अनुसार 'वेपूरि ब्रतुकम्म कुशलवपाट' हनुमानदास की रचना है। इस कथा गीत को मुख्य रूप से तेलंगाना (वेपूरी प्रांत में) क्षेत्र में दसहरा (दसहरे के समय स्त्रियाँ रंग बिरंगी फूलों से ब्रतुकम्मा नाम की देवता को सजा कर उसे जलार्पण करते समय सामूहिक नृत्य करते गीत गाती है।) के समय स्त्रियाँ हाथों से तालियाँ पीटते या कोलाट खेलते गाने की परंपरा है। इस में 'कुशलव कुच्चल कथा' की तरह कामरूपी शूर्पणखा के द्वारा छोड़े गये चित्र के कारण राम सीता का परित्याग करता है। वाल्मीकी आश्रम में सीता केवल कुश का ही जन्म देती है। सीता की अनुपस्थिति में झूले को खाली देखकर वाल्मीकी मंत्रों की सहायता से लव की सृष्टि करता है। बाद की कथा वाल्मीकी रामायण से मिलती जुलती है।

डॉ. सी. कृष्णा रेड्डीजी के द्वारा संग्रहीत आंध्र के अनंतपुर जिले में गाये जानेवाला कथागीत 'दन्ड़ मो सीताराम दन्डमो जयराम दन्ड़मनि दन्ड़ मन्नोरिकि गन्डालु गाया वय्या रामा' भाव से, राम की प्रार्थना से प्रारंभ होता है। इस में सीता परित्याग के कारण का उल्लेख नहीं मिलता है। सीधा सीता परित्याग के प्रसंग का वर्णन मिलता है।

एमि येरुगनि सीतनु एल्लनंपितेनु
लोकुलु एमन्नारुरामा
ना माटकु नीवु बदुलित्तिवि
एट्लुंटिवि लच्चुणा रामा
आमाट वन्टूने गड़ गड़ वनकिनाडु
किम्दटे भोनगाडु रामा

मूसिना कन्नुलु मूसिनट्लुंडगा
सीत गगनमु केल्लानु
यन्नडु रानोडु मरदि वस्ताड़नि
किल किल नव्वुतादि रामा
यति सेप्प नोत्ताडो कत सेप्प नोत्ताडो
किल किल नव्वुताडु रामा
कत सेप्प रालेदु यति सेप्परालेदु दन्ड़मम्मा
वदिनगारु मायन्न सेल्वाये नीपंतनीकादि
बावुलु अंटे माकु साल सम्मरमु

(लक्ष्मण राम को समझाता है कि अकारण सीता को घर से निकालना ठीक नहीं है। लेकिन राम के निर्णय में कोई परिवर्तन नहीं है। इसलिए लक्ष्मण इसकी सूचना सीता को देने चला जाता है। समाचार सुनकर पहले सीता प्रसन्न ही होती है।)

इसमें सीता अपने गर्भ के बारे में किसी को नहीं बताती है। वनवास के लिए प्रस्तान करते समय अपनी तीनों सासु माओं से आशीर्वाद लेने जाती है। आशीर्वाद प्राप्त करके लक्ष्मण के साथ जंगल चली जाती है। इस में सीता और लक्ष्मण पैदल ही चलकर अयोध्या नगर को पार करके जंगल पहुँचते हैं। पैदल चलते चलते सीता थककर घायल होती है। घायल शरीर की पीड़ा से बचने के लिए यथाशीघ्र अपना संहार करने की लक्ष्मण से विनति करती है। लक्ष्मण के सभी बाण बेकार जाते हैं।

मूल गोन्दि काड़ मुग्गुरत्तगारू
ओमाट तेल्पुतानु रामा
यन्नडु रानि कोल्लि वस्तुंदनि
किल किल नव्वुतारू रामा
यति सेप्पनोत्तुन्दो कत सेप्पनोत्तुन्दो
किल किल नव्वुतारू रामा
कत सेप्परालेदु यति सेप्परालेदु
दंडमम्मा अत्तगारू
नी कोडुकु सेलवाये नपंत माराडु
अड़वुलकु पयनमत्तगारू

नीदु कोडुकु बलबद्रा
बलबद्रा शेकरूनि आरूनेल्लु जरिपिन
इप्पुडाडिन माट एन्नोन्ड्लु कैननु एन्नि दिनमुल कैननु
ई माटा मनसुन ग्रिंगि रामा
कैकरो चिन्नत्त कैकम्म
सुमित्र नडिपेत्त, कौसल्य पेद्धत्त
मुग्गुरत्तगारिकि दंडमम्मा
मुन्दर लच्चनुडु यनक सीतम्म
अड़वुलाक पयन मड़रि

इसके बाद अयोध्या नगर को पैदल ही पार करते समय नगर के बाद विविध प्रदेशों का उल्लेख किया गया है।

की कोकुनेटि वनमुलु दाटिरि
निम्मवनमुलु दाटिरि पीडवनमुलु दाटिरि
चीमल दूरनि चिट्टड़वुलु दाटिरि
काकुलु अम्सलिंक काकुलु
दूरनि कारड़वुलु दाटिरि
एनो कूयकु ओर नारामा
नडिसि नडिसि काल्लु बोब्बले पाइ
नडुवलेनु लच्चुमन्ना
वूपिन सेतुलु वत्पुलेक्किनवि
वूपलेनु लच्चुमुना
एंत दूरमैन एंत साम्राज्यमु
समसूदिमयन लच्चुना
अग्गंटि लच्चुनि कि कोपमुवच्चि
सूर्य बानमु तोडिगेनु
सूर्य बानमु तोडिगि
सिरूसु धरिन्चिते किरिटिमै निलिचेनु
ई बानमु वक्कटि दारि दप्पिनानि
इप्पड़ी लच्चुनडू

चंद्र बानमु तोडिगेनु
चंद्र बानमु तोडिगि चेतुलु
गन्निन्चिते कडियलके निन्चे रामा
ई बानमु वक्कटि दारि तप्पिनादि
इप्पुडु लच्चुनुडु नागु बानमु
तोडिगेना रामा नागुबानमु
तोडिगि नडुम गन्निन्चिते
नडुमु डावै निलिचिना रामा
वकटि चूस्ते नम्मा रेन्डु चूस्ते नम्म
मूडु चुस्तेनम्मा मुपलेकम्मा नीकु
नन्नु चंपक नीवयोध्य येचेन्ति
नीवेंटने नोच्चिते मीरम्मलकु
जोट्टित्तु विराममु राकु

(इस गीत के प्रारंभ में जंगल के विविध पेड़-पौधों का वर्णन है। पैदल चलते चलते सीता पूर्णतयः थक जाती है। पेड पौधों के लगने के कारण उसका शरीर भी घायल हो जाता है। घाओं की पीड़ा से कराहती हुई सीता लक्ष्मण से अपने को मारने की प्रार्थना करती है। लक्ष्मण गुस्सा करते हुए सीता पर बाण चलाता है। लेकिन सीता को मारने में असमर्थ होता है। उसके सभी बाण बेकार जाते हैं। सीता धमकी भी देती है कि अगर उसे संहार किये बगैर लक्ष्मण अयोध्या लौट जायेगातो वह भी अयोध्या लौटेगी। वहाँ पहुँचकर भाईयों के बीच झगड़े खड़ा करेगी।)

सीता को मारने में असमर्थ लक्ष्मण एक कस्तूरी मृग को मार कर उसकी आंखों को साक्ष्य प्रमाण के रूप में राम के पास लेजाता है। इन नकली आंखों पर विश्वास करके राम लक्ष्मण की ही निंदा करता है कि सीता संहार की आज्ञा किसी अवस्था में वह दे भी दे उसे सीता को नहीं मारना चाहिए था।

कांचिनि भूमिलो कस्तूरि नेदुन्नि
कन्नु गुड्लु रक्कालु
दावुलकु निन्चु कोनि वानगोट्टिन्नि
वेल्सु मूल गोड्लन्नि विनि
अन्न मूकिगो वच्चेनो रामा

नीकु चूचि रम्मंटे चलकेसि वस्तिनि रामा
दुलमुबोमु तेरिना लच्चुना रामा[15]

एक लंबा कथागीत मात्र होने के नाते इसमें संपूर्ण उत्तर रामायण रचना की तरह कुशलव का जन्म, अश्वमेध यज्ञ, कुशलव युद्ध आदि प्रसंग नहीं है।

उत्तर रामायण पर आधारित इस प्रकार की स्वतंत्र रचनाओं के साथ साथ तेलुगु में इस कथांश के आधार पर बने अनेक लोकगीत मिल जाते हैं। ये गीत कथागीत नहीं है। फुटकर गीतों के रूप में ये विविध संदर्भों में लोक-कवि गायकों के द्वारा गाये जाते हैं। उनमें बहुत प्रचलित कुछ गीत नीचे उदाहरण के रूप में दिये जा रहे हैं।

रायलसीमा प्रांत में धान के खेतों में काम करती हुई स्त्रियाँ कोरस में गानेवाले सोहनी के गीतों में उत्तर रामायण से संबंधित अनेक विचित्र वर्णन दिखाई पड़ते हैं। खेत में काम करनेवाली स्त्रियाँ प्रत्येक चरण के अंत में लवकुमार सुनो कुशकुमार संबोधन करके तल्लीन होकर अपने श्रम को भूल जाती हैं। कोरस में गानेवाले येगीत अत्यंत सुंदर और सुनने के लिए श्रुतिमाधुर्य बन पड़े हैं। आचार्य तूमाटि दोणप्पाजी ने 'जानपद कला संपदा' शीर्षक ग्रंथ में इस प्रकार के एक गीत का संग्रह किया है।

अइवेट्टि पट्नान अदवरि सावड़ी
लवकुमारा विनुमन्ना कुशल कुमारा
साविड़ि वेनकाले साकलोरिन्ड्लम्म
XX XX XX XX
पगवानि पंचना पडिवुन्न आलिनी
येरिर रामुलु गाद येलुतुन्डाडु
नाबोटि गाडैते नरिकि तुन्ड्ले चेतु

पुट्टेडु बुव्वोन्डि पट्टेडु सद्दि
आ सद्दि लेकिंग येमेमि कूरलु
अटिकलतो मागिनवि अलरेणि पन्ड्लु
दुत्तलतो मागिनवि दूदिनिम्मल्लु

8. परिशिष्ट में संग्रहीत लोक उत्तररामायण का कथा वैभव

परिशिष्ट में संग्रहीत लोक उत्तर रामायण* कर्नूल जिला, नंद्याल प्रांत में गाये जाने वाला एक लंबा कथा गीत है। इस अति लंबे कथा गीत को मेरी माताजी ने गाया है। मैं ने उस में आवश्यक संशोधन करके लिपिबद्ध किया है। बहुत बचपन से ही मैं इस कथा गीत को सुनता आ रहा हूँ। इसे मेरी माताजी ने अपने बचपन में अपने जन्म स्थल (चिन्न कोट्टाला, नंद्याल परिसर) में खेत में काम करते सीखा था। इसके कुछ गीतों को फुटकर रूप में विविध संदर्भों में खेती करते गाने पर भी कथा क्रम में फुरसत के समय आराम करते गाते हैं। खास कर वैकुंठ एकादशी, शिवरात्रि आदि पर्व दिनों में स्त्रियाँ रात-जागरण करती हुई इस कथागीत को गाती तन्मय व तादात्म्य होते मैं ने कई बार देखा है।

इस कथागीत का आरंभ शरणागत वत्सल, कलियुग में जनता के दुखों को दूर करने अवतरित हुए श्रीरामचंद्रजी की वंदना से होता है। राम के राज्याभिषेक के बाद पहले सीता परित्याग के कारण का उल्लेख मिलता है। यह 'कुश लव कुच्चुल कथा' रचना के प्रसंग का स्मरण दिलाता है। इसमें भी अपनी प्रतिशोध की ज्वाला की पूर्ति के लिए रावण आदि राक्षसों के संहार के बाद शूर्पणखा यति वेश धारण करके अयोध्या पहुँचती है। डॉ. रावि प्रेमलता के द्वारा संग्रहीत मेदक जिले में गाये जानेवाले कथा गीत में शूर्पणखा यति वेश में नहीं अति सुंदर युवति के वेश में राम के पास नौकरी ढूँढती आती है। राम उसे सीता की नौकरानी बना देता है। प्रस्तुत कथागीत में स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता है कि शूर्पणखा यति वेश में या सुन्दर

---

* गायिका मेरी माताजी, श्रीमती आई रेड्डी. जोजम्माजी, नंद्याल, कर्नूल (जिला), आन्ध्रप्रदेश

युवती के वेश में आती है। बाद में उसके द्वारा मायाचित्र का निर्माण, उस चित्र को सीता के शयनकक्ष में उसकी चटाई के नीचे गुप्त रूप से रखने का प्रसंग है। (देखिए लोक रामायणों में अवाल्मीकीय अंश वाला अध्याय) उस चित्र को पहले सीता देखकर डर जाती है। क्यों कि वह उसमें रावण के रूप को पाती है। उसे राम की आँखों से दूर रखने के लिए गुसलखाने के पास पत्थर के नीचे छिपाती है। राम दरबार में राज-काज से निपट कर सीता के पास लौटता है। राम के आगमन को देखकर सीता स्वयं स्नान के लिए उसे गुसलखाने में गरम पानी रखती है। राम के चरण स्पर्श से गुसलखाने के पत्थर के नीचे मौजूद रावण का चित्र जीवित होता है। क्रमश: उसका आकार पूरे घर में फैल जाता है। वह राम को युद्ध करने ललकारता है। इस दृश्य को देखकर सीता चकित रह जाती है। सीता के मन में रावण के प्रति प्रेम है समझकर राम उसके चरित्र पर ही शंका प्रकट करते हुए गुस्से में महल से चला जाता है। इस से इस कथा गीत में रावण के चित्र की और शूर्पणखा से संबद्ध कथाँश की समाप्ति हो जाती है।

'कुशलव कुच्चल कथा' और डॉ. राविप्रेमलता के कथा गीत की तुलना में प्रस्तुत कथा गीत का यह प्रसंग कुछ अधूरा जान पड़ता है। क्यों कि उनमें इस प्रसंग के बाद सीता के चरित्र के प्रति शंकालु राम उसे जंगल में संहार करने की आज्ञा देता है। माया वेशधारी शूर्पणखा और माया चित्र के बारे में कुछ और समाधान व विवरण प्राप्त नहीं हो पाया है। ऐसा लगता है कि शायद काल प्रवाह में समय के साथ इस कथागीत का वह अंश छूट गया हो। इन तीनों कृतियों में उपलब्ध होनेवाला यह प्रसंग बड़ा ही मार्मिक अवाल्मीकीय अंश है।

बाद में फिर अत्यंत विलक्षण ढंग से शिष्ट रामायणों की तरह धोबी के प्रसंग का वर्णन किया गया है। मरियालि सेट्टि नामक धोबी कपड़ों को ठीक से और सही समय पर साफ नहीं करनेवाली अपनी पत्नी की मारपीट करता है। वह पति को छोड़ कर मायका चली जाती है। ससुर पुनः उसे ससुराल ले आता है। उस समय मरियालिसेट्टि अपने ससुर से राम की मूर्खता का परिहास करता है। जिसने पराये घर कई दिन कैद हुई पत्नी को अपना लिया है। गुप्त वेश में वहाँ गये राम इन बातों को सुनकर बहुत दुखी होता है। लक्ष्मण को बुलाकर सीता का वध करने अयोध्या की पूरब दिशा के जंगल में लेजाने की आज्ञा देता है। लक्ष्मण विरोध करता है कि

अकारण सीता को इस रूप में जंगल भेजना उचित नहीं है। जिससे कुपित होकर राम बाणों से अपने को मारकर सीता समेत अयोध्याराज्य ग्रहण करने को लक्ष्मण से कहता है। राम की ये बातें अवाल्मीकीय हैं। लोक-कवि-गायक राम को एक अवतार पुरुष की अपेक्षा एक साधारण मानव के रूप में देखना पसंद करते हैं। इसलिए वे राम पर साधारण मानव के शंकालु स्वभाव का आरोप भी करते हैं। अब तक के कथागीत में राम का प्रसंग होने पर भी आगे राम से ज्यादा लक्ष्मण और सीता का ही वर्णन दिखाई पड़ता है।

रामाज्ञा के अनुसार लक्ष्मण पहले सीता को यह समाचार सुनाता है। सीता बहुत दुखी हो जाती है। पति परायण सीता लक्ष्मण के साथ जंगल जाने को तैयार होती है। रास्ते में अपनी तीन सासुमाओं से आशीर्वाद लेने उनके पास चली जाती है। पहले कैकेई के पास जाती है। कभी भी घर छोड़ कर बाहर नहीं निकलनेवाली सीता को आते देखकर कैकेई चटाई डालकर बिठाती है। कैकेई राम के वनवास की कथा सुनाने के लिए सीता से कहती है। राम के वनवास की कथा की जगह सीता दूसरी बार भी वनवास जाने की अपनी निस्सहाय स्थिति के बारे में सूचना देती है। सीता के साथ लक्ष्मण जंगल जा रहा है जानकर कैकेई सीता को धैर्य बांधती है कि उसे प्राणों की कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है। यहाँ एक और रोचक प्रसंग का उल्लेख मिलता है। आंध्र की स्त्रियाँ मायके से ससुराल जाते समय हल्दी, कुंकुम, चावल, इत्यादि से गोद भर कर जाती है। जबकि यहाँ पर कैकेई सूर्यबाण, चंद्रबाण, नारायण बाण आदि को पिस कर उससे सीता की गोद भर कर भेजती है। इसके साथ साथ सीता स्वयं अपने गर्भ के बारे में कैकेई को बताती है कि तीन महीनों के अंदर वह माँ बननेवाली है। यह भी प्रार्थना करती है कि इसकी सूचना वे अपने पुत्र को दें। सीता यहाँ पर कौसल्या से कहनेवाली सारी बातें कैकेई से कहती है।

आखिर वनवास के लिए प्रस्थान करने से पहले वह अंतिम बिदाई लेने राम के पास चली जाती है। सीता अपने दोनों हाथ जोड़कर निस्सहाय, नादान सी मुद्रा किये राम के सामने खडे होकर आशीर्वाद मांगती है। सीता की आँखों से आँख मिलाने में संकोच करके राम अपना मुख छिपाता है। कितनी बार प्रार्थना करने पर भी वह अपने मुख की दिशा ही नहीं बदलता है और न ही कोई उचित उत्तर

देता है। अत्यंत करुणा से भरा हुआ यह दृश्य लोक-कवि-गायकों के मन में सीता के प्रति रहनेवाली आत्मीयता व प्रेम का द्योतन करता है। दूसरी ओर राम के प्रति उन का कटु व्यवहार किंवा असंतोष का पर्दाफाश हो जाता है। लक्ष्मण राम को आशीर्वाद देकर सीता को जंगल भेजने की सलाह देता है। आशीर्वाद की जगह राम फिर अयोध्या के पूरब के जंगल में सीता का वध करने की आज्ञा देता है। लक्ष्मण दूसरी बार भी राम को समझाने की कोशिश करता है कि इस प्रकार अकारण सीता को जंगल भेजना उचित नहीं है। इससे कुपित होकर राम लक्ष्मण की निंदा करता है कि वह उसे बाणों से मारकर सीता समेत अयोध्या का शासन करे। इन वचनों को सुनने के बाद भी लक्ष्मण में कोई परिवर्तन नहीं होता है। इससे राम आगबबूला होकर लक्ष्मण को धमकाता है कि कल सुबह तक अगर सीता का वध करके उसके साक्ष्य प्रमाण के रूप में उसकी आंखे निकाल कर तुम नहीं लाओगे तो तुम्हे मेरे राम बाण का शिकार बनना पडेगा।

श्रीराम की बातें सुनकर विवशता में लक्ष्मण सीता के साथ वन प्रस्थान करता है। सीता और लक्ष्मण अयोध्या नगर के महल, भवन, वन-उपवन आदि पार करके पूरब में तीन करोड़ मुनिगण बसनेवाले घने जंगल में पहुँचते हैं।

कथागीत के इस अंश से संबंधित गीतों को स्त्रियाँ विविध संदर्भों में गाती हैं। इन को सुनने के बाद कठिन स्वभाववालों के हृदय भी करुणा से पिघलने लगते हैं। पैदल चलकर थकी सीता अपने घायल शरीर की पीड़ा को सहन नहीं कर सकती है। वह लक्ष्मण से विनति करती है कि वह तुरंत उसका संहार करे। उसकी निस्सहाय स्थिति देखकर लक्ष्मण और भी दुखी हो जाता है। उत्तर देता है कि उसका संहार करना उसके वश की बात नहीं है। घायल शरीर की असहनीय पीड़ा से बचने सीता बार बार विनती करती है। तब भी लक्ष्मण में उसे मारने की हिम्मत नहीं होती है। आखिर सीता उसे धमकी देती है कि अगर वह उसे मारे बिना अयोध्या लौटेगा तो वह भी उसके साथ अयोध्या लौटेगी। तथा वहाँ भाइयों के बीच में झगड़े खड़ा करेगी। इससे लक्ष्मण को गुस्सा आता है। गुस्से में ही वह अनेक बाण सीता पर चलाता है। सभी बाण व्यर्थ जाते हैं। सूर्यबाण से सीता के चरणों को अलग करना चाहता है। तो वह उसका नूपुर बन जाता है। चंद्रबाण से उस का कमर तोड़ना चाहता है तो वह कमरबंद बन जाता है। ब्रह्मास्त्र से उसका गला काटना चाहता है तो वह उसके गले की हार बन जाती है। कथागीत में यहाँ पर

एक और अवाल्मीकीय अंश का वर्णन है। लक्ष्मण वनवास के दौरान पर्णकुटीर में रहते समय हुए मृग शिकार संबंधी प्रसंग के बारे में विस्तार से जानना चाहता है कि राम की खोज करने उस के जाने के बाद सीता पर क्या बीता था। सीता यहाँ पर उस प्रसंग की पूरी जानकारी लक्ष्मण को देती है। वह कहती है कि रावण वेश बदलकर भीख मांगने आया था। लक्ष्मण के द्वारा खींची गयी रेखा पार करने के बाद वह बडे शूल की सहायता से जमीन सहित उखाड़ कर उसे उठाकर रथ पर बिठा कर ले गया था। इस प्रकार सीता का स्पर्श किये बगैर पृथ्वी सहित उठाकर रथ में रखने की घटना भी अवाल्मीक है। वाल्मीकी रामायण में रावण अपने हाथों से सीता को उठाकर रथ में रखता है[17]। यह जानपदों की शील-प्रातिवत्य के प्रति सूक्ष्म-दृष्टि का परिचय देता है। बाद में जटायु के साथ संघर्ष आदि वाल्मीकी रामायण की ही तरह है।

कथागीत में लक्ष्मण के इस प्रकार विषयांतर करने का मूल उद्धेश्य सीता का वध किये बगैर उसे जंगल में सजीव छोड़ने का है। लेकिन उसे निराश ही होना पड़ता है। विषयांतर करने के बावजूद भी सीता पहले की तरह विनति करती है कि यथाशीघ्र उसका वध किया जाय। पुनः वह धमकी भी देती है कि अगर लक्ष्मण उसका वध किये बगैर अयोध्या लौटेगा तो वह भी अयोध्या लौटेगी। अयोध्या में भाईयों के बीच में झगड़ा पैदा करेगी। लक्ष्मण कुपित होकर सीता पर राम बाण चलाने लगता है। तो सीता के गर्भ में सूक्ष्माकारवाले कुशराज दिखाई पड़ता है। जिससे लक्ष्मण बाण चलाना रोकता है। सीता की जगह एक कस्तूरी मृग को मार कर उसकी आँखें राम को साक्ष्य प्रमाण के रूप में दिखाने अयोध्या ले चलता है। अकेली सीता जंगल में पेड के नीचे शरण लेती है।

रामाज्ञा के अनुसार अगले दिन सुबह सीता-संहार के साक्ष्य प्रमाण के रूप में कस्तूरी मृग की आंखें लिये लक्ष्मण राम के पास पहुँचता है। उस प्रमाण पर विश्वास करके राम बिलख बिलख कर रोने लगता है। राम में दुख की तीव्रता यहाँ तक बढती है कि वह लक्ष्मण को दोषी ठहराने लगता है। वह कहने लगता है कि सीता-संहार की आज्ञा देते ही उसे इस रूप में नहीं करना चाहिए था। इस अपराध में इसलिए उसका ही पाप ज्यादा है। यह राम के मन में सीता के प्रति रहनेवाले अथाह प्रेम का द्योतक है। इस प्रकार लक्ष्मण की निंदा करने के बाद संयम भरतते हुए लक्ष्मण से ही पूछने लगता है कि उस ने सीता का वध कैसे किया ? लक्ष्मण

उत्तर देता है कि सीता पर चलाये गये सूर्य बाण, चंद्र बाण, नारायण बाण आदि बेकार गये हैं। आखिर राम बाण से सीता का वध संभव हो सका है। इस के बाद राम यह जानने की जिज्ञासा प्रकट करता है कि मरते समय सीता ने क्या कहा था। लक्ष्मण इस का जवाब इस रूप में देता है कि सीता अनेक जन्मों तक राम की पत्नी ही बनी रहना चाहती है और लक्ष्मण की भाभी होकर ही अनेक जन्म लेना चाहती है। इन बातों को सुनकर राम के मन में सीता के प्रति बड़ी अनुकंपा जागती है कि वह सीता को पुनर्जीवित पाने की अनियंत्रित इच्छा प्रकट करता है। इसलिए लक्ष्मण से सीता के मरण स्थल व मृतशरीर को दिखाने के लिए कहता है। राम को बहकाने की कोशिश करनेवाला लक्ष्मण यह सुनकर भयभीत होता है। वह एक और बहाना ढूंढता है कि घास-पूस लकड़ी आदि इकट्ठा करके वह सीता की चिता जलाकर आया है। उस की राख भी नहीं बची है।

यह सुनकर राम का दुख और ज्यादा हो जाता है। दुख में लक्ष्मण की बातों पर विश्वास न करके ज्योतिष्यों की मदद से सीता को ढूंढना चाहता है। ज्योतिष्य बतानेवाले पंडितों को बुलाने राम हनुमान को भेजता है। हनुमान से पहले ही लक्ष्मण उनके पास पहुंचकर धमकी देता है कि वे राम का काम न करें। इसलिए हनुमान को खाली हाथ लौटना पडता है। राम फिर पंडितों को लिवा लाने लक्ष्मण को ही भेजता है। लक्ष्मण पहले ही पंडितों से स्पष्ट करता है कि वे ज्योतिष्य बताने का नाटक मात्र करें और राम से इतना बतादें कि सीता पृथ्वी पर जीवित नहीं है। लक्ष्मण की धमकी से प्रभावित पंडित उसी प्रकार पंचांग देखकर राम से झूठ बोलते हैं। बाद में लक्ष्मण स्वयं ब्राह्मण वेश धारण करके राम को ज्योतिष्य बताने आता है। बड़ा नाटक करते हुए बताता है कि सीता पृथ्वी पर जीवित नहीं है। लेकिन विधुर का जीवन राम के भाग्य में लिखा हुआ नहीं है। इसलिए उसे सोने की सीता को बनवाकर उस से विवाह रचना चाहिए। उसी प्रकार अपने विवाह के साथ लाख गरीब ब्राह्मणों का विवाह भी कराना चाहिए। उसके अतिरिक्त सीता और सीता के शिशु को मारने के पाप से मुक्त होने के लिए सीता की सारी वस्तुएँ ब्राह्मणों को दान के रूप में देनी चाहिए। राम मायावेशधारी लक्ष्मण की इन बातों पर विश्वास करता है। उसकी बातों के अनुसार ही उससे बढकर और कोई दूसरा अच्छा ब्राह्मण नहीं मिलेगा समझकर सीता की सारी वस्तुएँ उसे दान के रूप में दे देता है। सीता की वस्तुएँ प्राप्त करके लक्ष्मण उन्हें सीता के महल में ही छिपा रखता है।

ब्राह्मण वेश छोड़कर फिर लक्ष्मण बनकर वह सोने की सीता की तैयारी में जुट जाता है। कथागीत में यहाँ आलमूरू, कोडुमूरू जैसे गाँवों का उल्लेख मिलता है। ये सभी आंध्र के कर्नूल जिले में ही स्थित हैं। राम अनेक गाँवों से अनेक पदार्थ मंगाकर सीता की कनक मूर्ति तैयार करवाता है। उसके साथ विवाह भी कर लेता है। ब्राह्मणों के विवाहों का भी आयोजन करता है। इस प्रकार लक्ष्मण सीता के जीवित रहने के समाचार को गुप्त रखते हुए, उसके जीवित रहते जिन सभी कार्यों के होने की संभावना थी उन सभी को बहुत सफल ढंग से कराता है। यहाँ लोक-कवि-गायकों के सरल अमलिन व निष्कपट तटस्थ जीवन को प्रतिबिंबित करनेवाला एक और प्रसंग अत्यंत सुंदर ढंग से वर्णित है। सोने की सीता के साथ ही क्यों न हो राम का विवाह राम का विवाह है। उसे वे अत्यंत मनोहर ढंग से करना व देखना चाहते हैं। इसलिए कथागीत में राम के विवाह का वर्णन अत्यंत सरस शैली में किया गया है। यहाँ के गीतों की लयात्मकता, शब्द सृजन, अनुप्रासयुक्त भाषा, लंबे समास पद आदि अत्यधिक हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं।

इस प्रकार के अत्यंत वैभव व आनंदोत्सव के तुरंत बाद लोक-कवि-गायक एक करुणाजन्य और अति दुखदायक दृश्य का आयोजन करता है। जंगल में सीता अकेली है। प्रसूति की पीड़ा से कराह रही है। अपने एकाकीपन व अपने निस्सहाय जीवन को देख कर सीता रो रही है। इस दृश्य में अनायास ही श्रोताओं की आखों से आंसू बहते हैं। यह सोचते हुए उसका दुख और तीव्र हो जाता है कि अगर वह अयोध्या में होती तो कौसल्या, कैकेई, सुमित्र आदि सासुमां उसकी कितनी सेवा करती। शायद दुख की घड़ी में आत्मीय जनों का स्मरण सताता है। सीता लक्ष्मण का स्मरण करती है कि लक्ष्मण के कारण ही उसे यह सब कुछ झेलना पड़ रहा है। जंगल छोड़ आने का दायित्व लक्ष्मण का ही है। सीता की निस्सहाय व दयनीय स्थिति जानकर लक्ष्मण भूदेवी से प्रार्थना करके प्रसूतिका सीता को सहायता करने भेजता है। भूदेवि दाई बनकर सीता का उपचार करने जंगल पहुँचती है। सीता के प्रसव में वह सीता से मूसड़ माणिक की मांग करती है। माणिक लिये बगैर वह नाल काटने तैयार नहीं होती है। जनपद में दाईयों का अभाव और प्रसूति के समय दाई के द्वारा किये जानेवाले कटु व्यवहारों का बोध कथागीत का यह अंश प्रस्तुत करता है। आखिर सीता से माणिक प्राप्त करके फिर उसे लौटाती है कि बड़े लोगों की संपत्ति उनके पास नहीं ठिकेगी ? फिर मुफ्त में नाल काट कर अदृश्य हो जाती

है।

बाद में अपने शिशु को लेकर सीता अकेली वाल्मीकी आश्रम में आती है। एक प्रकार से यह भी एक अवाल्मीक अंश है। वाल्मीकी रामायण में सीता वाल्मीकी आश्रम में ही आश्रमवासियों की सहायता से बच्चों का जन्म देती है। कुछ अन्य लोक रामायणों में और भी अनेक चौंका देनेवाले प्रसंग गढे गये हैं। आचार्य तूमाटि दोणप्पजी के द्वारा संग्रहीत कथागीत में वाल्मीकी की जगह जनक महाराज के आश्रम में सीता का प्रसव संपन्न होता है। उस समय जनक वाणप्रस्थाश्रम स्वीकार करके जंगल में तप करने आये थे। डॉ. रावि प्रेमलता के द्वारा मेदक जिले से संग्रहीत कथागीत में भी सीता जंगल में जनक महाराज के आश्रम में बच्चे का जन्म देती है। इसकी एक और विलक्षणता है कि इस में जनक महाराज का अंधे के रूप में चित्रण किया गया है।

राज महल में सोने के झूले में सोने लायक शिशु को जंगल में घास-पत्तों के बीच में सुलाती हुई सीता उस के दुर्भाग्य पर विलाप करती है। सीता के कष्टों का मार्मिक गायन करनेवाले लोक-कवि गायकों का यह प्रसंग श्रोताओं के हृदयों पर अनोखा प्रभाव डालता है। लगभग सभी लोक उत्तर रामायणों में यह प्रसंग दिखाई पडता है। यहाँ पर मेदक जिले में गाये जानेवाले कथागीत का उदाहरण दिया जा रहा है -

टेकुटाकुलु तेंपेनम्मा
कोडुकुनु पंडबेट्टिन्दी
निम्मल्लु कोट्टिन्दी-नीडल्लु वेसिन्दी
वट्टि मामिन्ड्लु कोट्टिन्दि
कोडुकुकु उय्याल कट्टिन्दी
पलुगुल्लतोटि बोड्डु कोसिन्दि
केवुमनि कोडुकु केकलु पेट्टे
एतुकोने टन्दुकु अय्यलु लेरू
एमिने न कोडुका
अरंडमुन नन्निडिसि पेट्टिपोइरि
अनिएकमुन दुखमु तीय बट्टे[18]

(सीता सागौन पेड़ के पत्तों को काटकर उन पर शिशु को सुलाती है। पेड़ की शाखाओं से छाया बनाकर लताओं को काटकर उनसे स्वयं झूला बनाती है। शिशु को झूले में डालकर सुलाने लगती है। सोचने लगती है कि रोने वाले बच्चे को उठाने उसके सिवा और कोई नहीं है। अपनी इस निस्सहायता पर वह बिलख बिलख कर रोने लगती है।)

छोटे शिशु को वही घास-पूसों में लिटाकर प्रसूतिका सीता समुद्र स्नान करने निकलती है। रास्ते में अपने बच्चों के साथ एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछल कूद करनेवाले बंदरों को सावधान करती है कि इस प्रकार करने से बच्चे नीचे गिर जायेंगे। बदले में बंदरों से ही उसे शिक्षा लेनी पड़ती है कि सीता की तरह वे अपने बच्चों को जंगल में अकेले छोड़कर नहीं आये हैं। यह प्रसंग भी लगभग सभी प्रदेशों के लोक उत्तर रामायणों में दिखाई पड़ता है। यह लोक-कवि-गायकों की सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक है। उदाहरण के लिए मेदक जिले के कथागीत का उल्लेख किया जा सकता है --

चंकल बाल धरणि पड्ते
कोडुकेड़ दोरुकुतडु
एर्रि पट्टिंदा कोतुल्लारा
एर्रि पट्टिंदा कोतुल्लारा
चंकल्ल पिल्लल्ल धरणी मीद दिन्चन्डि
चेट्टु मीद फलाल नारागिंचंडि --

(इस गीत में सीता बंदरों से कहती है कि इस प्रकार बच्चों सहित उछलकूद करने पर उनके प्राणों को हानि पहुँच सकती है। बच्चों को जमीन पर छोड़ कर ही इस प्रकार करना चाहिए।)

उत्तर में एक प्रबुद्ध बंदर अपनी सलाह से सीता को ही प्रभावित करता है

अरण्यमुलनु कोडुकुने कंटिवा
आरंडविल पारेसि वस्तिवा . . . .
मेमु चच्चिन तावुल बाललु चावालि
बाललु चच्चिन तावुल मे मैंन चावालि
नीलेक्क मेमु पिल्लल निडिसि पेट्टमम्मा

बालुनि आरंडमुन इडिसि पेट्टोच्चिनावु
एड्डि सीतम्म एनुककु मर्लिपो

(बंदर सीता से कहता है। तुम जंगल में बच्चे का जन्म देकर उसे जंगल में ही अकेला छोड़कर आयी हो। हमारे बच्चों का जन्म-मरण हमारे साथ ही होगा तुम्हारी तरह हम बच्चों को छोड़कर नहीं जाते हैं। मूर्ख सीता वापस लौट जाओ और अपने बच्चे को हमेशा अपने साथ रखो।)

लोक-कवि-गायकों की कलमों से निकला यह मोड़ एक और अवाल्मीकीय अंश का आधार बनता है। बंदरों की बातों से प्रभावित होकर सीता स्नान करने जाते फिर आश्रम लौट आती है। अपने बच्चे को साथ ले जाती है। अपने बच्चे के साथ स्नान करके लौटकर वह देखती है कि झूले में एक और बच्चा है। चकित होकर वह वाल्मीकी से प्रश्न करने लगती है कि वह अपने बच्चे को अपने साथ लेगयी थी यह दूसरा बच्चा कहाँ से आया है। वाल्मीकी को अपनी गलती का बोध होता है। वे सीता से कहते हैं कि यह बच्चा त्रिमूर्तियों का प्रसाद है, तुम इसे पाल लो। इस प्रकार इस कथागीत में लवराज का जन्म होता है। यह हुई थी कि बंदरों की बातों से प्रेरित होकर स्नान से लौट आयी सीता अपने बच्चे को साथ ले गयी थी। सीता के जाने के बाद खाली झूले को देखकर वाल्मीकी सीता के कटुवचनों से बचने तीन मुट्ठी भर बालु से मंत्र के बल पर बच्चे की सृष्टि करते हैं। मंत्र से जन्म होने के कारण 'मंत्राल लवण्ण' का नामकरण किया जाता है। यह अवाल्मीक अंश अन्य लोक रामायणों में थोड़ा अंतर के साथ दिखाई पड़ता है। मेदक जिले के कथागीत में सीता स्नान करने जाने के बाद खाली झूले को देखकर अंधे जनक महाराज अपनी छाती से मिट्टी निकाल कर लवराज की सृष्टि करता है। आचार्य तुमाटि दोणप्पाजी के द्वारा संग्रहीत गीत में भी इस प्रकार का प्रसंग है। लेकिन 'कुशलव कुच्चल कथा' में नतो वाल्मीकी के द्वारा न जनक के द्वारा लवराज की सृष्टि की जाती है। इस में आश्रमवासियों के द्वारा दूसरे बच्चे की सृष्टि की जाती है। वह भी लवराज की जगह कुश राज की।

अच्चट मुनुलु जपमुलु चालिन्चुक
जानकि पुत्रुडु तोट्टेनु लेडु
जेरिजाणल शपिंचि पोननुचु
भयमु तोचेनु मुनुलंदरिकि

कुश दर्भकु जीवमुलु पोसिरि
कुशडनि बालुनि नाममुनुंचिरि
पवलिंच बेट्टिरि बालुनि यपुडु
पारिजातपु बंतुल बट्टक

(मुनिगण ने अपना जप पूरा करके देखा कि झूला खाली है। बच्चा झूले में नहीं है। सीता के शाप से भय भीत होकर आश्रमवासी मुनिगण ने सीता के आनेके पहले ही घास के तिनके में प्राण डालकर एक बच्चे की सृष्टि की। घास के तिनके से उत्पन्न होने के कारण उसे कुशराज नाम रखा गया।)

इस प्रकार आंध्र के सभी जनपदों में गायेजानेवाले कथागीतों में कथात्मक एकता दिखाई पड़ती है। सीता एक ही बच्चे का जन्म देती है। दूसरे बच्चे की सृष्टि कभी जनक के द्वारा, कभी वाल्मीकी के द्वारा या कभी आश्रमवासियों के द्वारा की जाती है।

दोनों बच्चों की शरारतें व शोरशराबे से बचने के लिए सीता झूले तैयार करवाती है। बच्चों को झूले में डालकर वह लोरी गाती है। लोक-कवि-गायकों के कंठ से निकला यह गीत आंध्र भर में अत्यंत लोक प्रिय हुआ है। यह गीत कथा प्रसंग के अतिरिक्त आंध्र की स्त्रियाँ अपनी संतान को दुलार कर सुलाने के लिए भी गाती दिखाई पड़ती हैं। आंध्र के लगभग सभी लोक उत्तररामायणों में इस कथा-प्रसंग के गीतों में भावात्मक एकता परिलक्षित होती है। तेलंगाना प्रांत में गाये जानेवाले गीत को नीचे उदाहरण के रूप में दिया जा रहा है ---

नारचीरल तोड़नु उय्याल वेसि
जानकि तनयुलकु जोललुपाडे
एड़वकु नातंड्रि एड़वकु तंड्री
एडिस्ते निन्नेव्वरु एत्तुकुंटारु
एड़वकु कुशलवुड़ रामकुमार
उंगरमुलु कोनुचु उय्यालगोनुचु
ऊर्मिला पिनतल्लि वच्चेनेड़वकु
पट्टटंगीलु गोनुचु पुलिगोरु गोनुचु
भूदेवि अम्मम्म वच्चेनेड़वकु

सभी आत्मीय जनों से दूर जंगल में मोटे कपडे पहनते हुए कंदमूल ही

खाते हुए जमीन पर ही सोने वाली अपनी दुर्भाग्य संतान को देखकर सीता दुखी हो जाती है। बच्चों की रुलाई को बंद कराने राज महल में सुख-भोगनेवाले सभी आत्मीय जनों को गीत के माध्यम से स्मरण करते हुए अपने मन को भी शांत करने के सीता के असफल प्रयास को देखकर अनायास ही आँखों से आँसू टपक पड़ते हैं। इस गीत के गाने का ढंग, गाते तन्मय होने की मुद्रा को देख कर ऐसा लगता है कि मानो लोक-कवि-गायकों का मन राम-रावण युद्ध दृश्यों की अपेक्षा कुशलव-का जन्म और उसके बचपन के वर्णन में ज्यादा रमा है। इस प्रकार के मनोहर व अप्रतिम लोरी गीतों का सृजन करके लोक-कवि-गायकों ने आंध्र की जनता के हृदयों में एक अविस्मरणीय स्थान बना लिया है।

इस प्रकार सीता जंगल में अनेक कष्टों को झेलते हुए बच्चों को पाल पोष कर बड़ा करती है। जब बच्चे सात साल के हो जाते हैं तो उन्हें क्षात्र-धर्म परक शिक्षा दिलाने का स्मरण आता है। जन्मत: प्रबुद्ध लवकुश वाल्मीकी गुरु के पास क्षात्र-विद्याओं को सीख कर अत्यंत शक्ति संपन्न बनते हैं। सारी विद्याएँ सिखाने के बाद वाल्मीकी उन्हें नसीहत भी देते हैं कि पूरब, पश्चिम, दक्षिण दिशा में जाने से कोई खतरा नहीं है। परन्तु उत्तर दिशा में जाने से तुम कायर बनोगे। लव कुश गुरू वचनों का पालन करते हैं। अगले दिन भोर सुबह बारह कोस दूर पूरब की यात्रा करते हैं। वहाँ उदीयमान लाल रंगवाले सूर्य को शत्रु मानकर उससे लड़ने लगते हैं। द्वन्द्व युद्ध में उसे घायल भी करते हैं। इससे भयभीत सूर्य उन्हें वरदान देता है कि जब कभी उसका स्मरण करें तो वह उन्हें नागास्त्र देगा। इसके बाद लवकुश घर लौटते हैं।

अगले दिन सुबह भी इसी प्रकार भोर ही बारह कोस दूर पश्चिम की यात्रा करते हैं। वहाँ उनका विरोध कर सकनेवाला कोई दिखाई नहीं पड़ता है। रास्ते में वे पेड़ों से फल तोड़कर घर लौटते हैं। अगले दिन फिर भोर ही उत्तर की यात्रा करने पर उन्हें कदिरि के पहाड़ दिखाई पड़ते हैं। कदिरि के पहाड़ पार करने के बाद उन्हें अयोध्या नगर दिखाई पड़ता है। नगर में घूमते हुए काले रंगवाले एवं तिल्कधारी राम को देखकर उसे पहचानते हैं। राम के वैभव पूर्ण जीवन और उसकी सेना को देखकर ईर्ष्या करने लगते हैं। सोचने लगते हैं कि इतनी सेना अगर उनके पास होती तो वे कुछ भी कर सकते हैं। पूरे विश्व को जीत भी सकते हैं। उस के बाद उम्र में छोटा लवराज को जानबूझकर अकारण ही झगड़ा छेडने का मन चाहता है। चलते चलते वह रास्ते में बच्चों के लट्टुओं को पाँव से मारकर गिरा देता है। उन से झगड़ा

कर बैठता है। मन में सूर्य का स्मरण करके नागास्त्र को प्राप्त करता है। उसकी सहायता से अयोध्या नगर में घूमते हुए सभी भवन, दुकान, धर्मशाला आदि को खाक में मिलाते हैं। एक एक करके पूरे नगर को उखाड़ कर ध्वंस करने लगते हैं। कथागीत का यह प्रसंग भी अवाल्मीक है। वाल्मीकी रामायण में लवकुश वाल्मीकी गुरु के पास राम कथा का गायन सीखकर पूरी अयोध्या में गली गली घूमकर उसका प्रचार करते हैं।

नगर के इस अकल्पनीय कोलाहल व कांड देखकर लक्ष्मण राम को सेना समेत पाताल भागकर प्राणों की रक्षा करने की सलाह देता है। राम उसी प्रकार सेना समेत पाताल जाकर छिपता है। भागनेवाले के साथ युद्ध करना ठीक नहीं समझ कर लवकुश घर लौटते हैं। रास्ते में सीता के द्वारा लगाये गये श्रृंगार वन में आम, कठहल आदि फलतोड़कर अपनी माँ के पास ले आते हैं। सीता फलों को पहचानती है। लवकुश से यह जानने के लिए प्रश्न करती है कि आज वे किस दिशा में और कहाँ गये थे। लवकुश अयोध्या और अन्य घटनाओं का पूरा परिचय देते हैं। राम की निंदा करनेवाले लवकुश को देखकर सीता विलाप करने लगती है। उन्हें समझाने लगती है कि राम से शत्रुता हरि से शत्रुता के समान है। अपने सामने दुश्मन की प्रशंसा करनेवाली सीता पर उनको गुस्सा आने लगता है। दोनों बच्चे अगर इसी रूप में एक साथ होतो इसी प्रकार के झगड़े मोल लेते रहेंगे। यह सोचकर उन्हें अलग अलग कामों पर लगाने के लिए वह वाल्मीकी से विनती करती है। वाल्मीकी उम्र में बड़े कुश राज को फल-फूल इत्यादि इकट्ठा करने और छोटे लवराज को बगीचे की रक्षा का काम सौंपते हैं।

इधर अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ के आयोजन की तैयारियाँ होती हैं। यज्ञ में छोड़े जानेवाले घोड़े की सुरक्षा के लिए साथ में हनुमान की नियुक्ति की जाती है। घोड़े के सिर पर यज्ञ से संबंधित विज्ञापन (जय रेखा) लगाया जाता है। उस के बगल में ही दूसरों से छिपाते हुए गुप्त रूप में लक्ष्मण लवकुश को संबोधन करते हुए विशेष सूचना लिखता है। कथागीत में वर्णित यह विशेष सूचना का प्रसंग भी अवाल्मीकीय है। पहले दिन घोड़ा पूरब की दिशा में यात्रा करता है। वहाँ उसे रोकनेवाला व विरोध करनेवाला कोई दिखाई नहीं पड़ता है। सूरज के सिर पर चढने तक घोड़ा आगे बढता है। तब भी उसका कोई विरोध नहीं होता है। घोड़ा प्रसन्न होता है कि अब तक उसे विजय प्राप्त हुई है। धीरे धीरे वह अयोध्या लौटने लगता

है। रास्ते में वह फूलों से लदे, बगीचे को देखता है। बगीचे में घुसकर फूलों को, पौधों को उखाड़ने लगता है। भोजन करके घर से लौटे लवराज यह देखकर उसे पकड़ लेता है। घोड़े के सिर पर लगे विज्ञापन को और विज्ञापन के बगल में गुप्त रूप से लिखी गयी सूचना को पढ लेता है। घोड़े की सुरक्षा के लिए नियुक्त हनुमान घोड़े को रोकते देखकर उसे छोड़ने के लिए कहता है। घोडे को मुक्त किये बगैर लवराज बंदर कहकर उसका अपमान करता है। दोनों के बीच में युद्ध होता है। युद्ध में लवराज हनुमान को गंभीर रूप से घायल करके बेहोश कर देता है। यह देखकर लवराज सोच में पड़ जाता है कि बेहोश हुए हनुमान का देहांत हो गया है। बंदर को मार कर उसकी लाश को वैसे ही छोड़ देना पाप समझ कर वह उसे जलाने आग के लिए अपनी माँ के पास दौडता है। घटना का पूरा जायजा लेने के बाद सीता हनुमान को पहचानती है। दोने में अपने स्तन पान निकालकर लव से कहती है कि वह उसे मूर्छित हनुमान को पिला दें। अपनी माँ का स्तन पान करने से बंदर बलवान होगा समझकर लवराज स्वयं दूध पीकर दोने को पानी से साफ करके उस पानी को बंदर को पिलाता है। स्तन पान की महिमा से हनुमान फिर जीवित हो उठता है। परन्तु उसे खडे होने को भय लगता है कि उसे जीवित देखकर लवराज दुबारा मारेगा इसलिए वह धीरे धीरे लुढकता हुआ अयोध्या पहुँचता है। अकेले लौटकर आनेवाले हनुमान को देखकर राम प्रश्न करता है कि सेना और साथ में गया घोड़ा कहाँ है? प्रश्न का समाधान दिये बगैर हनुमान अपनी नौकरी व पद छोड़ने के लिए तैयार होता है कि सांस रहे तो नमक बेचकर जीवन काटूँगा।

राम की आज्ञा पर लवराज के भय से पेड़ के आड़ से ही हनुमान भरत, शत्रुघ्न को बगीचे का रास्ता दिखाता है। जहाँ घोड़े को पकड़ कर बांध दिया गया था। भरत, शत्रुघ्न लवराज से घोड़ा छोडने को कहते हैं। परन्तु लवराज नहीं मानता है उल्टा भरत शत्रुघ्न को युद्ध के लिए ललकारता है। युद्ध में भरत शत्रुघ्न के बाण लगकर लवराज बेहोश हो जाता है। जंगल में फल तोडने गये कुशराज को इसका अभास मात्र होता है। वह तुरंत अपनी माँ के पास दौड़ता है। सीता उसे समझाती है कि राम से वैर न मोल लें। दुश्मन की प्रशंसा करने वाली माँ पर कुश गुस्सा करता है। आखिर माँ का आशीर्वाद प्राप्त करके वह बगीचा पहुँचता है। वहाँ अचेत लव को देखकर भरत शत्रुघ्न पर बाण चलाता है। वह लव को बंधन मुक्त करने में सफल हो जाता है। फिर लवकुश दोनों मिलकर भरत शत्रुघ्न पर बाण चलाते हैं। युद्ध में

अत्र निगमनम्

अयं च परमार्थः- एवं भाष्यतट्टीकाग्रन्थानामध्ययनेनायमत्र निष्कर्षः प्रस्तूयते। 'सत्ये अनृतावभास' इत्येव सार्वत्रिकं लक्षणम्। यदज्ञानप्रयुक्तं यदवभासते तत् तदपेक्षया सत्यमभिधीयते। लोकेऽपि यथा रजतापेक्षया शुक्तिः सत्यरुपा विद्यते। अधिष्ठानविषमसत्ताकत्वं स्मृतिरूपपदप्रतिपाद्यं तु न लक्षणघटकम्, अपि तु उपलक्षणं भवदेव लक्षणस्योपपादकम्। अतो लक्षणस्यास्य न वेदान्तिमात्रसिद्धत्वम्। अत एव "लोकसिद्धमध्यास-लक्षणमाचक्षाण एव"[1] इति भामतीकारवचनेन न विरोधः। सत्ये शुक्तिस्वरूपेऽनृतस्य रजतस्यावगाहनात् इदं रजतमित्यादौ सर्वत्र लक्षणसमन्वयः। एवं विशेष्यविशेषणयोरुभयोरपि व्यावहारिक-सत्यत्वेन अधिष्ठान विषमसत्ताकत्व विरहात्प्रत्यभिज्ञायां नातिव्याप्तिसम्भवः। एवमन्यत्र प्रापञ्चिकभ्रमेषु ब्रह्मातिरिक्तस्य सर्वस्यापि अनृतत्वात् सत्ये ब्रह्मणि अनृतस्य प्रपञ्चस्यावगाहनात् लक्षणमिदं समन्वेति। एवमहंकारादौ आत्मनः परस्पराध्यासोऽप्यात्माज्ञानप्रयुक्त एव न त्वहंकाराज्ञानाप्रयुक्तः। तस्य च स्वरूपेण सत्यस्य तादात्म्यमेव अनतःकरणादौ

[1] भा० पृ० ११

ढंग से उभारता है। बाद में राम की आज्ञा के अनुसार सीता बगीचे में अचेत पड़े सब को पुन: जीवित करती है। फिर आनंदोत्साह से सभी अयोध्या नगर लौटते हैं। अयोध्या नगर में बच्चों की शरारतें और शोरगुल असहनीय हो जाता है। इससे बचने सीता भूदेवी से विनति करके भूप्रवेश करना चाहती है। भूदेवी सीता की प्रार्थना मानकर जगह देती है। सीता भूप्रवेश करने लगती है। तो राम उसे पकड़ कर बाहर निकालता है। यह प्रसंग भी अवाल्मीकीय है। वाल्मीकी रामायण में लवकुश के युद्ध के बाद सीता भूप्रवेश करती है। लेकिन अनोखे ढंग से इस कथा गीत में भूप्रवेश करने वाली सीता को राम रोक देता है। बाद में अपने दोनों बच्चों को हाथों से लेकर अपनी जांघों पर बिठा लेता है। उनको आशीर्वाद देता है कि युग युगों तक पृथ्वी पर उन की पूजा होती रहेगी। राम उनका राज्याभिषेक करके सीता, लक्ष्मण, ऊर्मिला आदि सभी आत्मीय जनों के साथ सशरीर स्वर्ग चला जाता है। इस प्रकार अनेक अवाल्मीक व विलक्षण प्रसंगों से भरी यह उत्तर रामायण की कथा जानपद और मनुष्य मात्र को अपनी ओर आकृष्ट करके उन्हें रसानंद देने में अत्यंत सक्षम है।

9. परिशिष्ट

9.1 तेलुगु लोक उत्तररामायण

नागरी लिप्यांतरण	हिन्दी अनुवाद
शरणु शरणु रामा शरणय्य राघव	शरण शरण हे राम शरण शरण हे राघव
शरणाग बिरूदु गल रामा	शरणागत वत्सल नामांकित हे राम
नी किंका शरणय्या श्री रघुरामा	शरण शरण हे श्री रघुराम !
शरणन्न वारुलकु मरणमेन्नडु लेदु	होगा नहीं मरण शरणापन्न का कभी शरण में तेरे
शरणन्न वारुलकु मरणमेन्नडु लेदु	होगा नहीं मरण शरणापन्न का कभी शरण में तेरे
शरणाग बिरुदु गला रामा	शरणागत वत्सल नामांकित हे राम
नी किंका शरणय्या श्री रघुरामा	शरण शरण हे श्री रघुराम!
अखल कल संहार अंभोज शेखरुड	सब दुष्टों के संहारक हे कमल शिरोभूषण
अखल कल संहार अंभोज शेखरुड	सब दुष्टों के संहारक हे कमल शिरोभूषण
अंभोज राम शरणय्या	शरण शरण हे शेष शयन राम
नी किंक अइवध्या[1] राम शरणय्या	शरण शरण हे कोशालाधीश राम
कन्नवारिकि राम ! विन्नवारिकि राम	देखनेवाले को हे राम सुननेवाले को हे राम
कन्नवारिकि राम ! विन्नवारिकि राम	देखनेवाले को हे राम सुननेवाले को हे राम
कालिग्य[2] राम शरणय्य	कलियुग में नहीं और शरण्य हे राम
नी किंका पट्टाभिराम शरणय्या	मात्र शरण है तेरे पट्टाभिषिक्त हे राम।
शरणु शरणन्टन	शरण शरण मांगती हुई
मायालेडी यादि माय पटमुलु रासिनादिं	मायाविनी वह मायाचित्र खींचने आयी
आ लेडी माय पटमुलु रासि नादि	मायाविनी वह मायाचित्र खींच गयी
नालुगने सौरट्ल भूमिलेल्ल तिरिगि	घूम फिर कर चारों दिशाओं में

सीतम्म पडिन सिरि साप मीदन
पटमुले पार वेसिंदि
वालेडी पटमुले पारा वेसिंदि
चिरूक नडुपुल तल्लि सीता मालक्ष्मि
सिरिकन्नु तेरचि चूसिंदि

सोयी हुई सीता की चटाई पर ही
चित्र को फेंक गयी
मायाविनी वह चित्र को फेंक गयी
चिर सौभाग्यवती माई सीतालक्ष्मी
देखी उठाकर अपनी आंखें माई

तन पदिवेलतो पटमुनु बारचूस्तेन
रावणुनि रूपमु लुन्नाये
पटमुलो रावणुनि रेखलुन्नाये
ई समयमन्दुन्न मा रामु चूस्तेनु
बाणान खंडिंचु वेसु
नन्नोक्क बाणान खंडिंचु वेसु
चिरूक नडतल तल्लि सीता मालक्ष्मि
जालाटि बंड क्रिन्देश
नातल्लि जालाटि बंड[4] क्रिन्देश

देखने से एकटक चुम्त आंखों से अपनी
दिखाई दी रावण की सेन
दिखाई दी चित्र में रावण की सैन
देखेगा राम अगर इस समय मुझे
मारेगा एक ही बाण से मुझे
मारेगा एक ही बाण से मुझे
चिर सौभाग्यवती माई सीता लक्ष्मी
छिपा दिया स्नानघाट के नीचे उसे
छिपा दिया सीता ने स्नानघाट के नीचे उसे

लक्षलकु तीरिन्न रच्चबंडल मीद
राजानाराजुलु रामुलू गुर्चोनि
पट्टि पंदेमु आडुतुन्ड्रि
अक्कड पगिडि पन्दे माडुतुन्ड्रि
दिमि दिमि तालालु दिविक्रोट्टि म्रोगंगा
राज गुरुवुलनियेडि रणभेरि सोकिंदि
रतुल राम सालेल्लनन्ना
अप्पुडु श्रीराम सालेल्लनन्ना

लाखों से भरे चौपाल पर
राजा सामंतों के साथ राम बैठकर
खेल रहा था दाँव शतरंज के
खेल रहा था वहाँ दाँव सोने के
दिमि दिमि गूंज बजते बाजा
बजी भेरी संग छोड गुरू राजा
पहने रत्नाभूषण निकले राम हे भाई
पहुँचने तब महल निकले राम हे भाई

रामु लोच्चे राकट[5] सीतम्म चूसिंदि
वेंडि कावुलकु वेन्नीळ्ळु पोसिन्दि
पगिडि कावुल तो पाट्रल बड चेसिन्दि
जालाटि बंड के पट्टा नातल्लि

देखा राम के आने को सीता माई ने
चांदी की हांडियों में भरी गरम पानी
सोने की हांडियों में भरी ठंडा पानी
स्नानघाट के पास ले गयी माई

जालाटि बंड के पट्टा नातल्लि	स्नानघाट के पास ले गयी माई
रामुल पादमु बंड पैन पडि	लगकर राम के चरण पत्थर पर
पटानि के पान मोच्चा	चित्र में हुए प्राण संचार
माया पटमु इल्लंता कप्पुकुन्डा	मायाचित्र फैल गया घर भर
इल्लन्ता कप्पुकुंडा	फैल गया घर भर
मायपटमु युद्धानिकिलेचि कूर्चुन्डा	मायाचित्र रण के लिए हुआ तैयार
अंतमरूलुनु गोल्ल	अति मोह भी होकर
आसीतनप्पुडु अंटकने मुट्टकने पोया	उस सीता का बिना स्पर्श किये बिना अंक भरे
ओ देव अंटकने मुट्टकने पोया	हे देव बिना स्पर्श किये बिना अंक भरे
मुनिगि पोइन गानि मुनिगि पोकुन्डाने	बिना डूबे डुबाने पर
पटमुलुनु रासु कुन्नादि	रख दिया चित्र खींच कर
ई सीता प्रक्कलो पेट्टुकुन्नादि	रख लिया सीता ने अपने मानसपटल पर
अगै मन्डेने अयोध्या रामुलु	जला आग बनकर अयोध्या राम
हारि बाटलु पट्टिनाडु	नापने लगा रास्ते श्रीराम
रामुडु रच्च बाटलु पट्टिनाडु	नापने लगा चौपाल के रास्ते श्रीराम
लक्षलकु तीरिन्न पच्च बंडल मीद	लाखों से भरे चौपाल पर
राजाना राजुलु रामुलुनु गूर्चोनि	राजा सामंतों के साथ राम बैठकर
पट्टि पन्देमु आडुतुन्ड्रि	खेल रहा था दाँव शतरंज के
वक्कड पगिडि पन्देमु आडुतुन्ड्रि	खेल रहा था वहाँ दाँव सोने के
साकलि मरियेलि सेट्टिवानि कोडुकु	मरियेल सेट्टी धोबी का बेटा
मासिन्न गुड्डलु मल्लबड उन्टेनु	देखकर ढेर पडे गंदे कपडों को
वानालिनि वाडु मर्दिन्चा	डाँटा उसने अपनी भार्या को
ओ देव अदि पोइ पुट्टिनिल्लुचेरा	हे देव रूटकर वह पीहर चली गयी
ओ देव दानि तंड्रि दनि तोलिकोच्चा	हे देव बाप उसका उसे ले आया
ऊरि बट्टलेल्ला माद॑कट्टुकोनि	बनाकर गठरी गाँव के सब गंदे कपडे
ऊरिकिट वच्चिनाडु साकलोडु	आया धोबी गाँव के बाहर
ऊरिकिट काड कोच्चिनाडु	धोबीघाट आया गाँव के बाहर
कोट्टिन तिट्टिन इन्ट्लो उन्डलि मामा	डाँटने फटकारने परपडे रहना घर ही मामा

इल्लुनेल्लि नालिनि सरियात्मा नेनेल मामा	घर से निकली उसे रखूँगा नहीं मामा
आयाल्नि सरियात्म नेनेल मामा	रखूँगा नहीं उस भार्या को मामा
वेर्रिर रामुलु गांग तिक्क रामुलु गांग	सनकी हो या पागल राम ने
शरपोइन सीतनु तेच्चि पट्नमुन्चिनाडु	बनायी पटरानी परवास रही सीता को
ओ मामा अतिवेगमुगा एलुताडु	भार्या बनाकर रख लिया मामा
ना बोटि गाल्लैते	अगर मैं होता
ना ओक्क बाणान खंडिंतु मामा	एक बाण से उसे वध करता
साकल्लि मरियालि सेट्टिवानि कोडुकु	मरियाल सेट्टि धोबी के बेटे की
चेप्पिन्न माटलु चेवुलारा आलकिंचम्मा	बातों को सुना अपने कानों से
श्री रामुचेवुलारा आलकिन्चम्मा	सुन लिया श्रीराम ने अपने कानों से
एर्रंग पंडिन कोर्रकंकि वाला	पकी लाल धान की फसल सी
तलनाल केसि नाडम्मा श्रीराम	सर झुका लिया श्री राम ने माई
तलनाल केसि नाडम्मा श्रीराम	सर झुका लिया श्री राम ने माई
विनवोई लच्छमण विनकुल भूपाल	इक्ष्वाकु भूपाल सुनो भाई लच्छमण
सौमित्रि कुम्हार सोधकुल लच्छमण	सुमित्रा सुत हे पटु लच्छमण
कायरादुरा सीतनिंका	रख नहीं सकता रे सीता को
लच्छमण खंडिंचि रम्मनि पलिके	कहा राम आओ वध करके सीता को
अइवध्यकु तूर्पुन पगलु चीकटि कोन	अयोध्या के पूरब में होता अंधियारा दिन में जहाँ
परदाच्चि मेन मुप्पैइ मूडु कोट्रल	कीकारण्य में तैंतीस करोड जहाँ
मुनुलुन्न स्थलमुन	मुनियों के रहते जहाँ
कुदुरु चक्कनि मंचि गुन्न चिंतलि क्रिंद	घनी फैली अच्छी इमली पेड के तने
खंडिंचि रम्मानि पलिके	कहा राम ने वध करके आने
श्रीरामु तेगटार्चि रम्मानि पलिके	कहा राम ने वध करके आने
कल्ल लेनि सीतनु इल्लेल्ल गोट्टिते	बेकसुर सीता को घर निकालने से
जनुलेमन्दुरो अन्ना	जन क्या समझेंगे भाई
मनसाटि दोरलेमनन्दुरो रन्ना	साथी राजा सामंत क्या सोचेंगे भाई

नाचेति बाणालु नी चेतनुन्नाइ	मुझ जैसे बाण हैं तुम्हारे साथ भी
नन्नु संपर लक्ष्मणणा नीविंक	वध करो मेरा लक्ष्मण
नन्नु संपि नीवदिन विद्दरु	मारकर मुझे तुम और तुम्हारी भावज
अइवध्य पट्नमुनु अतिवेगमुग	राज करो अयोध्या में सुख से
अग्गे मन्डेने लक्ष्मणा पेरूमाल्ल	जला आग बनकर लक्ष्मण
वाग्गिबाटलु पट्टिनाडु	रास्ता नापने लगा लक्ष्मण
लक्ष्मण वदिन बाटलु पट्टिनाडु	रास्ता भावज का नापने लगा
मरिदोच्चे राकट सीतम्म चूसिदि	देखा सीता ने देवर के आने
अप्पुडेमनि पलुकुतादि	तब कहने लगी तब ऐसा
मरिदि गदु लक्ष्मण ममुगन्न मातांडि	देवर लक्ष्मण मेरे प्रिय भाई
एक्कडोस्तिवन्न नीवु लक्ष्मण	तुम कैसे आये भाई
एक्कडोस्तिवन्न नीवु	तुम कैसे आये भाई
वदिनववु सीतम्म वैकुंठरालु	वैकुंठवासी भावज सीता माई
अडवुलके पयनमम्मा मनमिंक	जाना जंगल हमें माई
अडवुल के पयनमम्मा	जाना जंगल हमें माई
गोडु गोडुन दुःख सागे सीतम्म	रो पड़ी फूट-फूट कर सीता माई
गोट नीरूलु [illegible] मागे	बहाने लगा आँसू सीता माई
रंगैन मुत्याल सांम्पग देगिनट्लु	रंगीली मोतियों की टूटी लड़ी सा
राल कन्नुल तीर्थम[illegible] सीतम्मा	गिरने लगा आँसू धारा सी
राल कन्नुल तीर्थमा	बहने लगे माता की आँखों से अश्रुधारा सी
अइवध्यकु तूर्पुन पगलु [illegible] कोन	अयोध्या के पूरब में होता अँधियारा दिन में जहाँ
[illegible] मुप्पइ मूडु [illegible]लु	[illegible]कारण्य में तैंतीस करोड जहाँ
मुनु[illegible] स्थलमुन	[illegible] रहते जहाँ
कुदुरु [illegible]कानि मंचिगुन्नचिंतलि क्रिन्द	घनी फैली अच्छी इमली पेड के तने
खरिदि [illegible]मानि पलि के श्रीराम	कहा राम ने वध करके आने
[illegible] [illegible]मानि पलिके	कहा राम ने वध करके आने
मुंदर लक्ष्मण [illegible] सीतम्म	आगे आगे लक्ष्मण पीछे सीता माई

एप्पुडो बयलेल्लिनारु वाड्लिंक	कभी के निकले वे दोनों जंगल
एप्पुडनो बयलेल्लिनारू	कभी के निकले वे दोनों जंगल
मरिदि गदु लक्ष्मण ममुगन्न मार्तांड्रि	देवर लक्ष्मण मेरे प्रिय भाई
मूल द्वारमु काड मुग्गुरत्त गोरितो	मूल द्वार के पास तीन सासों से भाई
मुच्चटलाडोस्ता मरिदि नेनिंक	लेकर आऊँगी आज्ञा मैं
वगवार्त तेलिपोस्तननेनु	खबर देकर आऊँगी मैं
वदिनववु सीतम्म वैकुंठरालवु	वैकुंठवासी भावज सीता माई
अतिवेगमुग वेल्लवम्मा नीविंक	जाइए शीघ्र ही हे माई
अतिवेगमुग वेल्लवम्मा	शीघ्र ही जाइए हे सीता माई
चिरूत नड्डुपुल तल्लि सीतामालच्चिमि	चिर सौभाग्यवती माई सीता लक्ष्मी
चिन्नत्त बाट[7] पट्टिन्दि मातल्लि	रास्ता छोटी सास का नापने लगी
कैकम्म बाट पट्टिन्दि	कैका माई के पास जाने लगी
कोडलोच्चे राकट कैकम्म चूसिंदि	देखा सीता के आने को कैकेई
सिरिचापले परिचिनादि कैकम्म	बिछाई कैकेई सोने की चटाई
सिरिचापले परचिनादि कैकम्म	बिछाई कैकेई सोने की चटाई
जनकुनि कूतुरिवि दशरथुनि कोडलिवि	जनक की बेटी हो दशरथ की बहु हो
रामुलकु भार्यवु लक्ष्मण्ण वदिनवु	राम की पत्नी हो लक्ष्मण की भावज हो
इल्लु वेल्लनि दानिवि एक्कडोस्तिवम्मानीवु	निकलनेवाली नहीं कभी घर से कैसे आयी हो
सीतम्मा एक्कडोस्तिवम्मा नीवु	सीता माई कहाँ कैसे आयी हो
अलनाडु मीरंता अडवुलकु पोइ नेटि	जंगल गये समय आप सब की
रामुल एतलन्नि कथा बड चेप्पु सीतम्मा	राम की व्यथाओं की कथा सुनाओ सीता माई
नीवोग कथ बड चेप्पु सीतम्मा	कथा सी सुनाओ तुम सीता माई
कथ लेमि चेप्पेनु ओअत्ता कैकम्मा	कथा क्या कहूँगी हे सास कैकेई माई
वेतलु चेप्पुकोनु वस्ति नेनिंक	बाधाएँ बखान करने आयीं
वेतलु चेप्पु कोनु वस्ति	बाधाएँ बखान करने आयी

अइवध्यकु तूर्पुन पगलु चीकटि कोन	अयोध्या के पूरब में होता अंधियारा दिन में जहाँ
पर दाच्चि मेन मुप्पै मूडु कोट्लु	कीकारण्य में तैंतीस करोड जहाँ
मुनुलुन्न स्थलमुन	मुनियाँ रहते जहाँ
कुदुरू चक्कनि मंचि गुन्न चिंतलि क्रिन्द	घनी फैली अच्छी इमली पेड के तने
खंडिंचि रम्मानि पलिके	कहा राम ने वध करके आने
नी कोडुकु तेगटार्चि रम्मानि पलिके	कहा बेटे तुम्हारे ने वध करके आने
अडवुलाकु नीवु पयान मैतेनु	निकले अगर जंगल को
नीवेन्ट पयनमेवरम्मा सीतम्म	सीता माई साथी तुम्हारा है कौन
नीवेंट पयन मेवरम्मा	साथी तुम्हारा है कौन
ननुगन्न नातंड्रि ना मरिदि लक्ष्मण	मेरा प्रिय भाई देवर लक्ष्मण
अडवुलाकु नावेंट पयान मैनाडु अत्ता	चलने जंगल मेरे साथ हे सास तैयार
नामरिदि पयान मैनाडत्ता	हे सास देवर मेरा तैयार
निनुगन्न नी तंड्रि नी मरिदि लक्ष्मण	तुम्हारा प्रिय भाई देवर लक्ष्मण अगर
अडवुलकु नीवेंट पयान मैतेनु	साथ तुम्हारे जंगल जाने को तैयार
प्राणानिकि भयमु लेदम्मा सीतम्म	सीता माई नहीं कोई चिंता प्राणों की
प्राणानिकि भयमु लेदम्मा	नहीं कोई चिंता प्राणों की
सूर्य बाणामु गंध मेल्ला तीसा	सूर्य बाण को पीस कर
चन्द्र बाणमु गंध मेल्ल तीसा	चंद्र बाण को पीस कर
नारायनुयेटि नरसिंह बाणमु	नारायणी नरसिंह बाण को पीसकर
गंध मेल्ल तीसा	घोल करके तीनों के
मूडु बाणालनु गंध मेल्ल तीसिनादि	तीनों बाणों को पीसकर घोल बनाकर
कैकम्म दोरिनाल्लकि वंचिनादि सीतम्म	छानकर कैकेई
तिरूवाक्कुने[8] पोसिनादि कैकम्म	भर दिया सीता माई की गोद कैकेई
तिरिगिचूडक पोइ रम्माना	और कहा जाने को बिना पीछे मुडे
वेनुकुलु मुन्दुलु वेन्नु लेन्नि गानि	आगे पीछे अगर बाल निकलने पर
मुन्दु नी कोडुकुकु मूडुनेल्ल	तुम्हारे बेटे को तीन महीनों में
पसुपुलाडि उंटननि चेप्पु ओ अत्त	हे सास कह दो बच्चा दे दूँगी मैं

ई माट मति नुंचमनेनु	कही बात मन में रखने की
मुंदरा लक्ष्मण वेनकने सीतम्म	आगे आगे लक्ष्मण पीछे सीता माई
एप्पुडनो बयलेल्लिनारू वाड्लिंक	कभी के निकले वे दोनों जंगल
एप्पुडनो बयलेल्लिनारू	कभी के निकले वे दोनों जंगल
लक्षलाकु तीरिन्न पच्च बंडल मीद	लाखों से भरे चौपाल पर
राजानु राजुलु रामुलुनु कूर्चोनि	राजा सामंतों के साथ राम बैठकर
पट्टि पंदेमु लाड्डुतुंड्रि	खेल रहा था दाँव शतरंज के
अक्कड पगिडि पंदेमु लाडु तुंड्रि	खेल रहा था वहाँ दाँव सोने के
वदिनकु शरणु सेस्ते अन्नय्य केमन्न	भावज को भाई से बचायेगा अगर
अक्करलु कलुगुननि	आयेगा गुस्सा समझकर
वदिननु शरणु सेयमाने लक्ष्मणा	कहा लक्ष्मण ने अपनी भावज से विदा लेने
वदिननु शरणुलु सेयामाना	कहा भावज से विदा लेने
तूर्पु मगिसाले" निलिचि ने सीतम्मा	सीता माई पूरब की ओर खडी हो गयी विदा लेने
रेन्डु चेतुलु जोडिंचि कोनितल्लि	जोडकर दोनों हाथ अपने सीता माई
अप्पुडेमनि पलुकुतादि सीतम्म	कहने लगी ऐसा सीता माई
अप्पुडेमनि पलुकुतादि	कहने लगी ऐसा सीता माई
शरणु शरणु राम शरणु शरणु राम	शरण शरण हे राम। शरण शरण हे राम।
शरणय्या राघवा शरणाग बिरुदु गलरामा	शरण शरण हे राघव। शरणागत वत्सल नामांकित हे राम।
नीकिंक शरणय्य श्री रघुरामा	शरण शरण हे श्री रघुराम
तूर्पुनुन्न रामुडप्पुडु	पूरब की दिशा में बैठा राम
दक्षिणानिकि मल्लिनाडु	तब दक्षिण की ओर मुडा राम
रामुडु दक्षिणानिकि मल्लिनाडु	तब दक्षिण की ओर मुडा राम
दक्षिणमु मगिसाले निलिचिने सीतम्म	तब खडी हो गयी दक्षिण की ओर सीता माई
रेन्डु चेतुलु जोडिंचि कोनि तल्लि	जोडकर अपने दोनों हाथ सीता माई

अप्पुडेमनि पलुकुतादि सीतम्मा	कहने लगी ऐसा सीता माई
अप्पुडेमनि पलुकुतादि	कहने लगी ऐसा सीता माई
शरणन्न वारुलकु मरणमेन्नडु लेदु	होगा नहीं मरण शरणापन्न का कभी शरण में तेरे
शरणन्न वारुलकु मरण मेन्नडु लेदु	होगा नहीं मरण शरणापन्न का कभी शरण में तेरे
शरणाग बिरुदु गल रामा	शरणागतवत्सल नामांकित हे राम
शरणय्य श्री रघुरामा	शरण शरण हे श्री रघुराम
दक्षिणान उन्न रामुडप्पुडु	दक्षिण की ओर मुडा राम
पडमटि के मल्लिनाडु	तब पश्चिम की ओर मुडा राम
रामुलु पडमटि के मल्लिनाडु	पश्चिम की ओर मुडा श्री राम
पडमटि मगिसाले निलचने सीतम्मा	तब खडी हो गयी पश्चिम की ओर सीता माई
रेंडु चेतुलु जोडिंचि कोनि तल्लि	जोडकर अपने दोनों हाथ सीता माई
अप्पुडेमनि पलुकुतादि सीतम्मा	कहने लगी ऐसा सीता माई
अप्पुडेमनि पलुकुतादि	कहने लगी ऐसा सीता माई
अखल कल संहार अंभोज शेखरुड	सब दुष्टों के संहारक हे कमल शिरोभूषण
अखल कल संहार अंभोज शेखरुड	सब दुष्टों के संहारक हे कमल शिरोभूषण
अंभोज राम शरणय्य नीकिंक	शरण शरण हे शेषशयन राम
अइवध्य राम शरणय्य	शरण शरण हे कोशलाधीश राम
पडमटीन उन्न रामुलप्पुडु	पश्चिम की ओर मुडा राम
उत्तरानिकि मल्लिनाडु रामुलु	तब उत्तर की ओर मुडा राम
उत्तरानिकि मल्लिनाडु	उत्तर की ओर मुडा राम
उत्तरपु मगिसाले निलचने सीतम्म	तब खडी हो गयी उत्तर की ओर सीता माई
रेंडु चेतुलु जोडिन्चि कोनितल्लि	जोडकर अपने दोनों हाथ सीता माई
अप्पुडेमनि पलुकुतादि सीतम्म	कहने लगी ऐसा सीता माई
अप्पुडेमनि पलुकुतादि	कहने लगी ऐसा सीतामाई
कन्नवारिकि राम विन्नवारिकि राम	देखनेवाले को हे राम सुननेवाले को हे

	राम
कन्नवारिकि राम विन्नवारिकि राम	देखनेवाले को हे राम सुननेवाले को हे राम
कालिग्य राम शरणय्य नीकिंका	कलियुग में नहीं और शरण हे राम
पट्टाभिराम शरणय्य	शरण शरण हे पट्टाभिराम
वदिने शरणलु जेस्ते अन्नय्य केम्मन्न	भाई से बचायेंगे अगर भावज को
अखखरम्लु कलुगुर्नानि शलविच्चि पंपमन्नाडु	आयेगा गुस्सा समझकर कहा लछ्मण ने आज्ञा देने को
लछ्मण शलविच्चि पंपमन्नाडु	कहा लछ्मण ने आज्ञा देकर भेजने को
विनवोई लछ्मण! विनकुल भूपाल	इक्ष्वाकु भूपाल सुनो भाई लछ्मण
सौमित्री कुमहार सोधकुल लक्ष्मणा	सुमित्रा सुत हे पटु लक्ष्मण
कायगदुर सीतनिंक लछ्मण	रख नहीं सकता रे सीता को
खंडिंचि रम्मानि पलिके	कहा राम ने लक्ष्मण से आओ वध करके सीता को
अइवध्यकु तूर्पुन पगटि चीकटि कोन	अयोध्या के पूरब में होता अंधियारा दिन में जहाँ
परदाच्चिमेन भण्पै मूडु कोट्ल मुनलुन्न	कीकारण्य में तैंतीस करोड जहाँ
स्थलमुन कुदुरु चक्कनि मंचि	मुनियाँ रहते जहाँ
गुन्न चिन्तलि क्रिन्द	घना फैली इमली पेड के तने
खंडिंचि रम्मानि पलका श्रीराम	कहा राम ने वध करके आने
तेगनर्चि रम्मानि पलका	कहा राम ने वध करके आने
कल्लुलेनि सीतनु इल्लेल्ल गोट्टिते	बेकसुर सीता को घर निकालने से
जनुलं मन्दुरोरन्ना	क्या समझेंगे जन भाई
मन साटि दोरलु एमन्दु रोरन्ना	क्या सोचेंगे राजा सामंत साथी भाई
ना सेंति बाणालु नी सेत उन्नाई	मुझ जैसे बाण हैं तुम्हारे साथ भी
नन्नु संपर लक्षुमण्णा नीविंक	वध करो मेरा लक्ष्मण
नन्नु संपर लक्षुमण्णा	वध करो मेरा लक्ष्मण
नन्नु संपि मीवदिने मीविद्दरु	मारकर मुझे तुम और तुम्हारी भावज

अइवध्य पट्नमुनु अतिवेगमुग	राज करो दोनों अयोध्या में सुख से
एलरन्ना मीरिंक अतिवेगमुग एलरन्ना	राज करो शीघ्र ही चैन से
अग्गै मंडेने लक्ष्मण पेरुमाल्लु	जला आग बनकर लक्ष्मण
विनवोई लक्षमण विनकुल भूपाल	इक्ष्वाकु भूपाल सुनो भाई लक्ष्मण
सौमित्री कुमार सोधकुल लक्षमण	सुमित्रा सुत हे पटु लक्ष्मण
करकर मनियेटि एर्रंग प्रोद्धु पोडिचालकु	भुरभुरी सी प्रभाती होने समय तक
कुनुगुड्लु रगतालु[10] तेच्चेने तेच्चिनावु	लाओ खून से लथी पुतलियों को
ताकुंटे लक्षमण राम बाणानिकि	नहीं तो लक्ष्मण राम बाण का
बानिगोर्रेवि सुम्मि ! नीवु लक्ष्मणा	हो जाओगे शिकार समझ लो तुम
मुंदरा लक्षमणा वेनकने सीतम्म	आगे आगे लक्ष्मण पीछे सीता माई
एप्पुडनो बयलेल्लिनारु वांड्लिंक	कभी के निकले वे दोनों जंगल
एप्पुडनो बयलेल्लिनारु	कभी के निकले वे दोनों जंगल
लक्षलकु तीरिन्न पच्चबंडलु दाटि	पार किया लाखों से भरे चौपाल को
बंगारु मालदाटिनारु[11] अइवध्य	पार किया अयोध्या के सोन महलों को
बंगारु मालदाटिनारु	पार किया सोन महलों को
एत्तैन मिद्देल्लुसित्तालु साविड्लु	ऊँची ऊँची इमारतें आराम धर्मशालाएँ
एप्पुडो दाटिनारु अइवध्य	पार किया कभी के अयोध्या
एप्पुडो दाटिनारम्मा	पार किया कभी के अयोध्या
गुर्रालु पंडेटि कुटव्वलु[12] दाटिरि	पार किया घुडशाल को
एनग साललु दाटिनारु अइवध्य	पार किया हाथी शाल को
एनग साललु दाटिनारु	पार किया हाथी शाल को
पसिवाल्लु आडेटि पंदिर्लु दाटिरि	पार किया बच्चों के खेल वितानों को
पसिडि गडपलु दाटिनारु अइवध्य	पार किया अयोध्या की सोन देहलियों को
पसिडि गडपलु दाटिनारु	पार किया सोन देहलियों को
पच्चंग पूसिन्न तंगेडलु दाटिरि	पार किया पीले पीले फूले पीले फूलों को
पसिमि तंगेड्डु दाटिनारु	पार किया पीले फूलों को
मुवन्नेलु दाटिनारु वाड्लिंक	पार किया दोनों ने पशुशाल को

पुल्लनेरड दाटिनारु	पार किया कट्टे जामुन को
कडल कडल सीतम्म वेसिन्न	आखिर सीता द्वारा लगाया
सिंगारपु वनमु दाटिरि अइवध्य	पार किया अयोध्या के शृंगारवन को
शृंगारवनमु दाटिरि	पार किया शृंगारवन को
अइवध्यकु तूर्पुन पगटि चीकटिकोन	अयोध्या के पूरब में होता अंधियारा दिन में जहाँ
परदाच्चि मेन मुप्पै मूडु कोट्लु मुनुलुन्न स्थलमुन	कीकारण्य में तैंतीस करोड मुनियाँ रहते जहाँ
कुदुरु चक्कनि मंचि गुन्नचिंतलि क्रिन्द	घनी फैली अच्छी ईमली पेड के तने
कूर्चुन्ड सीतम्म तल्लि वक्कड	बैठी सीता माई
चूसिन्न कन्नुलकु सुरिपामु सुरगपालु	बहाती अश्रुधारा बोली सीता माई
नन्नु संपरा लक्ष्मण्णा	मार दो मुझे लक्ष्मण
नीविंक संपिपोइ लक्ष्मण्णा	मार दो मुझे लक्ष्मण
निन्नु संपनु ना सेतुलाडवु तल्लि	हाथ मेरे अशक्त मारने तुझे माई
नेलतरो ने नेमि सेतु तल्लि	आता नहीं समझ में करूँ क्या माई
सीतरो ने नेमि सेतु	मैं क्या करूँ सीता माई
नडचिन्न काल्लल्ल बोब्बलु पोइनाइ	चलचल कर पैरों में फफोले निकल आये
नन्नु संपरा लच्चुमण्णा[13]	मार दो मुझे लक्ष्मण
नेनिंक नडुव लेनु लच्चुवण्णा	चल नहीं सकती मैं और लक्ष्मण
निन्नु संपनु ना सेतुलाडवु तल्लि	हाथ मेरे अशक्त मारने तुझे माई
नेलतरो ने नेमि सेतु नातल्लि	आता नहीं समझ में करूँ क्या माई
सीतरो ने नेमि सेतु	मैं क्या करूँ सीता माई
ऊपिन्न सेतलकु ऊडवलु दिगिनाइ	हिला हिलाकर हाथ ढीले पड गये
नन्नु संपरा लच्चुवण्णा नीविंग	मार दो मुझे लक्ष्मण
संपिपोरा लच्चुवण्णा	मार दो मुझे लक्ष्मण
निन्नु संपनु न चेतुलु आडवु तल्लि	हाथ मेरे अशक्त मारने तुझे माई
नेलतरो ने नेमि सेतु न तल्लि	आता नहीं समझ में करूँ क्या माई
सीतरो ने नेमि सेतु	मैं क्या करूँ सीता माई

नन्नु संपक नीवु अइवध्यकु पोतेनु	मारे बिना अगर मुझे चले जाओगे अयोध्या
नीवेंट नेनोत्तुनन्ना मी किद्दरिकि	आऊँगी मैं साथ तेरे वहाँ दोनों में
अतिपोरुले पेडदु नन्ना अन्नदम्मुलकु	बहुत झगडा कराऊँगी दोनों भाइयों में
सिगपोरुले पेडदुनन्ना	बहुत झगडा कराऊँगी भाइयों में
अग्गै मंडेने लक्ष्मणा पेरुमार्लु	जला आग बनकर लक्ष्मण
सूर्य बाणमु तोडिगिनाडु लक्ष्मणा	निकाला सूर्य बाण लक्ष्मण ने
काल्लकु खंडिंचि नाडु	काट दिया पैरों को
काल्लकु खंडिस्ते नातल्लि सीतम्मकु	काटने से सीता माई के पैरों को
काल्ल कडियालै मोलिस अडविलो	बने पैरों के कडे जंगल में
काल्ल गज्जलै मोलिसा	बने घुंघुरू पैरों में
ई सारि बाणमु दारि तप्पिन्दनि	सोचकर गया चूक अबकी बार बाण
तिरिगि बाणमु तोडिगिनाडु लक्ष्मण	निकाला फिर दूसरा बाण लक्ष्मण ने
चंद्र बाणमु तोडिगिनाडु	निकाला चंद्र बाण लक्ष्मण ने
चंद्र बाणमु तोडिगि लक्ष्मण पेरुमार्लु	निकालकर चंद्र बाण लक्ष्मण ने
नडुमुलाकु खंडिंचिनाडु ना तल्लि	तोडा सीतामाई की कमर को
नडुमुलाकु खंडिंचिनाडु	तोडा कमर को
नडुमुलाकु खंडिस्ते ना तल्लि सीतम्मकु	मारने से सीता माई की कमर पर
नडुमु डावै[14] निलिचिनादि अडविलो	बना कमर-कस-बंद जंगल में
नडुमु डावै निलिचिनादि	बना कमर-कस-बंद जंगल में
ई सारि बाणमु दारि दप्पिन्दन्टु	सोचकर गया चूक अब की बार बाण
तिरिगि बाणमु तोडिगिनाडु	निकाला फिर दूसरा बाण लक्ष्मण ने
ब्रह्म बाणमु तोडिगिनाडु	निकाला ब्रह्म बाण लक्ष्मण ने
ब्रह्म बाणमु तोडिगि लक्ष्मणा पेरुमार्लु	निकालकर ब्रह्म बाण लक्ष्मण
मेडलाकुनु खंडिंचिनाडु सीतम्म	काटा सीता माई का गला
मेडलके खंडिंचिनाडु	काटा गला
मेडलकु खंडिस्ते नातल्लि सीतम्मकु	गला सीता माई का काटने से
मेड हारमै निलिचा अडविलो	बना हार गले का जंगल में

मेड हारमै निलिचा	बना हार गले का जंगल में
कारुंड पडवेन्दु ना चेति बाणमुलकु	मेरे हाथों के बाणों से जंगल में
कट्टु पडितिवि सुम्मी सीतम्म	हो गयी शिकार तुम सीता माई
कट्टु पडितिवि सुम्मी नीवु	हो गयी शिकार तुम सीता माई
नन्नु संपक नीवु अइवध्यकु पोतेनु	मारे बिना मुझे अगर चले जाओगे अयोध्या
नीयेंट ने नोत्तु नन्ना	आऊँगी मैं साथ तेरे वहाँ दोनों में
मी अन्न दम्मुलकु सिगपोरुले पेडदुनन्ना	बहुत झगडा कराऊँगी दोनों भाइयों में
अलनाडु मनमंता अडवुलक पोइनपुडु	उस समय हम सब जंगल जाने पर
नीवल्ला नेर मेमम्मा सीतम्म	क्या कसुर था तुम्हारा सीता माई
नीवल्ल नेर मेमम्मा	क्या कसुर था तुम्हारा सीता माई
नीयन्न पोगाने नीवेल्लि पोतिवि	तुम भी गये जाने पर तुम्हारा भाई
मानि[15] साटिन उन्डा ना तंड्रि	था वह पेड के आड में हे भाई
मानि साटिन उंडि माय रावणुगाडु	माया रावण ने पेड के आड में रहकर
श्रीराम गुरु धर्म कोदंड भिक्षन ना तंड्रि	कहा श्रीराम गुरू धर्म कोदंड भिक्षा
श्रीराम गुरु धर्म कोदंड भिक्षन्टे	कहने से श्रीराम गुरू धर्म कोदंड भिक्षा
भिक्ष में लेवंटि ना तंड्रि	कहा मैं ने नहीं भिक्षा
भिक्ष में लेवंटे मोक्षमे लेदनेनुना तंड्रि	नहीं भिक्षा नहीं मोक्ष कहा हे भाई
पत्रेल्ल सिटील्लो[16] पंड्लु बेट्टुकोनि	पत्तों में फल भरकर
मूल द्वारानिकोस्ति ना तंड्रि	मूलद्वार के पास आयी हे भाई
मूल द्वारमु वच्चि मुग्गु पेट्टनुपोते	मूलद्वार से झुककर भिक्षा देने लगी तो
मुट्टेदे लेदनेनु ना तंड्रि	कहा नहीं लूँगा हे भाई
तलवाकटि[17] काडोच्चि तग्गि बेट्टनु पोते	सदर दरवाजे से झांककर भिक्षा देने लगी
तगिलेदे लेदनेनु नातंड्रि	तो कहा नहीं छूऊँगा हे भाई
वेरंगि नेलदाटि वेगटि कोल्ल कोस्ते	आंगन में आकर भिक्षा देने लगी तो
गाज शूल मेसे नातंड्रि	गाजा शूल डाला हे भाई
गाज शूल मेसि गड्डा बेल्लगिंचि	गाजा शूल से ढेला उखाडकर हे भाई

रथ्मु पै निलुपेनु ना तंड्रि	रख लिया रथ पर हे भाई
चेट्लु चेट्लुंटेनु चेट्लु बलुकक पाया	पेड पेड कहने से पेड कह नहीं पाये
वृक्षाले पलुकावु ना तंड्री	कुछ कह नहीं पाये पेड हे भाई
आडि तप्पनिवाडु आ गरूट मन्तुडु[18]	वचन न तोडनेवाले गरुड ने
अड्डमु[19] लोच्चेनु ना तंड्री	रास्ता रोक लिया हे भाई
युद्धमुले चेसेनु ना तंड्री	किया युद्ध हे भाई
माया चेसिवान्नि माय रावणुन्नि	माया करने वाले उस माया रावण से
न्यायमुलु अडिगेनु ना तंड्री	माँगा न्याय हे भाई
माया चेसिवाडु माय रावणुगाडु	माया करके उस माया रावण ने
सिटिकि वेलुनु चूपा ना तंड्री	दिखाई उंगली हे भाई
आडि तप्पनिवाडु आ गरूट मन्तुडु	वचन न तोडनेवाला वह गरुड
उप्पोहबुंन लेचा ना तंड्री	उड गया गुस्से में हे भाई
माया चेसिवाडु माय रावणु गाडु	माया करके माया रावण ने
सिटिकि वेलुनु एगर कोट्टा नातंड्री	छिगुनी उडा दी हे भाई
आडितप्पनिवान्नि आ गरूट मन्तुन्नि	वचन न तोडनेवाले गरुड ने
न्यायमु लडिगेनु ना तंड्री	माँगा न्याय हे भाई
आडि तप्पनिवाडु आ गरूट मन्तुडु	वचन न तोडनेवाले गरुड ने
आरूजब्बलु चूपा ना तंड्री	दिखायी भुजाएँ हे भाई
माया चेसिवाडु माया रावणुगाडु	माया करके माया रावण
उक्को हंबुन लेचा ना तंड्री	हांफा गुस्से में हे भाई
आडि तप्पनिवानिकि आ गरूट मन्तुनिकि	वचन न तोडनेवाले गरुड की
आरूजब्बलु नाटा न तंड्री	भुजाएँ तोडी हे भाई
पंदेमुने गेलुवु आ गरूट मन्तुडु	हारा गरुड दाँव पर दाँव
पाराड सागानु ना तंड्री	तडपने लगा गिरकर नीचे
गरूट मन्तुनि चूसिन चिटिकि वेलुनु चूसिन	देखा गरुड को और देखा उसकी छिगुनी को
ना पुण्यमु नेनेरुग ना तंड्री	और कुछ नहीं जानती हे भाई

नन्नु संपक नीवु अइवध्यकु पोतेनु	मारे बिना मुझे अगर चले जाओगे अयोध्या
नीयेंट ने नोत्तुनन्ना	आऊँगी मैं साथ तेरे वहाँ दोनों में
मीविद्दरिकि अति पोरुले पेडदुनन्ना	बहुत झगडा कराऊँगी दोनों में
अति पोरुले पेडदुनन्ना ने निंका	बहुत झगडा कराऊँगी दोनों में
सिगपोरुले पेडदुनन्ना	बहुत झगडा कराऊँगी दोनों भाइयों में
अग्गै मन्डेने लक्ष्मणा पेरुमार्लु	जला आग बनकर लक्ष्मण
अग्गि बाणमु तोडिगिनाडु लक्ष्मणा	निकाला आग का बाण लक्ष्मण
राम बाणमु तोडिगिनाडु	निकाला राम बाण लक्ष्मण
याप कायन्टोडु बाणाल कुशराजु	नीम का कच्चा फल जैसा कुश राजा
गर्भल चाटुन गेरू गेरूनतिरूग सागा कुश राजु	खखारता घूमने लगा पेट के अंदर कुश राजा
वोक्क बारि गाइ चिन्नय्य	बचाओ चाचा बस एक बार
नेनिंग नन्नोक्क बारि गासेनु	कहा लक्ष्मण ने बचाऊँगा मैं तुम्हे एक बार
एत्तिन बाणमु एत्तिनट्रले पेट्टि	चढाये बाण चढा ही छोडकर
कस्तूरी मेघमडवेसा लक्ष्मणा	मारा लक्ष्मण ने कस्तूरी मृग को
कनुगुड्ल रगतालु तीसा	निकाली खून से लथी पुतलियों को
कनुगुड्ल रगतालु दोन्नेल्लो पेट्टु कोनि	रखकर दोनों में खून से लथी पुतलियों को
सीतम्म मुस्तीवुलु[20] दोन्नेल्लो पेट्टुकोनि	रखकर दोनों में सीता माई की चीजों को
तिरुगु बाटलु पट्टिनाडु लक्ष्मणा	लौटने लगा वापस लक्ष्मण
अइवध्य बाट पट्टानु	अयोध्या रास्ता नापने लगा लक्ष्मण
अइवध्यकु तूर्पुन पगटि चीकटिकोन	अयोध्या के पूरब में होता अंधियारा दिन में जहाँ
परदाच्चिमेन मुप्पैमूडु कोट्लु मुनुलुन्न स्थलमुन	कीकारण्य में तैंतीस करोड मुनियाँ रहते जहाँ

कुदुरु चक्कनि मंचि गुन्न चिंतलि क्रिन्द
कूर्चुंडा सीतम्म तल्लि
वक्कड कूर्चुन्डा सीतम्म तल्लि

घनी फैली अच्छी ईमली पेड के तने
बैठ गयी सीता माई
वहाँ बैठ गयी सीता माई

लक्षलकु तीरिन्न पच्च बंडल मीद
राजानाराजुलु रामुलुनु गूर्चोनि
पट्टि पंदेमाडु तुंड्रि इक्कड
पगिडि पंदामाडु तुंड्रि
करकर मनियेटि एर्र्रंग पोद्दु पोडिसालकु[21]
कनिगुड्ल रगतालु अन्न एदुट तेच्चि पेट्टा लक्ष्मण

लाखों से भरे चौपाल पर
राजा सामंतों के साथ राम बैठकर
खेल रहा था दाँव शतरंज के
खेल रहा था वहाँ दाँव सोने के
भुरभुरी सी प्रभाती होने समय तक
रख दिया लक्ष्मण ने भाई के सामने खून से लथी पुतलियों को

अन्न एदुट तेच्चि पेट्टा
कनुगुड्ल रगतालु कन्नुलारा चूसि
गोडु गोडुन दुःख सागे श्रीराम
गोट नीरुलु चिम्म सागे

भाई के सामने रख दिया
देखकर आँख भर खून से लथी पुतलियों को
रोने लगा श्रीराम फूट फूटकर
बहाने लगा अश्रु धारा

नापापानि कन्नारा लच्चुवण्णा नीपाप मधिकमाय्यान
संपि रम्मन्न सीतिनु लच्चुवण्णा
बासियाल राक पोतिवि
नापापानि कन्नारा लच्चुवण्णा
नी पापमधिक मायान
अरटि बोदलांटि तोडलु लच्चुवण्णा
अडवि पालु एट्ला चेस्तिवि
ना पापानि कन्नारा लच्चुवण्णा
नी पाप मधिक मायन

मेरे पाप से ज्यादा तेरा पाप हो गया लक्ष्मण
मारने को कहा सीता को लक्ष्मण
बचाकर क्यों नहीं आये लक्ष्मण
मेरे पाप से ज्यादा लक्ष्मण
तेरा पाप हो गया
केले के तने जैसी जांघे लक्ष्मण
मिला दिया जंगल में कैसे
मेरे पाप से ज्यादा लक्ष्मण
तेरा पाप हो गया

संपि रम्मन्न सीतनु लच्चुवण्णा	मारने को कहा सीता को लक्ष्मण
बासियाल राक पोतिवि	बचाकर क्यों नहीं आये
ना पापानि कन्नरा लच्चुवण्णा	मेरे पाप से ज्यादा
नी पाप मधिग मायन	तेरा पाप हो गया लक्ष्मण
चेरकु तुंट लंटि चेतुलु लच्चुवण्णा	ईख के टुकडे जैसे हाथ लक्ष्मण
चेट्रल पालु एट्रला चेस्तिवि	छोडकर जंगल में कैसे आये लक्ष्मण
ना पापानि कन्नरा लच्चुवण्णा	मेरे पाप से ज्यादा लक्ष्मण
नी पाप मधिग मायेन	तेरा पाप हो गया लक्ष्मण
संपि रम्मन्न सीतनु	मारने को कहा सीता को
बासियाल राक पोतिवि	बचाकर क्यों नहीं आये लक्ष्मण
पेसर कायवंटि पेदवुले लच्चुवण्णा	मूँग के कच्चे फल जैसे ओंट लक्ष्मण
सेदल पालु एट्रला चेस्तिवि	दीमकों को कैसे छोड आये
ना पापानिकन्नारा लच्चुवण्णा	मेरे पाप से ज्यादा लक्ष्मण
नी पाप मधिगमायेन	तेरा पाप हो गया लक्ष्मण
संपिरम्मन्न सीतनु लच्चुवण्णा	मारने को कहा सीता को
बासियाल राक पोतिवि	बचाकर क्यों नहीं आये
संपुते माना तम्मुडा लक्ष्मणा	ठीक है मारा अगर हे भाई लक्ष्मण
या बाणान गूल नोइ नीवदिन	गिर पडी किस बाण से बताओ रे।
या बाणान गूलनोइ'	गिर पडी किस बाण से बताओ रे।
सूर्य बाणमु दप्पा चंद्रबाणमुदप्पा	सूर्य बाण गया बेकार चंद्रबाण गया बेकार
नारायणु ननुयेटि नरसिंह बाणमु	नारायणी नरसिंह बाण भी गया बेकार
मूड्डु बाणालु दप्पा	तीनों बाण गये बेकार
राम बाणानिकि बान गोर्रेनु चेस्तिनन्ना वदिननु	रामबाण को भावज शिकार हो गयी हे भाई
बान गोर्रेनु चेस्तिनन्ना	हो गयी शिकार बाण का हे भाई
संपुते माना तम्मुड लक्ष्मणा	ठीक है मारा अगर हे भाई
कूलता मीवदिन एमन्टा कूलनन्ना	क्या कहती गिर पडी तेरी भावज
अडविलो एमंट कूलनन्ना	जंगल में क्या कहती गिर पडी तेरी भावज

कोटि वेइ जन्मलु एत्ति पुट्टिन गानि	शत करोड जन्म होने पर भी
गोइन्दुल[22] भार्यननि कूलओअन्न	गोविन्द की ही भार्या कहती गिर पडी हे भाई
गोइन्दुल भार्यननि गूल ओ अन्न	गोविन्द की ही भार्या कहती गिर पडी हे भाई
लक्ष वेइ जन्मलु एत्ति पुट्टिन गानि	हजार लाख जन्म होने पर भी
लक्ष्मणा वदिननि गूला ओ अन्ना	लक्ष्मण की ही भावज कहती गिर पडी हे भाई
लक्ष्मणा वदिननि गूल	लक्ष्मण की ही भावज कहती गिर पडी हे भाई
एन्नेन्नि जन्ममुलु एत्ति पुट्टिन गानि	कितने भी जन्म होने पर भी
रामुलुकु भार्यननि गूल ओ अन्ना	राम की ही भार्या कहती गिर पडी हे भाई
रामुलुकु भार्यननि गूल	राम की ही भार्या कहती गिर पडी हे भाई

संपुते माना तम्मुड	ठीक है मारा अगर हे भाई लक्ष्मण
बोन्देन्न चूपुदुवु पारा लक्ष्मणा	देह दिखाने आओ रे लक्ष्मण
नेनिंक ब्रतिकिन्चि तेच्चुकुंडेनु	मैं ले आऊँगा उसे जिलाकर
सीतम्म कंडलु तवुलु तिंटायनि	सीतामाई की मांसगीधड खायेंगे समझकर
कट्टा कंप एरि काल बेट्टि वस्तिनन्ना	जलावन इकट्टा करके आया जलाकर हे
अडविलो काल पेट्टि वस्तिनन्ना	भाई
काल्चोस्ते माना तम्मुड लक्ष्मणा	जंगल में आया जलाकर हे भाई
बूडिदन्ना चूपुदुवु पारा	हे भाई लक्ष्मण ठीक है जलाया अगर
नेनिंक ब्रतिकिंचि तेच्चु कुन्डेनु	राख तो दिखाने आओ रे
	मैं ले आऊँगा उसे जिलाकर

विनवोइ लक्ष्मणा विनकुल भूपाल	इक्ष्वाकु भूपाल सुनो भाई लक्ष्मण
सौमित्री कुमहार सोधकुल लक्ष्मणा	सुमित्रा सुत हे पटु लक्ष्मण
इंक एवरु गानेरु सीत जाड इंक एवरु तेल्पेरु	अब कौन बतायेगा सीता की खबर कौन जानेगा सीता को
ब्राम्मलनु[23] पिलनंपु वेदमुलु चदिविंचु	बुलाओ ब्राह्मणों को पढाओ वेदों को

सीतउन्न स्थलमु गनि ओरन्ना	देखकर सीता रहने का स्थान हे भाई
सीतउन्न स्थलमु गनिरे	देखकर सीता रहने का स्थल
अलविगान्नि वान्नि आञ्जनेय बन्टुनु	बुलाकर अतुलित बलशाली सेवक हनुमान को
रामुवाडकु पंपुताडु	भेजा राम ने ब्राह्मणों के पास
रामुलु रामु वाडकु पंपुताडु	भेजा राम ने ब्राह्मणों के पास
हनुमन्तुनि कन्न मुन्दु	हनुमान से पहले
लक्ष्मण पेरुमार्लु ब्राह्मण वाडकु पोइनाडु	गया लक्ष्मण ब्राह्मण मुहल्ला
लक्ष्मण ब्राह्मण वाडकु पोइनाडु	गया लक्ष्मण ब्राह्मण मुहल्ला
विनवोइ ओइ एल्लमबोट्लु ओइ पुल्लमबोट्लु	सुनो रे एल्लमबोट्लु रे पुल्लमबोट्लु
हनुमंतुडोस्ताडु मिम्मल्नि पिलुस्ताडु	आयेगा हनुमान बुलायेगा तुम्हे
रामु बहु हेच्चुवाडु रामबहु दोड्डवाडु	राम बहुत घमंडी राम बहुत स्वार्थी
पनुलु वद्दनि पल्कारि मीरिंका	कहिए उनकी नौकरी नहीं चाहिए
पनुलु वद्दानि पलकारि	उनकी नौकरी नहीं चाहिए
अंत मात्रमु चेप्पि अन्न एदुरु वच्चिनाडु लक्ष्मणा	कहकर इतना भाई के सामने आया लक्ष्मण
अन्न एदुरुगा वच्चिनाडु	भाई के सामने आया लक्ष्मण
अलविकानिवाडु आञ्जनेय बन्टु	अतुलितबलशाली सेवक हनुमान
ब्राह्मण वाडकु पोइनाडु	गया ब्राह्मण मुहल्ला
हनुमंतुडु ब्राह्मण वाडकु पोइनाडु	हनुमान गया ब्राह्मण मुहल्ला
ओरि एल्लम बोट्लु ओरि पुल्लम बोट्लु	रे एल्लम बोट्ल रे पुल्लम बोट्लु
रामु पिलुस्ताडु रांडय्य मिम्मलनु	बुलाया राम ने तुम्हे आओ रे
रामु पिलुस्ताडु रांडय्य	बुलाया राम ने तुम्हे आओ रे
रामु बहु हेच्चुवाडु राम बहु दोड्डवाडु	राम बहुत घमंडी राम बहुत स्वार्थी
पनुलु वद्दनि पलकिरि ब्राह्मलु	कहा ब्राह्मणों ने नौकरी राम की नहीं चाहिए
पनुलु वद्दनि पलकिरि	नौकरी नहीं चाहिए
अलविकानिवाडु आञ्जनेय बन्टु	अतुलित बलशाली सेवक हनुमान

तिरुगु बाटलु पट्टिनाडु	लौट ने लगा वापिस
हनुमन्तुडु रामु बाटलु पट्टिनाडु	हनुमान पहुँचा राम के पास
विनवय्या ओ अइवध्य रामुलु	सुनोजी हे कोशलाधीश राम
सीतम्म पोताने ब्राह्मलु	जाते ही सीता के ब्राह्मणों ने
मनकिंक माट इनक पोइरय्या ओ राम	नहीं सुनी हे राम हमारी बात
मनकिंक माट इनक पोइरय्य	नहीं सुनी हमारी बात
रामु बहु हेच्चु वाडु रामु बहु दोड्डवाडु	राम बहुत घमंडी राम बहुत स्वार्थी
पनुलु वद्दनि पलकीरि ब्राह्मलु	कहा ब्राह्मणों ने नौकरी नहीं चाहिए
पनुलु वद्दनि पलकीरि	कहा नौकरी नहीं चाहिए
अग्गै मंडेने लक्ष्मण पेरुमाल्लु	जला आग बनकर लक्ष्मण
हारी बाटलु पट्टिनाडु लक्ष्मण	रास्ता नापने लगा लक्ष्मण
ब्राह्मण वाडकु पोइनाडु	गया ब्राह्मण मुहल्ला
विनंडय्या ओ ब्राह्मणोत्तमुलारा	सुनोजी हे ब्राह्मणोत्तम
वेंडि पुस्काल[24] कट्ट वेल्लगने चदवंडि	जाते ही पढिए चांदी का पुस्तक-पुलिंदा
पसिडि पुस्काल कट्ट वेल्लगने चदवंडि	जाते ही पढिए सोने का पुस्तक-पुलिंदा
एडेडु कारणालु एल्लगने चदवंडि	जाते ही बनाइए सात सात बहाने
सीत युन्न स्थलमुगनिरि मीरिंक	जान लो सीता रहने का स्थान
सीत लेदनि पलकारि	बताइए नहीं है सीता
सीत उन्नदनि चेप्पिनट्लइते मिम्मुल्नु	बतायेंगे अगर सीता है तो तुम्हें
वेगेतु मीमान्यालु वे गेतु	रद्द कराऊँगा तुम्हारे जागीर और पीटूँगा
मीजुट्टु पीकिन्तुनन्ना नेनिंक	बाल खिंचवाऊँगा तेरे
ऊरेटि गट्टिन्तुनन्ना	जुलूस निकालूँगा रे
अंतमात्रमु चेप्पि लक्ष्मणा पेरुमार्लु	कहकर इतना लक्ष्मण
अन्न एदुरु जोच्चिनाडु लक्ष्मणा	भाई के सामने आया लक्ष्मण
अन्न एदुरु जोच्चिनाडु	भाई के सामने आया लक्ष्मण
वेंडि पुस्काल कट्ट चेतने पट्टिरि	पकडे हाथ में चांदी का पुस्तक - पुलिंदा

पसिडि पुस्काल कट्ट संकल्लो बेट्टिरि	रखे कांख में सोने का पुस्तक-पुलिंदा
राम वाडल कोच्चिनारु ब्राह्मलु	राम का मुहल्ला आये ब्राह्मण
राम वाडल कोच्चिनारु	राम का मुहल्ला आये ब्राह्मण
विनवय्या ओ अइवध्य रामुलु	सुनोजी हे कोशलाधीश राम
पंचांग चेपोच्चिनामु मेमिंक	पंचांग बांचने आये हम
भागवतमु चेप्पोच्चिनामु	भागवत बांचने आये हम
वेंडि पुस्काल कट्ट वेल्लगने चदिविरि	जाते ही पढा चांदी का पुस्तक पुलिंदा
पसिडि पुस्काल कट्ट बागु गने सदिविरि	पढा अच्छा सोने का पुस्तक पुलिंदा
एडेडु कारणालु वेल्ल गने सदिविरि	गिना जाते ही सात सात बहाने
सीत उन्न स्थलमु गनिरि ब्राह्मलु	जान लिया सीता रहने का स्थान ब्राह्मण ने
सीत लेदनि पल्कीरि	कहा नहीं है सीता
गोड चाटुकु पोइ पोइ वाज्यन्तमु	दीवार के पीछे जाकर शरीर भर
नर वेन्टुकलेकुंड	काले बालों को सफेदी रंग कर
आ रूपमु इड्सिनाडु लक्ष्मणा	बदला अपना वेश लक्ष्मण ने
ब्राह्मण वेशमु वेसिनाडु	लगाया ब्राह्मण वेश लक्ष्मण ने
वेंडि पुस्काल कट्ट चेतने बट्टेनु	लिया हाथ में चांदी का पुस्तक पुलिंदा
पसिडि पुस्काल कट्ट संकल्लो पेट्टेनु	रखा कांख में सोने का पुस्तक पुलिंदा
रामु एदुरु जोच्चिनाडु ब्राह्मडु	आया राम के सामने ब्राह्मण
रामु एदुरु जोच्चिनाडु	आया राम के सामने ब्राह्मण
या देश परुडवो या राजु बिड्डवो	कौन देशवासी हो किस राजा के बेटे हो
एक्कडोस्तिवय्या नीवु ब्राह्मण	ब्राह्मण तुम कहाँ आये हो
एक्कडोस्तिवय्या नीवु	तुम कहाँ आये हो
सूर्यवंशीय राजुलाकु मेमु	सूर्यवंश के राम को हम
पंचांगमु चेप्पोच्चिनामु	पंचांग बांचने आये हम
मेमिंक भागवतमु चेप्पोच्चिनामु	भागवत बांचने आये हम
इंतकन्ना नाकु मंचि ब्राह्मणुडिंक	इससे बढकर अच्छा कोई मिलेगा नहीं ब्राह्मण
चिक्कडने चिक्कडनि पंचांगम् चेप्पमन्नाडु	मिलेगा नहीं सोचकर कहा पंचांग बांचने

	को
रामुलु ब्रागवतमु चेप्पमन्नाड्डु	कहा राम ने पंचांग बांचने को
वेंडि पुस्काल कट्ट वेल्लगने चदिवेनु	पढा जाते ही चांदी का पुस्तक-पुलिंदा
पसिडि पुस्काल कट्ट बागुगने चदिवेनु	पढा अच्छा सोने का पुस्तक पुलिंदा
एडेड्डु कारणालु एल्लगने सदिवेनु	गिना जाते ही सात सात बहाने
सीत उन्न स्थलमु गनने ब्राह्मणुड्डु	जान लिया सीता रहने का स्थान ब्राह्मण ने
सीत लेदनि पल्कानु	कहा नहीं है सीता
मुंड रात नीकु लेदुरा श्री राम	विधुर का जीवन नहीं तम्हें श्री राम
मुत्तइदु रालु उन्नादि श्री राम	सुहागिन है श्री राम
मुत्तइदु रालु उन्नादि	सुहागिन है श्री राम
सीतकुनु पति सीत बंगारु कनक सीतनु चेसि	सीता के स्थान पर कनक सीता बनाकर
वीथिलो निलपेट्टि मूर्छकाल्लु पोसि	खडा करके गली में प्राण उसमें डालकर
पेंड्लि चेमुकोमनि पल्का ब्राह्मणुड्डु	कहा ब्राह्मण ने विवाह करने को
पेंड्लि चसुकोमनि पल्का	कहा ब्राह्मण ने विवाह करने को
नी पेंड्लि तोडुकने बीदलइ पेड्लिंड्लु	तेरे विवाह के साथ गरीबों के विवाह
लक्षवेइ पेंड्लिल्लु दानमुलु	हजार लाख विवाहों का दान
चेइंच्च मनेनु ब्राह्मणुड्डु	करने को कहा ब्राह्मण ने
दानमुलु चेइंच्च मनेनु	कहा दान कराने को
सीता मुस्तीवुलु ब्राह्मलकुगीन	अगर सीता की चीजें ब्राह्मणों को
दानालु जेस्तेनु सीतन्नु चंपिन	दान करोगे तो सीता को मारने का
शिशु हत्य कलसि पोननेनु ब्राह्मड्डु	कहा ब्राह्मणों ने शिशु-हत्या पाप दूर होगा
शिशु हत्य कलसि पोननेनु	शिशु हत्या पाप दूर होगा
इतकन्ना नाकु मंचि ब्राह्मड्डु	इससे बढकर कोई अच्छा ब्राह्मण
मिक्कडे चिक्कडनि सीत मुस्तीवुलु ब्राह्मलकु	मिलेगा नहीं समझकर सीता की चीजें ब्राह्मण को
रामुलु दानमुल चेसिनाड्डु	किये दान राम ने
रामुलु सीतनु चंपिन्न शिशुहत्या	समझा राम ने मारने का पाप सीता को
समसि पोननेनु रामुलु	समझा राम ने शिशु हत्या पापटल गया

शिशु हत्या कलसि पोननेनु	समझा राम ने शिशु हत्या पाप टल गया
सीत मुस्तीवुलु तीसुकोनि ब्राह्मडु	सीता की चीजें लेकर ब्राह्मण
सीत मालकोच्चिनाडु ब्राह्मडु	पहुँचा सीता महल ब्राह्मण
सीत मालुलो दासि पेट्टे	छिपा दिया उन्हें सीता महल में ब्राह्मण
सीत मुस्तीवलु सीत मालुलो दाचि	सीता की चीजें सीता महल में छिपाकर
गोड चाटुकु पोइ पै वाज्यन्तमु	दीवार के पीछे जाकर शरीर भर
तेल्ल वेंटुकलेकुंड	सफेद बालों को काला रंगकर
आ रूपमु इडिसिनाडु ब्राह्मडु	बदला अपना वेश ब्राह्मण ने
लक्ष्मणुडै निल्चि नाडु	रहा बनकर लक्ष्मण

विनवोइ लक्ष्मण विनकुल भूपाल	इक्ष्वाकु भूपाल सुनो भाई लक्ष्मण
सौमित्री कुमहार सोधकुड लक्ष्मण	सुमित्रा सुत हे पटु लक्ष्मण
यादेश परुडो या राजु बिड्डो	कौन देशवासी किस राजा का बेटा
एंत बागुगा चेप्पा तम्मुडा	कितना अच्छा बताया रे भाई
पंचांगमु एंत विनयमुगा चेप्पा तम्मुडा	पंचांग कितना अच्छा बताया रे भाई
या देश परुडन्ना या राजु बिड्डो	कौन देशवासी किस राजा का बेटा हे भाई
एंत बागुग जेप्पिनाडु पंचांगमु	पाचांग कितना अच्छा बताया
एंत विनयमु चेप्पिनाडु	कितना अच्छा बताया
वेंडि पुस्काल कट्ट एल्लगाने सदिवेनु	पढा जाते ही चाँदी का पुस्तक-पुलिंदा
पसिडि पुस्काल कट्ट बागुगने सदिवेनु	पढा अच्छा सोने का पुस्तक-पुलिंदा
एडेडु कारणालु एल्लगने सदिवेनु	गिना जाते ही सात सात बहाने
सीत उन्न स्थलमु गनेनु ब्राह्मडु	जान लिया सीता रहने का स्थान ब्राह्मण ने
सीत लेदनि पल्कानु	कहा नहीं है सीता
मुंडरात नीकु लेदुरा श्रीराम	विधुर का जीवन नहीं तुम्हें श्रीराम
मुत्तइदु रालु उन्नादि श्री राम	सुहागिन है श्री राम
सीतकुनु पति सीत बंगारु कनक सीतनु	सुहागिन है श्री राम
जेसि वीथिल्लो निलबेट्टि मूर्छ काललु	सीता के स्थान पर कनक सीता बनाकर
पोसि	खडा करके गली में प्राण उसमें डालकर
पेंड्लि चेस्कोमानि पल्का ब्राह्मडु	कहा ब्राह्मण ने उससे विवाह करने को

पेंड्लि चेस्को मानि पल्का	कहा उससे विवाह करने को
नी पेंड्लि तोडुता बीदलइ पेंड्लिन्ड्लु	तेरे विवाह के साथ गरीबों के विवाह
लक्षवेइ पेन्ड्लिन्ड्लु दानमुलु	हजार लाख विवाहों का दान
चेइंच मनेनु लक्ष्मण	कराने को कहा ब्राह्मण ने लक्ष्मण
दानमुलु चेइंचमनेनु	दान कराने को कहा लक्ष्मण
सीता मुस्तीवुलु ब्राह्मलकु नेनु	अगर मैं सीता की चीजें ब्राह्मणों को
दानालु जेस्तेनु सीतन्नु चंपिना	दान करने से सीता को मारने का
शिशु हत्य कलसि पोननेनु लक्ष्मण	शिशु हत्या पाप टल जायेगा लक्ष्मण
शिशु हत्य कलसि पोननेनु	शिशु हत्या पाप टल जायेगा लक्ष्मण
इंतकन्ना नाकु मंचि ब्राह्मणुडिंक	इससे बढकर कोई मुझे अच्छा ब्राह्मण
चिक्कडने चिक्कडनि सीतामुस्तीवुलु	मिलेगा नहीं समझकर सीता की चीजें
ब्राह्मलकु तम्मुडा दानमुलु जेसिनानु	रे भाई ब्राह्मणों को दान किया
लक्ष्मणा सीतन्नु चंपिन्न शिशु हत्य	सीता को मारने का शिशु हत्या पाप हे लक्ष्मण
कलसि पोनंटि लक्ष्मण	समझा टल गया हे लक्ष्मण
शिशु हत्य बरचि पोनंटि	समझा शिशु हत्या पाप टल गया हे लक्ष्मण
या देश परुडो या राजु बिड्डो	कौन देशवासी किस राजा का बेटा
एंत बागुग चेप्पिनाडु ओ अन्ना	कितना अच्छा बताया हे भाई
पंचांगमु एंत विनयमु चेप्पिनाडु	पंचांग कितना अच्छा बताया हे भाई
आलमूरु[25] अंगट्लो अग्गि तेप्पिन्चेनु	मंगाकर आग आलमुर दुकान से
कोडुमूरु[26] अंगट्लो कोलिमि तेप्पिन्चेनु	मंगाकर भट्टी कोडुमुर दुकान से
मुंचि मूडु दोसिल्लु कोलिमि लोनेपोसि	तीन मुट्ठी भर भट्टी में डालकर
सीतकुनु पति सीत बंगारु कनक सीतनु	सीता के स्थान पर कनक सीता बनाकर
जेसि वीथिलो निलबेट्टि मूर्छकाललुपोसि	गली में खडा करके उसमें प्राण डालकर
नडिपिंचि चूसिनाडु लक्ष्मण	देखा लक्ष्मण ने उसे चलाकर
नडिपिंचि चूसिनाडु	देखा उसे चलाकर

तनपेंड्लि तोडुता बीदलवि पेंड्लिन्ड्लु	अपने विवाह के साथ गरीबों के विवाह
लक्षवेइ पेंड्लिलुंड्लु दानमुलु चेइंचुताडु	कराने लगा दान हजार लाख विवाह
लक्ष्मण दानमुलु चेइंचुताडु	लक्ष्मण दान कराने लगा हजार लाख विवाह
एल्लु कलन्दुन चाट कल्लु तल्लुबाल चिन्न बालल्	विवाह राम का बहुत ही सुंदर अति मनोहर
नाल्गु मुद्दु नाल्जिलिगेडि गोरु	विवाह में जुटे लोग मचाये अतिशोर
मल्लु कट्टेटि सोगसु	सौंदर्य राम का अतिमोहक
कंड्लु पेट्टेटि तीरु	आँखे राम की अतिमोहक
मर्लु सेर्लक मुद्दु	शोभित मुद्रा राम की अतिमोहक
गाजुल्लु वेसेटि संदनालु	नाचने लगी भीड अमित तोष से
पोसेटि तलंब्रालु	डालनेवाली अक्षत
चूसेटि नारी मणुलु एंतों इंतै	देखनेवाली नारियाँ बहुत ही अनोखा
एंतो इंतै उन्नादि रामुल पेंड्लि	विवाह राम का बहुत ही अनोखा
एंतो संबर मैनदि	बहुत ही चित्ताकर्षक
बद्राचलमेंतो[27] तीरै उन्नदि	बद्राचल लग रहा बहुत ही मोहक
अंतिंत अनरादु अंतिंत अनरादु	कह नहीं सकते कितना कह नहीं सकते इतना
वंतु पेट्टिन बाधामन्तुनिपुरमादि	बखान करना संभव नहीं उस भगवान पुर
एंतो विंतै उन्नादि	में बहुत ही रहा वह अनोखा
बद्राचलमेंतो पेरैनदि	बद्राचल लग रहा अति अनोखा
रामुल पेंड्लि एंतो संबर मैनदि	विवाह राम का बहुत ही अनोखा
वरमु दुष्करमु वैकुंठपुरमु	वर दुष्कर वैकुंठपुर
रामुल भोगमु लक्षिम शेखरमु	भोग राम का अतिमनोहर
वेइंड्ल संबरमु मुत्याल तोरणमु	हजार घर हर्ष तोरण मोतियों का
एंतो विंतै उन्नदि रामुल पेंड्लि	विवाह राम का बहुत ही अनोखा
एंतो संबर मैनदि	बहुत ही रहा वह अनोखा
बद्राचलमेंतो तीरै उन्नादि	बद्राचल लग रहा अति अनोखा
रामल पेंडिल ऐंतो संबर मैनादि	विवाह राम का अति अनोखा

अंतिंत अनरादु अंतिंत अनरादु	कह नहीं सकते कितना कह नहीं सकते इतना
वंतु पेट्टिन बाधा भगवंतुनि पुरमुलो	बखान करना संभव नहीं उस भगवान पुर में
एंतो विंतै उन्नदि रामुल पेंड्लि	विवाह राम का रहा बहुत ही अनोखा
एंतो संबर मैनदि	बहुत ही रहा वह अनोखा
पेंड्लि चेसिवाल्लु संपति लाट कडविल्लो	विवाह यहाँ वहाँ जंगल में
सीतम्म कटु भारमै उन्नादि	कटु तडपने लगी सीता माई
अक्कड अति भार मैं उन्नादि	वहाँ रही अति प्रसव पीडा से सीता माई
गोडु गोडुन दुःख सागे सीतम्म	रोने लगी फूट फूट कर सीता माई
गोट नीरुलु चिम्म सागे	बहाने लगी अश्रुधारा सीता माई
रंगैन मुत्याल सोरुगु तेगिनट्लु	रंगीली मोतियों की टूटी लडी सी
राल कंड्ल तीर्थमम्मासीतम्मा	गिरने लगे आँसू धारा सी
राल कन्नुल तीर्थमम्मा	बहने लगे सीता की आँखों से अश्रुधारा सी
इंतमटुकु नेनु अइवध्यलोउन्टेनु	होती अगर मैं अयोध्या में
कौसल्य, सुमित्रा, कैक चिन्नत्ता मुग्गुरत्तगारु	कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी तीनों सास
जगडु सूसि तंदुरम्मा	करती होगी झगडा राम से
राजाधिराजुलु भार्यलु अंदरु	राजाधिराज की भार्याएँ सब
वीपुजोर कुंदु रम्मानाकिंक	करती होगी सहायता मेरी जुटकर
ईपुजोर कुंदुरम्मा	करती होगी सहायता जुटकर
ननु गन्न नातंड्रि ना मरिदि लक्ष्मण	देवर लक्ष्मण मेरा प्रिय भाई
एमिहिंसलु पेड्तिवन्ना अडविलो	जंगल में देते हो कितनी पीडा हे भाई
एमिबाधलु पेड्तिवन्ना	देते हो कितनी पीडा हे भाई
सीतम्म शोकमु लक्ष्मणएरुकै	पता चला सीता का शोक लक्ष्मण को
भूदेवतम्मकु गज्जल कोडवलि चेति किच्चिनाडु	भेजा लक्ष्मण ने दरांती देकर भूदेवी को

माया मंत्र सानिनि पंपा लक्ष्मणा	भेजा लक्ष्मण ने माया धाय को
माय मंत्रसानिनि पंपा	भेजा माया धाय को
अडवियन्दु नाकु आविताडु चिक्कडु	जंगल में स्त्री तक नहीं मिलती कोई
अतिग संतोषमन्नादि नातल्लि सीत	किया प्रकट संतोष सीता माई ने
संतोष मन्नादि	किया प्रकट संतोष सीता माई ने
उरिमै उरिमेने मेरुपाइ मेरिसेने	बनकर कडक कडका बनकर चमक चमका
पिडुगाइ गुंकि नाडम्म कुशराजु	बनकर बिजली निकला कुशराजा
पिडुगाइ गुंकि नाडम्म	बनकर बिजली निकला कुशराजा
कारुंड पडवेन्दु सीत देवम्म	कीकारण्य में सीता माई
मंत्रसानम्म मूर्छिल्लु चेंदिनारु	धाय दोनों हो गयी बेहोश
वाल्लिंक मूर्छिल्लु चेंदिनारु	हो गयी दोनों बेहोश
वाल्ल मूर्छिल्लु वाल्लु तेलुपुत लेचि	होश में दोनों आती आती
बालबोड्डु गोयवे मंत्रसानम्म	बच्चे की नाल काटने को कहा सीता माई ने
बालबाड्डु गायव	नाल काटो हे धाय
कोयडानिकि कोतु ने ओ देवि	काटने के तो काटूँगी हे देवी
नी सिरसु लो उन्डेटि बंगारु चिगुर मा	तेरे सिर पर शोभित सोने के मूसढ माणिक माई
बालबोड्डु मीद पेट्टु सीतम्म	रखो बच्चे की नाल पर हे सीता माई
बाल बोड्डु गोस्तननेनु	काटूँगी तब मैं बच्चे की नाल
आर्लु वाल्लु तीरि अइवध्य पट्टणमु	ठीक ठीक होकर सबकुछ अयोध्या नगर
चेरिन नाटिकि रामुलाकु चेप्पिंचि	पहुँचने पर राम से कहकर
नीइंड्लु बंगारु गोडल तो कट्टिन्तुने	बनवाऊँगी सोने की दिवारों से तेरा घर
देवि बाल बोड्डु कोयवे मंत्रसानि	हे देवि! बच्चे की नाल काटो
बाल बोड्डु गोयवे	बच्चे की नाल काटो
आर्लु वाल्लु तीरि अइवध्य पट्टणमु	ठीक ठीक होकर सबकुछ अयोध्या नगर
चेरिन नाटिकि रामुलाकु चेप्पिंचि	पहुँचने पर राम से कहकर
नाइंड्लु बंगारु गोडलु कट्टिंचिन नाटिकि	बनाओगी सोने की दीवारों से मेरा घर

बालबाड्डु गासन सीतम्म	तभी काटूँगी नाल हे सीता माई
बालबाड्डु गासन	तभी काटूँगी नाल हे सीता माई
आर्लुवाल्लु तीरि अइवध्य पट्टणमु	ठीक ठीक होकर सबकुछ अयोध्या नगर
चेरिन्न नाटिकि रामुलाकु चेप्पिन्चि	पहुँचने पर राम से कहकर
नीइंट्लो बंगारु बावुलु चेइन्तुने	खुदवाऊँगी सोने के कुएँ तेरा घर
देवि बालबो ोयवे मंत्र सानम्म	हे धाय! नाल काटो बच्चे की
बालबोड्डु गोयवे	नाल काटो बच्चे की
एंत चेप्पिन गानि विनलेदंटुने	करने पर भी विनति अस्वीकार करने पर
सीत देवि सिर सिल्लो उंडेटि चिरुव माणिक्यमु	सर पर शोभित मूसढ माणिक को सीता माई
बालबोड्डु मीद पेट्टा सीतम्म	रखा बच्चे की नाल पर सीता माई ने
बालबोड्डु गोयमनेनु	कहा बच्चे की नाल काटने को सीता माई ने
चिरुव माणिक्यान्नि कन्नुलाराचूसि	देखकर एकटक मूसढ माणिक को
पातेसु लाडुतादि मंत्रसानम्म	करने लगी मजाक धाय
पातेसु लाडुतादि	मजाक करने लगी धाय
एमम्म ओ मंत्रसानम्मा	ओ धाय हे माई
पातेसु लाडुतावे ना तल्लि	मजाक करती क्यों हे माई
बालबोड्डु गोयवे	काटो बच्चे की नाल हे माई
दोड्डवारि सोम्मु माकु दक्कदु तल्लि	बडों की संपदा नहीं चाहिए हमें माई
नी सोम्मु नीकु पट्टम्मा सीतम्म	यह लो तेरी संपत्ति तुम ही हे सीता माई
मंत्रसानि चेतिलो चि़रुव माणिक्यमु	धाय ने मूसढ माणिक को
सीत देवि चेतुल्लो पेट्टिन्दि	रख दिया सीता के हाथों में
बालबोड्डु गोसिनादि मंत्रसानम्म	काटी नाल बच्चे की धाय
मायमै पोइन्दि	छिप गयी पल में धाय
कारुंड पडवेंदु मातल्लि सीतम्म	कीकारण्य में हमारी सीता माई

नेत्तरु कंदुलनु वडसि पट्टुकोनि	पकडकर खून से लथे शिशुओं को
मुनिपल्ले जेरोच्चिनादि सीतम्म	पहुँच गयी मुनियों के गाँव सीता माई
तन पल्ले जेरोच्चिनादि	पहुँच गयी अपने गाँव सीता माई
मुनि पल्लेलोने वाल्मीकी गुरुवन्चुन	मुनियों के गाँव में गुरु वाल्मीकी के पास
पारटाकुलु तेच्चि पोत्तिल्लमर जेसी	पत्ते लाकर पोतडा बनाकर
पिल्ललनु पंडेसि नादि सीतम्म	सुलाया बच्चों को सीता माई ने
समुद्र स्नानानि केल्ला	गयी समुद्र स्नान करने सीतामाई
अइपोये दारिलो कोम्म कोम्मन	जानेवाले रास्ते में टहनी टहनी पर
कोतुलु एगुरु कुंटाने उन्नाइ	करते रहे उछल-खूद बंदर
कोतुलु एगुरु कुंटाने उन्नाइ	करते रहे उछल-खूद बंदर
पिल्लवडने कोति पिल्लवडने कोति	गिर गया बच्चा हे बंदर गिर गया बच्चा हे बंदर
कनुक्को गल्ला सीतम्म मैनीवु	समझनेवाली माई बनी हे सीता माई
नेत्तर कंदुलुनु वेलुल्लो पूलुल्लो	खून से लथे शिशुओं को जलावन में जंगल में
वेसि पोतावम्मा मापिल्ल माकु बरुवम्म	डाल कर जाती हो हे माई नहीं भार अपने बच्चें हमें
सीतम्म मापिल्ल माकुबरुवम्म	सीतामाई नहीं भार अपने बच्चे हमें
कोतुल्ला माटलु विन्नादि ना तल्लि	सुनी बंदरों की बात सीता माई ने
एनक्कि तिरिगोच्चि नेत्तुरा कन्दुल्नु	लौटकर वापिस खून से लथे शिशुओं को
वडिसि पट्टुकोनि बंगारु बिंदे संक पेट्टुकोनि	पकडकर हाथों से सोन घडे को कांख में रखकर
समुद्र स्नानि केल्ला सीतम्म	गयी समुद्र स्नान करने सीता माई
समुद्र स्नानि केल्ला	गयी समुद्र स्नान करने सीता माई
दोड्डवारि कोडलु एक्कड वस्तुन्नादि	सोचकर बडों की बहु कहाँ आ रही है
वलवेटि गंगम्म वेलनील्लु चलनील्लु	गरम पानी ठंडा पानी गंगा माई
एकमुनु जेसिनादि गंगम्म	मिला दिया दोनों को गंगामाई ने

वेलनील्लु चलनील्लु एकमुनु जेसिनादि	मिला दिया गरम व ठंडा पानी गंगा माई ने
वेलनील्लु चलनील्लु बालुनिकि पोसिंदि	नहाया गरम व ठंडा पानी से बच्चों को सीता माई ने
गड्डु मीद पंडबेट्टा सीतम्म	सुला दिया उन्हें किनारे पर सीता माई ने
पालगुंडमु जोच्चिनादि	जा गिर पडी दूध के गड्ढे में
पतिव्रता ना तल्लि पालेटि गंगम्म	पतिव्रता माई दूध की गंगामाई ने
पट्टि गड्डन पेट्टिनादि सीतम्मनु	किया किनारा पकडकर सीतामाई को
पट्टि गड्डन बेट्टिनादि	किया किनारा सीतामाई को
नेत्तर कंदुलुनु वडि गट्टुकोनि	गोद में लेकर खून से लथे शिशु को
बंगारु बिंदेलतो नील्लु मुंचु कोनि	भर कर पानी सोने के घडों से
मुनि पल्ले बाट पट्टिन्दि ना तल्लि	रास्ता नापने लगी माई मुनियों का गाँव
तन पल्ले जेरोच्चिनादि	पहुँचने लगी अपना गाँव
मुनि पल्ले लोकि चेरोच्चे टालकु	पहुँचने तक मुनियों का गाँव
मंत्राल लवण्णा पुट्टा इक्कड	यहाँ पैदा हुआ लवराजा
मंत्राल लवण्णा पुट्टा	पैदा हुआ लवराजा
तंड्रिरो ओतंड्रि ओ तंड्रि वाल्मीकी	हे बाप! हे बाप ! हे बाप! वाल्मीकी
ना बालनुनेने नेत्तुकोनि पोतिनि	उठाकर ले गयी अपने बच्चे को मैं
ई बालुडेक्कनुंचि वच्चा ओतंड्रि	हे बाप कहाँ से आया यह बच्चा
ई बालुडु एक्कडनुंचि वच्चा ओ तंड्रि	कहाँ से आया यह बच्चा
पंड बेट्टे टप्पुडु चेप्पिंदि गुरुवुलाकु	बताया मात्र सुलाते समय गुरु से
एत्तुक पोयेटप्पुडु सेप्पिन्नदि गादय्या	ले जाते समय उठाकर बताया नहीं गुरु से
सीतम्म सेप्पिनादि गादय्या	सीता माई ने बताया नहीं गुरु से
मुनिपल्ले लोकि चेरोच्चे टालकु	पहुँचने तक मुनियों का गाँव
वाल्मीकी गुरुवु पोत्तिल्लमरा जूसिनारु	गुरु वाल्मीकी पोतडा देखकर खाली
वाल्मीकी पोत्तिल्लो बालुडु लेडय्या	वाल्मीकी पोतडे में था नहीं बच्चा
दोड्डवारि कोडलु दूषिंचुतादनि	समझकर बडों की बहु शाप देगी
मूडु पिसिकिल्ल इसुक मंत्रिंच्चि सल्लिनाडु	डाला मंत्र से तीन मुट्टी भर बाल

वाल्मीकी मंत्राल लवण्णा पुट्टा	वाल्मीकी पैदा हुआ लवराजा
मंत्राल लवण्णा पुट्टेटि वेलकु	पैदा होने तक लवराजा
मुनिपल्ले चेरोच्चिनादि सीतम्म	पहुँचने लगी मुनियों का गाँव सीतामाई
तन पल्ले जेरोच्चिनादि	पहुँचने लगी अपना गाँव सीतामाई
तंड्रि रो ओ तंड्रि ओ तंड्रि वाल्मीकी	हे बाप हे बाप! हे बाप वाल्मीकी
ना बालुनि नेने नेत्तुकोनि पोतिनि	अपने बच्चे को मैं उठाकर ले गयी
ई बालुडु एक्कडनुंचि वच्चा ओ तंड्री	कहाँ से आया यह बच्चा हे बाप
ई बालुडु एक्कडनुंचि वच्चा	कहाँ से आया यह बच्चा हे बाप
इष्णु[28] ईश्वर सांबमूर्ति[29] नीकु	तुम्हे विष्णु, ब्रह्म और शिव ने
साक मनिच्चिनारम्मा सीतम्म	पालने को दिया हे सीता माई
साक मनिच्चिनारम्मा	पालने को दिया माई
पेद्दोडु कुशराजु पेड्डेने मंकु पोरुल्लु	रूठने लगा बड़ा कुशराजा
सिन्नोडु लवराजु पेड्डेने मंकु पोरुल्लु	झगड़ने लगा छोटा लवराजा
इद्दरु बालुल्ल पोरुल्ल का तल्लि	दोनों बच्चों के झगडों से माई
निलुव लेदु सीतम्म	रह नहीं पाती सीता माई
धरणीन ताल लेदु सीतम्म	भू पर रह नहीं पाती सीता माई
तड्रि रो तंड्रि ओ तंड्रि वाल्मीकी	हे बाप हे बाप हे बाप वाल्मीकी
इद्दरि बालुल्ल पोरुलाकु नेनु	दोनों बच्चों के झगडों से मैं
निलुव लेनु तंड्रि नेनु धरणीन	रह नहीं सकती हे बाप भू पर
कारुंड पडवेदुं कोंड चीललु[30] तेच्चि	कीकारण्य में लाकर जंगली अजगरों को
अल्लिकलु अल्लिंचि ऊयलवड काविंचम्म	कशीदा काढकर बनाओ झूला हे माई
नागुबामु तेच्चि नड़ि कट्टु कट्टिंचि	नाग सांप लाकर बीच में बांधकर
उय्यल कट्टिन्चवम्मा सीतम्म	बनाओ झूला हे सीता माई
उय्यल कट्टिंचवम्मा	बनाओ झूला हे सीता माई
पारुटाकुलु तेच्चि पोत्तलमर जेसि	लाकर पत्ते बनाकर पोतडे
बालुलनु पंडेइ तल्ली नीविंक	बच्चों को सुलाओ तुम हे सीता माई
जाल पाटलु पाडवम्मा	गाओ लोरियाँ हे माई

कारुंड पडवेंदु गोंड चीललु तेच्चि	कीकारण्य में लाकर जंगली अजगर
अल्लिकलु अल्लिंचि उय्याल अल्लिंचिनादि	कशीदा काढकर बनवाया झूला माई ने
सीतम्म उय्याल अल्लिंचिनादि	बनवाया झूला सीता माई ने
नागुबामुलु तेच्चि नडिकट्लु कट्टिंचि	लाकर नाग सांप बांधकर बीच में
उय्याल कट्टिंचिनादि नातल्ली	बनवाया झूला सीता माई ने
उय्याल कट्टिंचिनादि	बनवाया झूला सीता माई ने
पारुटाकुलु तेच्चि पोत्तिल्लमर जेसि	लाकर पत्ते बनाकर पोतडे
बालुल पंडिंचि नादि नातल्ली	सुला दिया बच्चों को माई ने
जोल पाटलु पाडुतादि	गाने लगी लोरियाँ सीतामाई

अन्न एडकुरा कुशराजु एडकुरा	लाडला रो मत रे कुशराजा रो मत रे
लवराजु एडकुरा	लवराजा रो मत रे
अइवध्य बालुडा मातंड्रि एडकुरा	अयोध्या कुमार मेरा लाडला रो मत रे
लालपूल्लो नुसि पट्टंगी नेननुचु	बनवाकर दूध के मन का मृदु रेशमी कुरता
कोडुका पट्टंगी नेननुचु	बेटा रेशमी कुरता लेकर
नीयव्व भूदेवि वच्चि एडकुरा	नानी तेरी आयी रो मत रे
वच्चि एडकुरा कोडुका तेच्चि एडकुरा	आयी रो मत रे लायी रो मत रे
नीकिच्चि एडकुरा निनु एत्ति मुद्दाडि एडकुरा	देगा तुम्हे रो मत रे उठाकर तुम्हे चूमलेगी रो मत रे
अइवध्या बालुडा मातंड्रि एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाडला रो मत रे
दिष्टि पूसलुगा नुस सगिष्टंगि नेननुचु	बनवाकर दीठ के मन का मृदु रेशमी कुरता
कोडुका दिष्टंगि नेननुचु	बेटा दीठ का कुरता
नी मुसलम्म कौसल्या वच्चि एडकुरा	लाकर तेरी दादी आयेगी बेटा रो मत रे
वच्चि एडकुरा कोडुक तेच्चि एडकुरा	आयेगी रो मत रे तुझे देगी रो मत रे
नीकिच्चि एडकुरा निनु एत्ति मुद्दाडि एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाडला रो मत रे
अइवध्या बालुडा मातंड्रि एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाडला रो मत रे
अन्न एडकुरा कुशराजु एडकुरा	बेटा रो मत रे कुशराजा रो मत रे

लवराजु एडकुरा	लवराजा रो मत रे
अइवध्य बालुडा मा तंड्रि एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाडला रो मत रे
पेट्टु गज्जाललो नुसि पुलिगोरु नेननुचु	बनवाकर छिल के के घुंघुरु बघनख
कोडुका पुलिगोरु नेननुचु	बेटा बनवाकर बघनख
निनु कन्न तंड्रि श्रीरामा वच्चि एडकुरा	आयेगा तेरा पिता श्रीराम बेटा रो मत रे
वच्चि एडकुरा काडुका तेच्चि एडकुरा	आयेगा रो मत रे बेटा लायेगा रो मत रे
नीकिच्चि एडकुरा निनु एत्ति मुद्दाडु एडकुरा	देगा तुझे रो मत रे उठाकर चूमेगा रो मत रे
अइवध्य बालुडा मा तंड्रि एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाडला रो मत रे
वेंडि गिन्नेल्लोना वेन्ना पेट्टुकोनि	रखकर माखन चाँदी के प्यालों में
कोडुका वेन्ना पेट्टुकोनि	बटा रखकर माखन
नी पिनतंड्रि लक्ष्मण्णा वच्चि एडकुरा	आयेगा तेरा चाचा लक्ष्मण बेटा रो मत रे
वच्चि एडकुरा काडुका तेच्चि एडकुरा	आयेगा रो मत रे बेटा लायेगा रो मत रे
नीकिच्चि एडकुरा निनु एत्ति मुद्दाडु एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाड़ला रो मत रे
अइवध्य बालुडा मा तंड्री एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाड़ला रो मत रे
पगिडि गिन्नल्लाना पालु बुव्व पासुकानि	डालकर दूध भात सोने के प्यालों में
कोडुका पालु तीसुकोनि	बेटा लेकर दूध-भात
नीपिनतल्लि ऊर्मिल वच्चि एडकुरा	आयेगी तेरी चाची ऊर्मिला रो मत रे
वच्चि एडकुरा काडुका तेच्चि एडकुरा	आयेगी रो मत रे बेटा लायेगी रो मत रे
नीकिच्चि एडकुरा निनु एत्ति मुद्दाडु एडकुरा	देगी तुझे रो मत रे उठाकर चूमेगी रो मत रे
अइवध्य बालुडा मातंड्री एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाडला रो मत रे
पस्य गुलल मीन बटुलल्लु	हरे हरे रेशमी कपडे
कोडुका नी कटु वल्ल कोडुका	बेटा बनवाकर तेरे नाम का बेटे
नी पिनतंड्री भतृ[31] शत्रुघ्नुलु वच्चि एडकुरा	आयेंगे तेरे चाचा भरत शत्रुघ्न रो मत रे
वच्चि एडकुरा कोडुका तेच्चि एडकुरा	आयेंगे रो मत रे बेटा लायेंगे रो मत रे
नीकिच्ची एडकुरा निनु एत्ति मुद्दाडु	देंगे तुझे रो मत रे उठाकर चूमेंगे रो मत रे

एडकुरा

अइवध्या बालुडा मातंड्रि एडकुरा	अयोध्या लौंडा मेरा लाडला रो मत रे
एत्तंग पेंचंग एडेन्ड्ल बालुडैनारु	खाते पीते हो गये बच्चे सात साल के
पिलवांइलु ऊलोल्ल बालु लैनारु	हो गये बच्चे गाँव के
तंड्रिरो ओ तंडि ओ तंडि वाल्मीकी	हे बाप हे बाप हे बाप वाल्मीकी
राचबाललु वीरु माट बाललु चस्तिवि	कुमार ये तो क्षत्रिय बने मात्र वाचाल
वाल्मीकी माट बाललु चेस्तिवि	बने मात्र वाचाल
अडवुल्लो परिगेत्तिनाडु वाल्मीकी	दौडने लगे जंगल में वाल्मीकी
सामु गरिडि पट्टिनाडु	पकडने लगे व्यायाम तलवार तीर
तातल्लो वल तात वलतात वाल्मीकी	हे दादा! हे दादा! हे दादा! वाल्मीकी
वोक्कटि सेपुते रेन्डुगा एदुराडुतारु	बतायेगा एक तो विरोध करते दो रूप में
बाललु रेन्डुगा एदुराडुतारु	बच्चे विरोध करते दो रूप में
तातल्लो वलतात वलतात वाल्मीकी	हे दादा! हे दादा! हे दादा! वाल्मीकी
रेन्डु चेप्पिते मूडुगा एदुराडुतारु	बतायेगा दो तो विरोध करते तीन रूप में
वाल्लिंक मूडुगा एदुराडुतारु	वे विरोध करते तीन रूप में
तातरो वलताता वलताता वाल्मीकी	हे दादा! हे दादा ! हे दादा ! वाल्मीकी
मूडु चेप्पिते आरुगा एदुराडुतारु	बतायेगा तीन तो विरोध करते छे रूप में
बाललु आरुगा एदुराडुतारु	बच्चे विरोध करते छे रूप में
तातरो वलतात वलतात वाल्मीकी	हे दादा! हे दादा ! हे दादा ! वाल्मीकी
आरु चेपिते एनिमिदि एदुराडुतारु	बतायेगा छे तो विरोध करते आठ रूप में
बाललु एनिमिदि एदुराडुतारु	बच्चे विरोधकरते आठ रूप में
तातरो वलतात वलतात वाल्मीकी	हे दादा! हे दादा ! हे दादा ! वाल्मीकी
एनिमिदि चेपिते पदिगा एदुराडुतारु	बतायेगा आठ तो विरोध करते दस रूप में
बाललु पदिगा एदुराडुतारु	बच्चे विरोध करते दस रूप में
तातरो ओ तात ओ तात वाल्मीकी	हे दादा! हे दादा ! हे दादा ! वाल्मीकी
तगिन न्यायमु चेप्पितिवि	बताया सही न्याय बतायी दुनियादारी
वगन्यायमु वोकटन्न चेप्पावु	बताइये फिर कोई ऐसी दुनियादारी
माकिंक वगन्यायमु वकटन्न जेप्पावु	बताइये हमें कोई ऐसी दुनियादारी

विनंडन्ना ओ बाल राजुल्लारा	सुनो रे बच्चे सुनो रे राजकुमार
तूर्पुकु सीमकु वेल्लंडि बाललु	जाओ रे बच्चे पूरब की सीमा तक
पडमटि सीमकु वेल्लंडि बाललु	जाओ रे बच्चे पश्चिम की सीमा तक
दक्षिणमु सीमकु वेल्लंडि बाललु	जाओ रे बच्चे दक्षिण की सीमा तक
उत्तरपु सीमकु पोइनट्लाइते	अगर जाओगे उत्तर की सीमा तक
पंदराजु[32] लैतारन्न मीरिंक	बनोगे कायर राजा तुम दोनों
पंदराजु लैतारन्न	बनोगे कायर राजा तुम दोनों
कारु कोडन्न कूयने लेदु	मुर्गे बांगने के पहले भोर सुबह
कदिरि चुक्कलु पोडवने लेदु	निकले नहीं अभी कदिरि के तारे
पिलवांड्रल कदिरि चुक्कलु पोडवलेदु	बच्चे निकले नहीं अभी कदिरि के तारे
एराणि बिड्डलो एसिन पिलवांड्लो	बेटे कि स रानी के नन्हे बच्चे किसके
भल्लुन्न तेल्लंग तेल्ल वारटालुकु	सहसा सुबह होने तक
पंड्रेंड्रामडा नडिचिनारु बाललु	चले बारह कोस दूर बच्चे
पंड्रेंड्रामडा नडिचिनारु	चले बारह कोस दूर बच्चे
तूर्पु सीमकु वेल्लिरे बाललु	गये बच्चे पूरब की सीमा तक
करकर मनियेटि एर्रंग पोद्दु पोडुस्तुंटे	भुर भुरी लालिम सुबह होते देख
अन्ना ओ अन्ना एव्वरो पगवाडु	हे भाई हे भाई समझकर उसे कोई शत्रु
मन मीदिकि युद्धानिकोस्ताडनि	आयेगा हम पर युद्ध करने समझकर
एदिरि जट्टु कट्टिनाडु कुश राजु	तैयार हुआलडने कुश राजा
पिच्चिगुद्दुलु गुद्दुताडु	मारने लगा मुक्खे पागल सा कुश राजा
ओक्कोक्क गुद्दुकु सूर्य चन्द्रादुलु	एक मुक्के में सूर्य-चंद्र
उक्कु पोडि रालुतुन्नादि	गिर रहा बनकर आटा लोहे का
अक्कड कनक पिडुगु संद माया	गिरने लगी वहाँ सोने की बिजलियाँ
एमन्न ओ बाल राजुल्लारा	क्या है भाई हे बाल राजकुमार
मुंदुकु गालाना मीकु युद्दमु	आगे कभी होगा युद्ध तो
कलुगुनो नन्नु तलवंडी बालाल्लारा	लो मेरा नाम बाल राजकुमार
नेनिंग नाग वैशानिस्ताननेनु	कहा मैं तुम्हे दूँगा नाग बाण रे
पारिपोइन वानितो युद्दमु चेसितेनु	सोचकर भागनेवाले से युद्ध करने से

पंद राजुलु मैता मन्ना मनमिंक	समझकर कायर राजा बनेंगे हम
पदरा पोतामु तम्मुडनेनु	चलो भाई चले हम
मुंदोस्ते बाललु दावन पिलवांइलु	आगे बच्चे लौटते रास्ते में
पालपंइले देंचिनारु बाललु पनस पंइले देंचिनारु	क्षीरी फल तोड लाये तोड लाये कटहल फल
कारुंड पडवेंदु नातल्लि सीतम्म	कीकारण्य में रहनेवाली माई सीता माई
चाट पट्टवम्मा नीवु सीतम्म	लाओ सूप हे सीतामाई
साट पट्टवम्मा नीवु	लाओ सूप तुम सीता माई
साट पट्टगाने पंइलु पोयगाने	दिये उंडेल फल सूप लाने पर
कासेपु निद्र पोइनारु बाललु	सो गये बच्चे थोडी देर
समपायमु आरगिंचिरि	खा लिया खाना पेट भर
कारु कोडन्न कूयलेदु कदिरि चुक्कलु पोडवलेदु	मुर्गे बांगने के पहले निकले नहीं कदिरि के तारे
बाललकु कदिरि चुक्कलु पोडवलेदु	बच्चे निकले नहीं अभी कदिरि के तारे
ए रानि बिड्डलो एसिरि बालुलो	बेटे किस रानी के धनी बच्चे किस के
दक्षिणपु सीम पडमटि सीम तिरिगि	दक्षिण सीमा पश्चिम सीमा घूम फिर कर
चूसिन गानि एदुरानि बंटु लेराया	था नहीं कोई लडनेवाला देखने पर
बाललकु एदुराडु बंटुलेराया	बच्चों से था नहीं कोई लडनेवाला देखने पर
तिरिगोच्चे बाललु दारिन पिलवांइलु	आगे लौटते रास्ते में बच्चे
पालपंइले तेंचिनारु बाललु	क्षीरी फल तोड लिया बच्चों ने
पनस पंइले देंचिनारु	कटहल फल तोड लिया बच्चों ने
कारुंड पडवेंदु मातल्लि सीतम्म	कीकारण्य में रहनेवाली माई सीतामाई
साट पट्टावम्मा नीवु सीतम्मा	लाओ सूप तुम हे सीतामाई
साट पट्टावम्मा नीवु	लाओ सूप तुम हे माई
साट पट्टगाने पंइलु पोयगाने	दिये उंडेल फल सूप लाने पर
समपायमु आरगिंचिरी बाललु	खा लिया खाना बच्चों ने पेट भर
कासेपु निद्र पोइनारु	सो गये बच्चे थोडी देर

एरानि बिड्डलो एसिरि पिलवांड्लु	बेटे किस रानी के धनी बच्चे किसके
एक्कडुकु सीमेल्लिनारु बाललु	निकले बच्चे किस प्रदेश के
उत्तरपु सीमेल्लिनारु	गये उत्तर की सीमा तक
भल्लुन तेल्लंग तेल्लवाराटाल्कु	सहसा सुबह होने तक
पंडेंड्रामड नडचिनारु बाललु	चले बारह कोस दूर
पंडेंड्रामड नडचिनारु	चले बारह कोस दूर
पंडेंड्रामड नडचि चूसिते पिलवांड्लु	बारह कोस दूर चलकर देखने से
कदिरि कोंडले कानिपिंचा अक्कड	दिखाई पडे वहाँ कदिरि के पहाड
कदिरि कोंडलु कानिपिंचा	दिखाई पडे वहाँ कदिरि के पहाड
वनिकोंप कूलन्ना वनिकोंप कालन्ना	नाश हो उसका घर नाश हो उसका घर
इदि एंत दूरमुंदन्न पट्नमु	कितना दूर है भाई यह शहर
इदि एंत दूरमुंदन्न	कितना दूर है भाई यह शहर
मोकाट वोकजल्लि मोचेत वकजल्लि	एक कतार घुटनों तक कोहनी तक एक कतार
काल्ल गंटलु कट्टिरम्मा बालुलु	बांध ली घंटिएँ पैरों में बच्चे
इद्दरु आकाश मंदिरि आ बाल राजुलु	आगे बढे वे दोनों बच्चे
अग्नि कोंडलु दाटिनारु वाल्लिंक	पार किया आग के पहाड दोनों बच्चों ने
अग्नि कोंडलु दाटिनारु	पार किया आग के पहाड दोनों बच्चों ने
अग्नि कोंडलु दाटि चूसिते बाललकु	पार करके आग के पहाड देखने पर बच्चों को
अइवध्य कनिपिंचिनादि	दिखाई दिया अयोध्या बच्चों को
अक्कड अइवध्य कनिपिंचिनादि	दिखाई दिया वहाँ अयोध्या बच्चों को
वनिकोंप कूलन्ना वनिकोंप कालन्ना	नाश हो उसका घर नाश हो उसका घर
इदिएंत दूरमुंदन्न पट्नमु	कितना दूर है भाई यह शहर
इदि एंत दूरमुंदन्ना	कितना दूर है भाई यह शहर
नल नल्ल गुन्नाडु नामालु पेट्टिनाडु	काला काला है लगाया है तिलक
वाडेनेमो रामुडन्ना	है वही शायद राम हे भाई
पट्नानिकि वाडेनेमो रामुडन्ना	शहर का है वहीं शायद राम हे भाई
एंत गोज्जवाडु एंत रंडवाडु	कितना कायर व कितना लज्जाहीन

इंत दंडु एलुतुन्नाडे वीडिंक	कर रहा यह राज सेना पर इतनी
एंत दंडु एलुतुन्नाडे	कर रहा यह राज सेना पर इतनी
इंत मट्टुकु दंडु मन चेतुलुंटेनु	अगर होती सेना हमारे हाथों में इतनी
रवधूलि कट्टिन्तुमन्ना मनमिंक	कर देंगे चकना चूर हम
रवधूलि कट्टिन्तुमन्ना	कर देंगे चकना चूर हम
सिन्नावाडु इंग मंत्राला लवण्णा	आगे छोटा लव राजा ने
चलकि जगडमु चेस्तानन्नेनु पट्नमुलो	कहा जंग छेडने को शहर में
चलकि जगडमु चेस्तानन्नेनु	कहा जंग छेडने को शहर में
दावन पिलवांड्लु बंगर्लु आडुतुंटे	खेल रहे थे लट्टू बच्चे रास्ते में
आडेटि बंगराल्नि काल्लदन्निनाडम्मा	मारा भाई पैर से लट्टुओं को रास्ते में
आडेटि बंगराल्नि काल्लदन्निनाडम्मा	लवराजा छेड दी जंग रास्ते में
अलनाडु नाकु अभयमिच्चिन्न ब्राह्मन्नि	उस समय मुझे वरदेने वाले ब्राह्मण को
एंटने मदियन्दु तलसिनारु वाड्लिंक	याद किया मन में ब्राह्मण को
नाग वैशान्नन्दिनारु	किया प्राप्त नाग बाण को
नाग वडिशांड्ल तो रुब्बुड्डु गुंडुलतो	नाग बाणों से व चट्टू गोलों से
पट्नानि के चेरिनारु वांड्लिंक	पहुँच गये वे शहर
पट्नानि के चेरिनारु	पहुँच गये वे शहर
लक्षलकु तीरिन्न पच्च बंडलु चसि	देखा लाखों से भरे चौपालों को
बंगारु माल चूसिनारु	देखा सोने के महलों को
अइवध्य बंगारु माल चूसिनारु	देख लिया अयोध्या के सोन महलों को
एत्तैन मिद्देलु सित्ताल्लु चूसिनारु	बडी बडी इमारतों बडी बडी शालाओं को
एप्पुडो कूलि पोयम्मा अइवध्य	तोड-फोड किया कभी के अयोध्या को
एप्पुडो कूलि पोयम्मा	तोड-फोड किया कभी के अयोध्या को
गुर्रालु पंडेटि कूटव्वलु चूचिरि	देख लिया घोडों के अस्तबलों को
एनग शाललु चूसिनारु वाड्ल्किं	देख लिया दोनों ने हाथी शालाओं को
एनग शाललु जूचिनारु	देख लिया हाथीशालाओं को

विन ओइ लक्ष्मणा विनकुल भूपाल	इक्ष्वाकु भूपाल सुनो भई लक्ष्मण
सौमित्रि कुमहाग सोधकुड लक्ष्मणा	सुमित्रासुत हे पटु लक्ष्मण
अंतनी मायगुंदन्ना लक्ष्मणा	लग रहा सब तेरी माया लक्ष्मण
पट्नमुलो अंता नी मायगुन्दन्ना	लग रहा शहर में सब तेरी माया लक्ष्मण
दडुंन्नु तीसुक दालाइनि तीसुक	लेकर अपनी सेना को अपने सहचरों को
पाताल में पारि पोया श्रीराम	भाग गया पाताल श्रीराम
प्राणालु दक्किन्चु कुंडा	बचा लिया अपने प्राणों को
पारिपोइन वानितो युद्धमु चेसिते	भागनेवाले से करने से युद्ध
पंद राजुल मैता मन्ना मनमिंक	बनेंगे कायर राजा हम हे भाई
पदरा पोदामु तम्मुडनेनु	कहा चले अब हम भाई
तिरिगोस्त बाललु दावन पिलवांड्लु	आगे लौटते बच्चे रास्ते में
सीतम्म वेसिन्न श्रृंगार वनमुन	सीता द्वारा लगाया श्रृंगार वन में
पाल पंड्ले तेंचिनारू बाललु	तोड लिया बच्चों ने क्षीरी फल
पनस पंड्ले तेंचिनारू	तोड लिया बच्चों ने कटहल फल
मोकाट ओ जल्लि मोचेत ओ जल्लि	एक कतार घुटनों में एक कतार कोहनियोंमें
काल्ल गंटलु कट्टिनारू बाललु	बांध ली घंटिकाएं बच्चे पैरों में
काल्ल गंटलु कट्टिनारू	बांध ली घंटिकाएं बच्चे पैरों में
आकाश मंदिनारू	आगे बढे वे दोनों बच्चे
अग्नि कोंडलु दाटिनारू पिलवांड्लु	पार किया आग के पहाड दोनों बच्चों ने
अग्नि कोंडलु दाटिनारू	पार किया आग के पहाड दोनों बच्चों ने
कारूंड पडयेन्दु मातल्लि सीतम्म	कीकारण्य में रहनेवाली माई सीता माई
साट पट्टावम्मा नीवु सीतम्मा	लाओ सूप माई तुम सीता माई
साट पट्टावम्मा नीवु	लाओ सूप तुम माई
साट पट्टागाने पंड्लु पोयगाने	दिये उंडेल फल सूप लाने पर
पंड्लु गुरूतु पट्टिनादि सीतम्म	पहचान लिया फल सीता माई ने
पंड्लु गुरूतु पट्टिनादि	पहचान लिया फल सीता माई ने
विनंडन्ना ओ बाल राजुल्लारा	सुनो रे हे बाल राजा

ई पोद्दु दिनमंदु या सीम केल्लिंटिरन्ना	आज गये कहाँ थे हे भाई
मी रिंक या दिशकु पोइंटिरन्ना	तुम गये किस दिशा में हे भाई
वनिकोंप गुलम्मावनि कोंप गालम्मा	नाश हो उसका घर नाशहो उसका घर माई
अदि एंत दूर मुंदम्मा पट्नमु	कितना दूर है वह शहर माई
अदि एंत दूर मुंदम्मा	वह कितना दूर है माई
भल्लुन्न तेल्लंग तेल्लवारटालुकु	सहसा सुबह होने तक
पंडेड्रामड नडचिनामु ओ तल्लि	चले थे माई हम बारह कोस दूर तक
पंडेड्रामड नडचिनामु	चले थे बारह कोस दूर तक
पंडेड्रामड नडचि चूसितेनु माकु	बारह कोस चलकर देखने से हमें
अग्नि कोंडलु कानिपिंचा अक्कड	दिखाई पडे वहाँ आग के पहाड हमें
अग्नि कोंडलु कानिपिंचा	दिखाई पडे वहाँ आग के पहाड हमें
मोकट वकजल्लि मोचेत वकजल्लि	एक कतार घुटनों में कोहनियों में एक कतार
काल्ल गंटलु कडितिमम्मा मेमिंक	बाँध ली थी घंटिकाएँ माई
काल्ल गंटलु कडितिमम्मा	बाँध ली थी घंटिकाएँ माई
आकाश मादाताम आकन्न ताल्लरा	बढे थे आगे हे माई
अग्निकोंडलु दाटिनामु मेमिंक	पार किया आग के पहाडों को माई
अइवध्य कनिपिंचिनादि	दिखाई दिया हमें अयोध्या माई
नलनल्ल गुन्नाडु नामालु पेट्नाडु	है काला काला लगाया तिलक
नंदि वानिवाला वाडेनेमो रामुलम्म	है नंदी की तरह है शायद वही राम हे माई
पट्नानिकि वाडेनेमो रामुलम्मा	शहर का शायद है वहीं राम हे माई
यावाड चूसिन पूसिन गंधालु	देखा अगर किसी भी मुहल्ले में सुगंध
वरलु तीसिन कत्तुलम्मा पट्नमुलो	देखा अगर कहीं भी तलवार ताने सिपाही शहर में
वगल तीसिन कत्तुलम्मा	तलवार ताने सिपाही शहर में
यावाड चूसिन दंडु मार्जान्तमु	देखा अगर किसी भी मुहल्ले में सब में
राम राम यनि वाक्य मम्मा पट्नमुलो	राम राम नाम ही शहर में

राम राम यनि वाक्य मम्मा	राम राम नाम ही शहर में
एंत गोज्जवाडु एंत रंड वाडु	कितना कायर वह कितना बेशरम
एंत दन्डु एलु तुन्नाडु ओ तल्लि	कर रहा माई यह राज सेना पर इतनी
एंत दन्डु एलुतुन्नाडु	कर रहा यह राज सेना पर इतनी
अंत मट्टुकु दंडु माचेतिलुन्टेनु	अगर होती सेना हमारे हाथों में इतनी
रवधूलि कप्पिन्तु मम्मा मेमिंक	कर देंगे चकना चूर हम माई
गोड्डु गोड्डुन दु:ख सागे सीतम्म	रोने लगी फूट फूट कर सीता माई
गोट नीरुलु चिम्म सागे	बहाने लगी अश्रुधारा सीता माई
रंगैन मुत्याल सोरुगु देगिनट्लु	रंगीली मोतियों की टूटी लडी सी
राल कन्नुल तीर्थमम्मा सीतम्म	गिरने लगे आँसू सीता माई की आँखों से धारा सी
राल कन्नुल तीर्थ मम्मा	बहने लगे अश्रु सीता की आँखों से धारा सी
अइवध्य रामुलतो पग कट्टु कुंटेनु	करेंगे वैर अगर अयोद्या राम से
हरिविडिचे कालमु ना तंड्रि	होंगे दूर हे भाई ईश्वर से
अडविलो पुडितिरा ना कोडुक कुमहार	पैदा हुए जंगल में हे मेरे लाडले
अडवि पालै तिरा ना तंड्रि	मिट जायेंगे जंगल में ही हे मेरे लाडले
पगवानि पौरुषमु मा मुंदर पोगिडिते	प्रशंसा करेगी अगर हमारे सामने शत्रु की
नलमु नालुगु तुंटलम्म सीतम्म	काट लेंगे जीभ माई सीता माई
नलमु नालुगु तुटलम्मा	काट लेंगे जीभ माई
तंड्रि रो ओ तंड्रि ओ तंड्रि वाल्मीकी	हे बाप। हे बाप। हे बाप। वाल्मीकी
विद्धारि बालुल जोडड बाप मन्नादि	करने को कहा माई दोनों बच्चों को अलग
सीतम्म जोडड बाप मन्नादि	माई करने को कहा दोनों बच्चों को अलग
पेद्द वानिनिंक बाणाल कुशराजुनु	बडे बाणों के कुशराजा को
पाल पंड्लकु पंपुताडु वाल्मीकी	भेजेगा वाल्मीकी क्षीरी फल तोड लाने को
पनस पड्लकु पपुताडु वाल्मीकी	भेजेगा वाल्मीकी कटहल फल तोड लाने

	को
चिन्न वान्निंग मंत्राल लवण्णनु	छोटे मंत्रों के लवराजा को
पूल तोटकु काइलि पेट्टा वाल्मीकी	रखा वाल्मीकी बगीचे की रखवाली करने को
पूल तोटकु काइलि पेट्टा	रखा बगीचे की रखवाली करने को
एडेंड्लु अइंदि विमन्नु वच्चिंदि	बीत गये सात साल बच्चे हुए शिक्षित
वेदन्नु सांभ्राणि एक धूपमु जेसि	लगाकर धूप लोबान की ढेर सी
अश्वान्नि लेपुतारम्मा अइवध्यलो	निकाले घोडे को अयोध्या में माई
अश्वान्नि लेपुतारम्मा	निकाले घोडे को अयोध्या में माई
मूतुम्मु सांभ्राणि एक धूपमु जेसि	लगाकर धूप अधिक लोबान को
अश्वान्नि लेपिनारू अइवध्यलो	उठाया अयोध्या में घोडे को
अश्वमु वंबडि हनुमंतु बंटुनु	सेवक हनुमान को घोडे के साथ
अंभार्लु पेट्टंपुतारु वांड्लिंक	भेजने लगे वे हाथियों के साथ
विनवम्मा ओ रेक्कल अश्वमा	सुनो माई ओ परवाला घोडा
करकर मनियेटि एर्रंग पोद्दु पोडिचेलकु	भुर भुरी लालिम प्रभाती होने तक
पगवानितो पोरबडि तेस्तेने तेचिनावु	शतृ से भिडकर नहीं लाओगे अगर जीत
ताकुंटे अश्वमा रामबाणानिकि बाण गोर्रेवु	हे घोडा शिकार हो जाओगे राम बाण का
सुम्मि नीवु अश्वमा बान गोर्रेवि सुम्मि नीवु	हे घोडा शिकार हो जाओगे राम बाण का
जयरेखकु बदुलु जयरेख प्रक्कन	जयरेखा के बदले जयरेखा के बगल में
लक्ष्मण एमि रासुताडु प्रक्कन	लिखने लगा लक्ष्मण क्या बगल में
बदुलु जयरेख रासिनाडु	लिखने लगा प्रति जयरेखा बगल में
विनंडन्ना ओ बाल राजुल्लारा	सुनो रे ओ बाल राजा
सति पति धर्मालु तेट पडेन्दाक	सति पति के धर्म होने तक साफ
अश्वान्नि विडवाकंडन्ना मीरिंक	मत छोडो भाई घोडे को तुम
अश्वान्नि विडवाकंडन्ना	मत छोडो भाई घोडे को तुम

जयरेखकु बदुलु जयरेखा प्रक्कन	जयरेखा के बदले में जयरेखा के बगल में
लक्ष्मण इट्ट रासेनु प्रक्कन	लिखा ऐसा लक्ष्मण ने बगल में
बदुलु जयरेख रासानु	लिखा प्रति जय रेखा बगल में
एदूमु सांभ्राणि एकधूपमु चेसि	लगाकर धूप अधिक लोबान को
अश्वान्नि लेपिनारम्मा अइवध्यलो	उठाया भाई अयोध्या में घोडे को
अश्वान्नि लेपिनारम्मा	उठाया भाई अयोध्या में घोडे को
तूर्पु सीम एल्लि चूसिन गानि	देखने पर जाकर पूरब सीमा तहां
एदुराड बंटु लेडाया इक्कड	रहा नहीं कोई लडनेवाला वहां
एदुराड बंटु लेडाया	रहा नहीं कोई लडनेवाला वहां
करकर मनियेटि एर्रंग पोद्दुपोडिचिवच्चि	भुरभुरी लालिम प्रभाती होकर जहां
दोड्डवारि अश्वमु एक्कडोच्चिन्दनि	सोचकर बडों का घोडा आया कहां
शंखु तीर्थमु पोसिनाड्डु सूर्युड्डु	पिलाया शंख तीर्थ यहां सूरज
अजेयमु नाकु कलुग लेदनि जयमु	हुई नहीं हार मेरी जीत
कलिगिंदंट तिरुगु बाटलु पट्टिनादि	हुई मेरी समझकर लौटने लगा
अश्वमु अइवध्य बाट पट्टानु	घोडा अयोध्या लौटने लगा
तिरिगिवस्ता आरेक्क लश्वमु दावलो	लौटते वापस रास्ते में वह परवाला घोडा
पूल तोटनु कल्ल जूसा अश्वमु	देखा फूलों के बगीचे को घोडे ने
पूल तोटनु कल्ल जूसा	देखा फूलों के बगीचे को घोडे ने
पूलतोटलो पडि आरेक्कलश्वमु	घुसकर बगीचे में वह परवाला घोडा
एरकमु पूलु मेस्तादि अश्वमु	चरने लगा किस ढंग के फूल घोडा
या वरुस पूलु मेस्तादि	चरने लगा किस ढंग के फूल घोडा
बोंड्डु मल्लेलु मेसिनादि अश्वमु	चरने लगा गेंदे फूलों को घोडा
गोंड्डु मल्लेलु मेसिनादि	चरने लगा जुही फूलों को घोडा
सन्न मल्लेलु मेसिनादि अश्वमु	चरने लगा चमेली फूलों को घोडा
इरजाजि पूलु मेसिंदि	चरने लगा मल्लिका फूलों को घोडा
मेसिनन्नि मेसि मेटिकि	चरकर जितना चर सकता
कल्लमे कट्ट कन्नादि	बांध लिया घोडे ने बाकी लगाम सा

अश्वमु कल्लमे कट्टु कुन्नादि
कल्लमु कट्टुकोनि पल्गाटि[33] काडिकि वच्चेटियालकु

बांध लिया घोडे ने बाकी लगाम सा
बांध कर लगाम किवाड तक आते समय तक

अन्नमुलु तिनबोइन मंत्राल लवण्ण वच्चा
एदुरुग मंत्राल लवण्ण वच्चा
एनिग तोंडमु एगिरि पट्टुकोनि
जयरेख चदुवु तुन्नाडु लवराजु
जयरेख चदुवु तुन्नाडु
विनवम्म ओ रेक्कलश्वमा पगवानितोडा
करकर मनियेटि एर्रंग पोद्दु पोडिचालकु
तेस्तेने तेचिनट्टु ताकुंटे अश्वमा
राम बाणाकि बाण गोर्रवि सुम्मी नीवु
अश्वमा बाण गोर्रवि सुम्मि नीवु

गया खाना खाने मंत्रों का लवराजा लौटा
सामने लवराजा लौटा
लगाकर छलांग पकडा लगाम
पढने लगा जयरेखा लवराजा
पढने लगा जयरेखा लवराजा
सुनो भाई ओ परवाला घोडा शतृ से
भुरभुरी लालिम होने तक प्रभाति
नहीं लाओगे अगर हे घोडा
हो जाओगे शिकार तुम राम बाण का
घोडा हो जाओगे शिकार तुम राम बाण का

जयरेखकु बदुलु जयरेख प्रक्कन
इक्कडेवड्डु व्रासिनाडु बदुलु
जयरेख इक्कडेवडु व्रासिनाडु
विनंडन्ना ओ बाल राजुल्लारा
सतिपति धर्मालु तेट पडेन्दाका
अश्वान्नि विडुवाकंडन्ना मीरिंक
अश्वान्नि विडुवाकंडन्ना
एनिग तोंडमु वडचि पट्टुकोनि
गगनमंदे लेपिनाडु लवराजु
गगन मंदे लेपिनाडु
एनिग तोंडेमु लावु मूलग सोंगलुपन्ना

जयरेखा के बदले में जयरेखा के बगल में
किसने लिखा जवाब में
किसने लिखा जयरेखा जवाब में
सुनो रे ओ बाल राजा
सति पति के धर्म होने तक साफ
मत छोडो भाई घोडे को तुम
मत छोडो भाई घोडे को तुम
पकडकर घोडे के लगाम को
उठाया उसे गगन में लवराजा
उठाया उसे गगन में लवराजा
कराहने लार टपकाने पर भी

अश्वान्नि विडुव लेदम्मा
अश्वान्नि पट्टेट कि नीवेंत वाडुवुरा

नहीं छोडा माई घोडे को
तुम कितने बडे हो पकडने घोडे को

अश्वान्नि विडुवुरा बाला नीविंक	तुम बच्चे छोड दो घोडे को
अश्वान्नि विडुवुरा बाला	तुम बच्चे छोड दो घोडे को
अश्वान्नि विडुवुमना नुव्वेन्तदानिवे	तुम कितने बडे हो खोलने को कहने घोडे को
नामीदि केल्लवे कोति	लडो मुझसे बंदर तुम
नामीदि केल्लमना नूवेंत टोडवु	तुम कितने बडे हो मुझसे लडने को
नामीदि केल्लरा बाला नीविंग	लडो रे मुझसे बच्चा तुम
नामीदि केल्लरा बाला	लडो रे बच्चा मुझ से तुम
कोति तोकनु वडचि पट्टु कोनि	पकडकर बंदर की पूंछ को
गेरूरू गेरूरून त्रिप्पि कोट्टा भूमि केसि	घुमा घुमाकर मारा भूपर बंदर को
गेरूरू गेरूरून त्रिप्पि कोट्टा	घुमा घुमा कर मारा बंदर को
वक्कटे एटुकु हनुमंतु बंटुकु	एक ही मार में सेवक हनुमान को
वच्चि पाये पान मैनादि दारिलो	रहा रास्ते में प्राण जाने को
क्रिन्दने पडि पोइंदि	गिर गया बंदर नीचे को
संपिन कोतिनि पारवेस्ते गीन	अगर छोड दोगे वैसे मारे गये बंदर को
पापंबुलु वच्चुननि	समझकर होगा पाप मुझ को
अग्नि दान मडुग नोच्च तल्लिनि	आया माई के पास आग लेने को
अग्निदान मडुगनोच्च	आया लवराजा आग लेने को
कारूंड पडवेन्दु ना कोडुका कुमहार	कीकारण्य में मेरा लाडला बेटा
अग्निदानमालरन्ना नीकिंक	क्यों चाहिए आग तुम को हे भाई
अग्नि दान मालरन्ना	क्यों चाहिए आग हे भाई
नलनल्ल गुन्नादि नामालु पेट्नादि	है काला काला लगाया तिलक
वंकमूति कोतिवक्कटे वच्चिंदि तल्लि	हे माई तिरछा मुखवाला अकेला बंदर
अश्वमेंबडि वक्कटे वच्चिन्दि तल्लि	घोडे के साथ आया माई अकेला एक बंदर
आ कोतिनि नेनु संपिनानु गानि	मार दिया मैं ने उस बंदर को अगर
पार वेस्तेगीन पापंबुलु वस्ताइ	छोड देगा तो पाप होगा मुझे समझकर
काल बेड्ता मीयमनेनु वग्नि लो	जला दूंगा माई आग दो मुझ को

काल बेड़ता मीयमनेनु
गोड्डु गोड्डुन दुःख सागे सीतम्म
गोट नीरुलु चिम्म सागे
कोंत कालमु नेनु साकि नानंटेने

जला दूंगा माई आग दो मुझ को
रोने लगी फूट फूट कर सीता माई
बहाने लगी अश्रु धारा सीता माई
थोडा समय इसे पाला मैं कहती हुई

चनुबालु पिंडि पोस्तादि सीतम्म
चनुबालु पिंडि पोस्तादि
ईकाल कोटि विषमु कल्पिस्त ना कोडुक
कोंड बोइ[34]नीवु कोतिकि पोयन्ना
नीकिंक पापमु रादु अन्नादि
मातल्लि चनुबालु मेमु त्रागिटे
माकिंत बलमुंदि
दानिक्कि पोस्तेनु दानिकेंत बलमनि
दोन्ने लेत्तुक तागिनाडु लवराजु
दोन्ने कडिगि पोसिनाडु
दोन्ने कडिगि पोस्ते चच्चि पोइन कोतिकि
मल्ला पान मोच्चि नादि कोतिकि
मल्ला पान मोच्चिनादि
पैकि लेस्तेनु मल्ल संपुताडनि
पूल ताट्लो नुंचि अइवध्य पट्नानिकि
जेल्लु कट्टुक दोर्लिनादि आ कोति
•बेंडु कट्टुक दोर्लिनादि

निकालकर दिया स्तन्य सीता माई
निकालकर दिया स्तन्य माई
निकालकर दूंगी विषैली घरल को भाई
ले जाकर तुम इसे पिलाओ बंदर को हे
भाई होगा नहीं कोई पाप तुझे हे भाई
पीने से ही अपनी माई का स्तन्य
मिला बल हमें इतना
पिलाने से उसे होगा कितना बल समझकर
पिया लवराजा उठाकर दोने को
पिलाया उसे साफ करके दोने को
पिलाने से दोना साफ करके मरे बंदर को
आ गये प्राण फिर बंदर को
आ गये प्राण फिर बंदर को
उठ गये तो अगर मारेगा फिर समझकर
फूलों के बगीचे से अयोध्या शहर
लुढकने लगा वह बंदर घुटनों के बल पर
लुढकने लगा वह बंदर

लक्षलकु तीरिन्न पच्च बंडलमीद
राजान राजुलु रामुलु गूर्चोनि
पट्टि पंदेमु आडु तुंड्रि इक्कड
पगिडि पंदेमाडु तुंड्रि
एमिरा हनुमंता नीवे वस्तिवि
अश्वमु एक्कडेल्लानु

लाखों से भरे चौपाल पर
राजा सामंतों के साथ राम बैठकर
खेल रहा था दाव शतरंज के
खेल रहा था वहां दांव सोने के
आये हो अकेले क्यों रे हनुमान
गया कहां घोडा हे हनुमान

नी कोलुवुके दंडमु नीके दंडमु	तुम को सलाम सलाम तेरी नौकरी को
ऊपिरि उंटेनु उप्पम्मक तिंटानु	होगा अगर प्राण बेचकर जीऊंगा नमक
नी कोलुवु नाकु सालननेनु	को कहा अब बस तेरी नौकरी मुझको
हनुमंतुडु नी कोलुवु नाकु सालननेनु	कहा हनुमान ने अब बस तेरी नौकरी मुझ
मंदि मार्भलम् भतृ शत्रुघ्नुल	को बडी सेना भरत शत्रुघ्न सहित
दंडु पयनमु कद्दिनारु अइवध्य	निकली सेना अयोध्या की
दंडु पयनमु कद्दिनारु	निकली सेना अयोध्या की
[illegible] ओसेइ हनुमंता	आओगे नहीं तो ठीक ओ हनुमान!
[illegible]	बताते जाओ रास्ता कम से कम हमें
[illegible]	बताते जाओ रास्ता कम से कम हमें
[illegible] चेट्टु [illegible] सानुंचि	उस पेड के आड से इस पेड के आड से
[illegible]	कहता है हनुमान रास्ता है वहीं
भतृ शत्रुघ्नुल मंदि मार्भलम्त	भरत शत्रुघ्न व सेना भर
दंडु पयनमै वच्चिनारु	निकले सब तैयार होकर
पूल तोटकु दंडु पयनमै वच्चिनारु	[illegible] फूलों के बगीचे को तैयार होकर
अरेक्क लश्वान्नि कन्नुलार [illegible]	देखकर आंखों से उस परवाले घोडे को
अप्पुडेमानि पलक्तादु भरतुडु	कहने लगा भरत ऐसा
अप्पुडेमनि पलकुतादु	कहने लगा भरत ऐसा
अश्वान्नि पट्टटानिकि नुव्वेन्त टोडवुरा	तुम कितने बडे हो पकडने घोडे को
अश्वान्नि विडुवुरा बाला नीविंक	तुम बच्चे छोड दो घोडे को
अश्वान्नि विडुवुरा बाला	तुम बच्चे छोड दो घोडे को
अश्वान्नि विडुवुमन नुव्वेन्त टोडवु	कितने बडे हो तुम कहने घोडा छोडने को
ना मीद केल्लरा भोज नीविंक	लडो मुझ से हे राजा तुम
ना मीद केल्लरा भोज	लडो मुझ से हे राजा तुम
अगौ मंडेने भतृ शत्रुघ्नुलु	जले आग बन कर भरत शत्रुघ्न
मायनंबु वेसिनारु वाड्लिंक	छोडा दोनों ने माया बाण
मायनंबु वेसिनारु	छोडा दोनों ने माया बाण

माय अंबु पाय लवराजुकु तगिला	लगा लवराजा को जाकर माया बाण
मूर्चिल्लु चेंदि पन्नाडु लवराजु	हो गया बेहोश लवराजा
मूर्चिल्लु चेंदि पन्नाडु	हो गया बेहोश लवराजा
मूर्चिल्लु चेंदिन्न मंत्राल लवण्णनु	बेहोश हुए लवराजा को
रथम लोने वेसि इग्गु कुंटानु पोतारु	डालकर रथ में ले जाने लगे खींचते
वाड्लिंक इग्गु कुंटाने पोतारु	वे ले जाने लगे खींचते
पाल पंड्लकु पोइन बाणाल कुशराजुकु	तोडने क्षीरी फल गये बाणों के कुशराजा को
कुडिभुजमु कूलि नट्लाया अडविलो	लगा जंगल में मानो दाएं भुजा गयी टूटी
कुडि भुजमु कूलिनट्लाया	लगा जंगल में मानो दाएं भुजा गयी टूटी
बाणाल कुश राजुकु कुडि भुजमु कूलने अम्मा	टूट गयी दाएं भुजा कुश राजा की माई
अडविलो कुडि भुजमु कूलनेनम्मा	जंगल में दाएं भुजा टूटी माई
आनुंचि कुशराजु मेडिमेत्तु परुगु नोच्चानु	दौडते आया कुशराजा वहां से माई
तल्लंचुकु मेडिमेत्तु परुगुनोच्चानु	दौडते आया माई के पास
कारुंड पडवेंदु मातल्लि सीतम्म	कीकारण्य में माई सीता माई
साल दीवेनलु नाकु इय्यवे तल्लि	देदो बहुत दुआएं मुझे माई
कुडि भुजमु कूलिनट्लाया	लगा टूट गयी मेरी दाएं भुजा माई
अडविलो कुडि भुजमु कूलिनट्लाया	जंगल में लगा टूट गयी दाएं भुजा माई
अइवध्य रामुलतो पगबट्टु कुंटिरि	वैर निभाया अयोध्या राम से भाई
अडवि पालैतीवा ना तंड्रि	हाय! मिट गये हो जंगल में मेरे भाई
कन्न तल्लि नीवु कंटनीरु पेडिते	माई होकर अगर तुम आंसू बहाओगी
नलमु नालुगु तुंट लम्मा सीतम्म	काटूंगा जीभ हे माई सीता माई
नलमु नालुगु तुंटलम्मा	काटूंगा जीभ हे माई
साल दीवनेलु नाकु इय्यवे तल्लि	दे दो बहुत दुआएं मुझे माई
नेनु वेल्लि पोतानना कुशराजु	चला जाऊंगा मैं कहा कुशराजा
नेनु एल्लि पोतानना	चला जाऊंगा मैं कहा कुशराजा

पगवारि सेइ क्रिन्दुगा ना कोडुक	शत्रुओं के हाथ नीचे मेरे बेटे के हाथ ऊपर
मी चेइ मीदुगा नन्ना आडविलो	जंगल में रहे आप के हाथ ऊंचा हे भाई
मी चेइ मिन्नु गानन्ना	हाथ आपके रहे ऊंचा हे भाई
तल्लि तोन कुशराजु साल दीवनेलु तीसुकोनि	बहुत दुआएं लेकर माई से कुशराजा
कुशराजु मिडिमेत्तु परुगुनोच्चानु	दौडते आया कुश राजा
पूल ताटकु मिडिमेत्तु परुगुनोच्चानु	फूलों के बगीचे दौडते आया कुशराजा
मंत्राल लवण्णनु रथमु कोम्मुनजूसि	देखकर लवराजा को रथ पर
माय नंबु नेसिनाडु कुशराजु	छोडा माया बाण कुश राजा ने
माय नंबु नेसिनाडु	छोडा माया बाण कुश राजा ने
माय अंबु पाया कट्लु ऊडिपाया	गया माया बाण खुल पडे बंधन
तुल्लिपडि लेचिनाडु लवराजु	उठगया संभलकर लवराजा
तुल्लिपडि लेचिनाडु	उठगया संभलकर लवराजा
लेय्यरा तम्मुडा पगवारि रथमुन	शत्रुओं के रथ से उठो भाई
एमि निद्र लोच्च तम्मुडा नीगिंक	आयी नींद कैसे तुझे भाई
एमि निद्र लोच्च तम्मुडा	आयी नींद कैसे तुझे भाई
तम्मुडु लेचेनु अन्न तम्मुडु याकस्तु लैनारु	उठ गया माई एक हो गये दोनों भाई
युद्धानि के पूनुतारु वाड्लिंक	तैयार हुए लड़ने जंग दोनों भाई
युद्धानि के पूनुतारु	तैयार हुए लड़ने जंग दोनों भाई
अलनाडु माकु अभयमु इच्चिन्न	उस समय हमें दिया अभय
ब्राह्मणय्य वेंटने	ब्राह्मण को सत्वर बच्चों ने
मदियन्दु दलचिनारु बालुरु	याद किया मन में बच्चों ने
नाग वडिशा लंदिनारु	प्राप्त किया नाग बाण बच्चों ने
नाग वडिशालतो रुब्बुडु गुंड्लतो	नाग बाण से व चट्टू गोलों से बच्चे
दंडुनंता गूल्चिनारु पूलताट्लो	गिराया पुरी सेना को जंगल में बच्चों ने
दंडुनंता गूल्चिनारु	गिराया पूरी सेना को जंगल में बच्चों ने
मंदि मार्बलमु भतृ शत्रुघ्नलु	पूरी सेना भरत शत्रुघ्न सहित

दंडु अंता कूलि पोइरि
पूल ताट्लो दंडु अंता कूलि पोइरि
एदुरुणा वस्ते नन्नु संपुतारनि

गिर गये सब जंगल में
गिर गये सब फूलों के बगीचे में
आऊंगा अगर सामने मारेगा मुझे गुस्से में

आसेट्टु साटुर्नुंचि ईसेट्टु साटुर्नुंचि
अइवध्य बाट पट्टानु हनुमंतु
अइवध्य बाट पट्टानु हनुमंतु
अइवध्य जे रोच्चिनाडु

इस पेड के आड से उस पेड के आड से
लौटने लगा अयोध्या हनुमान
लौटने लगा अयोध्या हनुमान
पहुंच गया अयोध्या हनुमान

लक्षलकु तीरिन्न रच्चबंडल मीद
राजान राजुलु गमुलुनु गूर्चोनि
पट्टि पंदेमु आडुतुंड्रि इक्कड
पगिडि पंदेमाडुतुंड्रि
एमिरा हनुमंता नीवे वस्तिवि
मंदि मार्बलमु भतृ शत्रुघ्नुलु
दंडु यंत एमैरि हनुमंता
नीकोलुवु को दंडमु नी को दंडमु
ऊपिरि उंटेनु उप्पम्मक तिंटानु

लाखों से भरे चौपाल पर
राजा सामंतों के साथ राम बैठकर
खेल रहा था वहाँ दाँव शतरंज के
खेल रहा था वहाँ दाँव सोने के
क्यों रे हनुमान आये हो अकेले
सेना भरत शत्रुघ्न सब
क्या हो गये हनुमान सब
तुम को सलाम सलाम तेरी नौकरी को
होगा अगर प्राण जीऊँगा बेचकर नमक को

नी कोलुवु नाकु सालनेनु
गमुलु लक्ष्मण मंदि मार्बलमु
दंडु पयनमु कट्टिनारु
पूल ताटकु दावन्न चूपमन्नारु
आ सेट्टु साटु नुंचि ई सेट्टु साटु नुंचि
अदिगो दाव अदेनंटाडु हनुमंतु
अदिगो दाव अदेनंटाडु

कहा बस तेरी नौकरी मुझ को अब
राम लक्ष्मण सेना सहचर सब
चलने को हुए तैयार सब
कहा बताने को बगीचे के रास्ते को
इस पेड के आड से उस पेड के आड से
कहता है हनुमान रास्ता है वही
कहता है रास्ता है वही

रामुलु लक्ष्मण मंदि मार्बलमंता
पूल तोट कोच्चिनारु वांड्लिंक

राम लक्ष्मण सेना सहचर सब
पहुँच गये वे फूल बगीचे तब

पूल तोट कोच्चिनारु	पहुँच गये वे फूल बगीचे सब
पूल तोट लोन अश्वानि केल्लि चूसि	देखकर घोडे को फूल बगीचे में तब
एमंटननि पल्कुताडु रामुलु	कहने लगा राम ऐसा
अप्पुडेमनि पल्कुताडु	कहने लगा राम ऐसा
ओक सेंप कोडिते पालु कारुताइ	मारने से एक गाल पर दूध निकलेगा
ओक सेंप कोडिते रक्त मेल्लुतादि	मारने से एक गाल पर खून निकलेगा
अश्वान्नि विडवंडि बाला मीरिंक	छोड दो बच्चे घोडे को
अश्वान्नि विडवंडि बाला मीरिंक	छोड दो बच्चे घोडे को
अश्वान्नि विडुवमन नूवेंत टोडवुरा	कितना बडे हो तुम कहने घोडा छोडने को
मामीदि केल्लरा भोज नीविंक	लडो हम से तुम राजा
मामीदि केल्लरा भोज	लडो हम से तुम राजा
अग्गै मंडेने अइवध्य रामुलु	जला आग बनकर अयोध्या राम
तेल्ल बाणमु तोडिगिनाडु रामुडु	निकाला बिच्छू बाण राम ने
तेल्ल बाणमिडिसिनाडु	छोडा बिच्छू बाण राम ने
मेघाल साटुन्न लक्ष्मण पेरुमार्लु	बादलों के आड से लक्ष्मण
कोल्ल बाणमु तोडिगिनाडु लक्ष्मण	निकाला मुर्गा-बाण लक्ष्मण ने
कोल्ल बाणमिडिसिनाडु	छोडा मुर्गा-बाण लक्ष्मण ने
कोल्लबाणमु पाया तेल्लनेरकर्तिना	मुर्गा बाण ने जाकर खा लिया बिच्छू को
वारि बाणालु मध्यलो कलबडि	भिडकर उनके बाण बीच में
मंटलाइ मंडिपाया अड़वि्लो	जल गये आग बनकर जंगल में
मंटलाइ मंडिपाया	जल गये अग बनकर जंगल में
ईसारि बाणमु दारि दप्पिंदंट	समझकर अबकी बार बाण लगा नहीं निशाने पर
तिरग बाणमु तोडिगि नाडु रामुलु	निकाला दूसरा बाण राम ने
पामु बाणमु तोडिगि नाडु	निकाला नाग बाणराम ने
पामु बाणमु तोडिगि नाडु	निकाला नाग बाण राम ने
पामु बाणमु तोडिगि अइवध्य रामुलु	निकालकर नाग बाण अयोध्या राम ने
पामु बाणमि[illegible]सिनाडु [illegible]	छोडा नाग बाण

पामु बाणमिडिसिनाडु	छोडा नाग बाण राम ने
मेघाल चाटुन लक्षमण पेरुमार्लु	बादलों के आड़ से लक्षमण
गरुट बाणमु तोडिगि नाडु लक्षमण	निकाला गरुड बाण लक्ष्मण ने
गरुटबाणमु इडिसिनाडु	छोडा गरुड बाण लक्षमण ने
गरुट बाणामु पाया पामु लेरकतिना	गरुड बाण ने जाकर खा लिया सांपों को
वारि बाणालु मध्यलो कलवडि	भिड़कर उनके बाण बीच में
मंटलाइ मंडि पाय अड़विलो	जल गये आग बनकर जंगल में
मंटलाइ मंडिपाया	जल गये आग बनकर जंगल में
ईसारि बाणमु दारि दप्पिदंटु	समझकर अब की बार बाण लगा नहीं निशाने पर
अग्गि बाणमु तोडिगि नाडु रामुलु	निकाला आग का बाण राम ने
अग्गिबाण मिडिसिनाडु	छोडा आग का बाण राम ने
मेघालसाटुन लक्ष्मण पेरुमार्लु	बादलों के आड़ से लक्षमण
नील्ल बाणमु तोडिगिनाडु लक्ष्मण	निकाला पानी का बाण लक्षमण ने
नील्ल बाणमु पाया अग्गि आरि पाया	गया पानी का बाण बुझ गयी आग
वारि बाणालु मध्यन कलवडि	भिडकर उनके बाण बीच में
मंटलाइ मंडिपाया अडविलो	जल गये आग बनकर जंगल में
मंटलाइ मंडिपाया	जल गये आग बनकर जंगल में
विनवोइ लक्ष्मणा विनकुल भूपाल	इक्ष्वाकु भूपाल सुनो भाई लक्ष्मण
सौमित्रि कुमहारा सोधकुल लक्ष्मणा	सुमित्रा सुत हे पटु लक्ष्मण
अंतनी मायंगुंदन्न अडविलो	लगता है जंगल में सब तेरी मायालक्ष्मण
अंतनी मायगुंदन्ना	लगता है सब तेरी माया लक्ष्मण
इद्दरि पिलवांड्ल नेत्तुल्ल मीदिकि	दोनों बच्चों को पहनाने
कुल्लाइ कुट्टिंचवन्ना नीविंक	बनवाओ तुम भाई अब टोपियाँ
मेरुवान पंपिंचवन्ना	भेजो भाई तुम मेरुवानी
इद्दरि बालुल नेत्तुल्ल मीदिकि	दोनों बच्चों को सर पर पहनाने
कुल्लाई कुट्टिंचिनाडु श्रीराम	सिलवायी टोपियाँ श्रीराम ने
मेर्वाणा पंपिंचिनाडु	भेजी मेरुवानी श्री राम ने

मेर्वाणालनु तीस्कोनि बाललु	लेकर तोफे बच्चे
तल्लन्चुकु मिडिमेत्तु परुगुनोच्चिरि	दौडते आये माई के पास बच्चे
वांड्लिंक मिडिमेत्तु परुगुनोच्चिरि	दौडते आये माई के पास दोनों बच्चे
चिन्नप्पुडु ऊगिन्न ऊयाल बदुलु	बचपन में डुलाये झूले के बदले में
मेर्वाणालु तेच्चि इच्चिनारु	लाकर दिये तोफे हमें
ऊयाल तीसिकोनि अइवद्य रामुलु	लेकर झूले को अयोध्या राम
अप्पुडेमनि पलकुताडु रामुलु	कहने लगा ऐसा श्रीराम
अप्पुडेमनि पल्कुताडु	कहने लगा ऐसा श्रीराम
विनंडन्ना ओ बाल राजुल्लारा	सुनोरे ओ बाल राजा
मी तल्लि पेरेमि मी तंड्रि पेरेमि	कौन माई है कौन पिता क्या नाम उनका
गुरुवु दैवमु पेरेमि ओ बाला	हे बच्चे क्या नाम है गुरु का
गुरुवु दैवमु पेरेमि	क्या नाम है गुरु का
मी तल्लि पेरेमि नी तंड्रि पेरेमि	कौन माई है कौन पिता क्या नाम उनका
गुरुवु दैवमु पेरेमि ओ राजा	हे राजा क्या नाम है गुरु का
गुरुवु दैवमु पेरेमि	क्या नाम है गुरु का
इंटि पेरे इलकुल वांड्लु	कुल नाम है इक्ष्वाकु
कुलमें क्षत्रीय कुलमु	जाति है क्षत्रीय जाति
गोत्र मेमो काशि गोत्रमु	गोत्र है काशी गोत्र
गुरुवे वाल्मीकी गुरुवु	गुरु हमारे वाल्मीकी गुरु
इंटि इलवेलुपु देवुडु	घर का कुल देवता
कावेटि रंगडु बाला	कावेरी के श्रीरंगनाथ है बच्चे
कावेटि रंगडु	कावेरी के श्रीरंगनाथ है बच्चे
दशरथुडु ममुगन्ना तंड्रि	दशरथ हमारे पिता
कौसल्य ममुगन्ना तल्लि सीते नाकुल्लसाति	कौसल्या हमारी माई सीता मेरीभार्या
लक्षुवण्णा ना चिन्नि तम्मुडु	लक्ष्मण मेरा छोटा भाई
ऊर्मिल्ल ना मुद्दुल मरदलु	ऊर्मिला मेरी लाडली देवरानी
भरत शत्रुघ्नुलु बलमैन तम्मुलु	भरत शत्रुघ्न मेरे बलवान भाई

भरत शत्रुघ्नुलु बलमैन पिन्नलु बाला	भरत शत्रुघ्न तुम्हारे बलवान चाचा बच्चे
बलमैन पिन्नलु	बलवान चाचा बच्चे
तल्लि तंड्रि पेरु गुरुवु दैवमु पेरु	माता-पिता के नाम गुरु देव के नाम
चेप्पिंचुक पिलवांड्लु	जानकर बच्च
मिडिमेतु परुगुनोच्चिरि तल्लंचुकु	दौड़ते आये पिता के पास बच्चे
मिडिमेत्तु परुगुनोच्चिरि	दौड़ते आये बच्चे
इंटि पेरे इलकुल वांड्लु	कुलनाम है इक्षवाकु
कुलमें कुस्तील कुलमु	जाति है क्षत्रीय जाति
गोत्रमेमो काशी गोत्रम	गोत्र है काशी गोत्र
गुरुवे वाल्मीकी गुरुवु	गुरु हमारे वाल्मीकी गुरु
ईंटि इलवेल्पु देवुडु कावेटि रंगडु राजा	कुलदेवता कावेरी के श्रीरंगनाथ है राजा
कावेटि रंगडु	कावेरी के श्रीरंगनाथ है राजा
दशरथुडु मा मुस्सिलब्बा	दशरथ हमारे दादा
कौसल्या मा मुस्सिलम्मा	कौसल्या हमारी दादी
श्रीरामु ममुगन्नातंड्रि	श्रीराम हमारे पिता
सीतम्म ममुगन्ना तल्लि	सीतामाई हमारी [illegible]
लक्षुवण्णा मा चिन्न तंडि	लक्ष्मण हमारे चाचा
ऊर्मिल्ल मा चिन्न तल्लि	ऊर्मिला हमारी चाची
भरत शत्रुघ्नलु बलमैन पिन्नलु राजा	भरत शत्रुघ्न हमारे बलवान चाचा राजा
बलमैन पिन्नल	बलवान चाचा राजा
इद्दरि बालकुला अदिंकिनि तीगचुकोनि	लेकर दोनों बच्चों को गोद में
[illegible] पैन कूर्चुकुंडा श्रीरामु	बिठा [illegible] पर श्रीराम ने
[illegible] पैन अचोक [illegible]	[illegible] पर श्रीराम ने
विनंडन्ना अ[illegible] राजुल्लारा	सुनो [illegible] राजा
कारुंड पडलेदु ना कोडकु कुमाहारा	हे [illegible] कारण में
सीतल्लि [illegible] अडवीलो	[illegible] जंगल में
सी तल्लि याड उन्नादि	[illegible] जंगल में

मुंदर रामुलु वेनुकने लक्ष्मणा	आगे आगे राम पीछे लक्ष्मण
लवण्णा कुशलन्न सीत दग्गरि कोच्चिनारु	लवभाई कुशभाई आये सीता के पास
वांड्लिंक सीत दग्गरि कोच्चिनारु	सब आये सीता के पास
रामुलोच्चे राकट सीतम्म जूसिंदि	देखा सीता ने राम के आने को
बंगारु चेंबुलतो उदकमुलुनु तीसिकोनि	लेकर पानी सोने के लोटों से
मुंदु मूडु अडुगुलु नडचिवच्चिनादि	आयी तीन कदम आगे
बंगारु पल्लेमुलो पादमुलु पेट्टिंचि	रखकर सोने के थाल में
पादालु कडिगिंचि पादमुलु कडिगिनेटि नील्लु	कराकर साफ चरणों को उस पानी को
पारबोस्ते गीन पापंबुलोच्चुननि	समझकर फेंकेंगे अगर तो होगा पाप
पै धारा बोसुकुन्नादि सीतम्म	डाल लिया अपने सर पर सीता माई ने
पै धारा बोसुकुन्नादि सीतम्म	डाल लिया अपने सर पर सीता माई ने
पतिव्रतवै उंटे अडविलोन नीवु	पतिव्रता अगर हो तुम जंगल में
अमडलनु कनिउंटे	दिया अगर जन्म जुडुवे बच्चों को जंगल में
पूलताट्लो कूलिपोइन दंडुनंता लेपालि	फूलों के बगीचे में गिर पडे सब को जीवित करो
ओ सीत दंडुनंता लेपालि	हे सीता सेना को सब जीवित करो
ना कष्टमु नाकु तप्प लेदंटेने सीत देवम्म	हुए नहीं दूर अभी मेरे कष्ट समझकर सीता माई
पूल ताट्लो कूलि पोइन मंदिनंता लेपिनादि	जीवित किया सब को सीता माई ने
भरतुडु शत्रुघ्नडु मंदि मार्भलमु	भरत शत्रुघ्न सेना सब
दंडुअंता लेचिनारु पूलताट्लो	उठ गये बगीचे में सेना सब
दंडु अंता लेचिनारु	उठ गये सेना सब
रामुलु लक्ष्मणा सीत देवम्म	राम लक्ष्मण सीता माई
लवन्न कुशलन्न भरत शत्रुघ्नुलु	लव भाई कुश भाई भरत शत्रुघ्न

मंदि मार्बलमंता दंडुपयनमु गट्टि	सेना सब हुए तैयार चलने
अइवध्य जेरवच्चीरि वांड्लिंक	हुए तैयार अयोध्या पहुँचने
अइवध्य जेर वच्चीरि	पहुँच गये अयोध्या वे सब
अइवध्यलोन दिनमु वाज्यन्तमु	दिन भर अयोध्या में
इद्दरि पिलवांड्लु रवधूलि कप्पिंचुतारु	मचाने लगे खूब शोर दोनों बच्चे
वांड्लिंक रवधूलि कप्पिंचुतारु	मचाने लगे खूब शोर दोनों बच्चे
इद्दरि पिलवांड्लु पोरुलाकु तल्लि	झगडों से दोनों बच्चों के माई
निलुव लेदु सीतम्म धरणीन ताल लेदु सीतम्म	रह नहीं पाती सीता माई सहन नहीं पाती माई
भूदेव तम्मनु सारड्गु सोटडिगि	मांगकर मुट्टी भर जमीन भू देवी से सीता माई
भूमि पगुल कोट्टकुंडा सीतम्म	समा गयी भू में सीता माई
भूमि पगुल कोट्टकुंडा	समा गयी भू में सीता माई
इद्दरि पिलवांड्ल ताल लेक तल्लि	दोनों बच्चों को संभाल नहीं पायी
भूमि लोने कुंगुतादि	समा जाने लगी भू में सीता माई
कूलि पोये सीतनु कन्नुलारा जूसि	देखकर भू में समानेवाली सीता को
एडम सेपेंटुकलु वडिचि पट्टुकोनि	पकडकर केशों से सीता माई को
इग्गि गड्डा मीदि केसा श्रीरामा	खींच लिया श्रीराम ने तट को
इग्गि गड्डा मीदि केसा	खींच लिया श्रीराम ने तट को
इद्दरि बालल वद्दकिनि तीसुकोनि	लेकर गोद में दोनों बच्चों को
तोडल पैन जेर्चुकुंडा श्रीरामा	बिठा लिया जांघों पर श्रीराम ने
तोडल पैन जेर्चुकुंडा	बिठा लिया जांघों पर श्रीराम ने
विनंडन्ना ओ बाल राजुल्लारा	सुनो रे हे बाल राजा
मुंदु कालान मीकु नरलोक मंदुन	आगे नरलोक में तुम्हे भाई
नित्य पूजलु गान रन्ना बाललु	होगी पूजाएँ नित्य तुम्हें भाई
नित्य पूजलु गान रन्ना	होगी पूजाएँ नित्य तुम्हें भाई

इद्दरि बालुल सेमटलु तुडिचिनाडु	पोंछ दिया पसीना दोनों बच्चों का श्रीराम ने
रामुडु चेमटल्लु तुडिचिनाडु	पोंछ दिया पसीना श्रीराम ने
रामुलु सीत देवम्म लक्ष्मण ऊर्मिल्ल तो	राम सीता माई लक्ष्मण ऊर्मिला के साथ
सगा बोंदितो कैलास मेल्लि पोइरि	गये देह समेत कैलास
वांड्लिंक कैलास मेल्लिपोइरि	गये वे सब कैलास
शरणु शरणु रामा शरणय्य राघव	शरण शरण हे राम शरण शरण हे राघव
शरणाग बिरूदु गल रामा	शरणागत वत्सल नामांकित हे राम
नीकिंका शरणय्या श्री रघुरामा	शरण शरण हे श्री रघुराम !
कन्नवारिकि रामा ! विन्नवारिकि रामा !	देखनेवाले को हे राम सुननेवाले को हे राम
कन्नवारिकि रामा ! त्रिन्नवारिक्रि रामा !	देखनेवाले को हे राम सुननेवाले को हे राम
कालिग्य राम शरणय्य	कलियुग में नहीं और शरण्य हे राम
नीकिंका पट्टाभिराम शरणय्या	मात्र शरण है तेरे पट्टाभिषिक्त हे राम ।

9.2 संदर्भ सूची

1. लोक [illegible] का अध्ययन, डॉ. त्रिलोचन पांडेय, पृ:137
2. [illegible] रामायणमु पाटलु, श्री कृष्ण श्री, भूमिका पृ: 2
3. जानपद कला संपदा, आचार्य तूमाटि दोणप्पा, पृ: 61
4. स्त्रील गेय काव्यमुलु, [illegible] , विजय-श्रवणमु पृ : 129-136
5. तेलुगु जानपद गेय साहित्यमु, आचार्य बी. रामराजु, पृ : 21
6. वही. पृ : 91
7. तेलुगु जानपद साहित्यमु-पुराणगाथलु, डॉ. राविप्रेमलता, पृ : 279-80
8. जानपद कला संपदा, आचार्य तूमाटि दोणप्पा, रायलसीमा पल्लेपाटलु : रामायणमु, पृ : 61-94
9. आधुनिकांध्र कवित्वमु - संप्रदायमुलु-प्रयोगमुलु, पृ : 877
10. जानपद गेया साहित्यमु, आचार्य बी. रामाराजु पृ : 93-94
11. [illegible] रामायणमु पाटलु, सं. श्रीकृष्णश्री, पृ : [illegible]
12. [illegible] पृ . 174
13. मेदक जिले में गाये जानेवाले कथागीत के आधार पर
14. [illegible] जिले में गाये जानेवाले कथागीत, संग्रहकर्त्री. डॉ. राविप्रेमलता
15. [illegible] संस्कृति. (अनंतपुर जानपद गयालु) डॉ. [illegible]. कृष्णा रेड्डी. पृ : 54-56
16. जान पद कला संपदा, आचार्य तूमाटि दोणप्पा, पृ : 93-94
17. संग्रहकर्त्री, डॉ. रावि प्रेमलता, हैदराबाद

9.3 बोली शब्दार्थ सूची

1. अयोध्या
2. कलियुग
3. चटाई जो टाट से बुनकर रंग डाली गयी है।
4. गुसल खाने के पास डाला गया बड़ा पत्थर। आंध्र के रायलसीमा प्रांत में जमीन की परतों से निकाले गये लंबे-चौडे पत्थरों को गुसलखाने के पास डाल लेते हैं। गुसलखाने में पत्थर बिछाते समय यह देखा जाता है कि दो पत्थरों के बीच में किसी प्रकार का जोड न हो। जिस से कि पानी जमीन पर न गिरे।

5. आने को
6. बोरा
7. रास्ता
8. गोद
9. मुखपर
10. खून
11. महल
12. अस्तबल
13. लक्षमण
14. कमरबंद, कमर में पहननेवाला आभरण।
15. पेड़ के पीछे
16. बांस से बनायी गयी टोकरी
17. मुख्य द्वार के पास आकर
18. गरुत्मन्तुडु गरुड़
19. रोक
20. वस्तुएं
21. उगते समय
22. गोविंद श्रीराम
23. ब्राह्मणों को
24. पुस्तकों को
25. कर्नूल जिले का एक गाँव
26. कर्नूल जिले का एक गाँव
27. खम्मम जिले का बद्राचल तीर्थ स्थल
28. विष्णु
29. ब्रह्म
30. अजगर
31. भरत
32. कायर
33. कलिहानों में उपयोग करने वाला छोटा द्वार
34. ले जाकर
35. क्षत्रीय कुल
36. दादा

9.4 सहायक ग्रंथ व पत्र पत्रिकाएँ

(तेलुगु और हिन्दी)

1. आधुनिकांध्र कवित्वमु, संप्रदायमुलु-प्रयोगमुलु, आचार्य.सी. नारायण रेड्डी. द्वितीय संस्करण, 1977, आंध्र प्रदेश बुकडिस्ट्रिबूटर्स, सिकिंद्राबाद।
2. ग्रामीण संस्कृति (अनंतपुरमु जिल्ला जानापद गेयमुलु, डॉ. चिगिचर्ला क्रिष्णा रेड्डी, जानपद युव कलाकारुल संघमु, सुब्बारावपेट, अनंतपुमु, प्रथम संस्करण, 1987
3. जातिकि प्रतिबिंबमु-जानपद साहित्यमु, डॉ.यस.गंगप्पा, शशी प्रचुरणलु, गुंटूर, प्रथम संस्करण 1984.
4. जानपद कला संपदा, आचार्य तूमाटिदोणप्पा, प्रवर्धना पब्लिकेषन्स, हैदराबाद, द्वितीय संस्करण 1987.
5. जानपद गेयालु, (रेन्डव संपुटि,) एल्लोरा, विशालांध्र, नवीन विज्ञान प्रचुरण, प्रथम संस्करण 1959.
6. जानपद गेय वाड्मय परिचयमु, श्री हरि आदि शेषुवु, नवीन विज्ञान प्रचुरण, प्रथम संस्करण, 1954.
7. जानपद साहित्यमु, एल्लोरा, दीप्ति पब्लिकेषन्स, हैदराबाद, प्रथम सस्करण, 1982.
8. जानपद साहित्य स्वरूपमु डॉ. आर. वी. यस. सुन्दरमु. जानपद विज्ञान भारति, बेंगलूर, प्रथम संस्करण, 1976.
9. तेलुगु जानपद गेय गाथलु, आचार्य नायनि कृष्णकुमारि, नागलक्ष्मि आर्ट प्रिन्टर्स, हैदराबाद, प्रथम संस्करण, 1977.
10. तेलुगु जानपद गेय साहित्यमु, आचार्य बिरुदुराजु रामराजु, आंध्र रचइतल संघम, हैदराबाद, प्रथम संस्करण, 1958.
11. तेलुगु जानपद साहित्यमु-पुरागाथलु, डॉ. रावि प्रेम लता, हैदराबाद, प्रथम संस्करण, 1983.
12. मधुर कवितलु, एल्लोरा, प्रथम संस्करण, 1961.
13. श्री मद्रामायणमु, वाल्मीकी।
14. स्त्रील पाटलु, अनंत पुर मंडलमु, डॉ. जी. यस. मोहन, श्री निवास पब्लिकेषन्स, कल्याणदुर्गमु, प्रथम संस्करण, 1982.
15. स्त्रील रामायणमु पाटलु, सं. श्री कृष्णश्री, आंध्र सारस्वत परिषत्तु, हैदराबाद, प्रथम संस्करण, 1955.
16. लोक साहित्य का अध्ययन, डॉ. तिलोचन पांडेय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1978.
17. भारति (साहित्यिक प्रत्रिका) - विजय- श्रावणमु।